

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08
वर्ष : 65 ★ अंक : 5 ★ मूल्य : 10 रु.
15 मई, 2008 ★ वैशाख सं. 2065

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आर्याणां

णमो उवज्जायाणं

णमो लोए सत्त्वयाहूणं ॥

एसो पंच णमोवकारो,

सत्त्व-पावपणासणो,

मंगलाणं च सत्त्वेसिं,

पढमं हवइ मंगलं ।



मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

भारत का
स्वर्णतीर्थ

यह
श्रेष्ठतम
अलंकार
प्रकृति ने
बनाएँ
है...

और
यह
शुद्धतम
अलंकार
हम ने...

पीयें धोवन पानी, बोलें मीठी वाणी
यही कहे जिनवाणी।



रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

सोना ♦ चांदी  औरंगाबाद | जलगाँव  हिरे ♦ मोती
आकाशवाणी चौक, | सुभाष चौक,
☎ ०२४०-२२४४५२०,२२ | ☎ ०२५७-२२२५९०३,३९०३

औरंगाबाद शोरुम शनिवार छुट्टी। | जहाँ विश्वास ही परंपरा है। | जलगाँव शोरुम रविवार छुट्टी।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. RJ/JPC/M-018/2006-08

卐 सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता-रु.11000/-संरक्षक सदस्यता-रु.5000/
वार्षिक सदस्यता- रु. 50/- त्रिवर्षीय सदस्यता- रु.120/-
आजीवन सदस्यता देश में- रु. 500/-
विदेश में- रु. 5000/-
इस अंक का मूल्य रु. 10/-

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह मोभियाँ का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।



मित्तवं बाहुवं हीरु,
उच्चागोए य वप्पावं।
अप्पायंके महापद्मे।
अभिजाए जसो-बले ॥
- उतराध्वयण सूत्र ३.१८

अच्छे मित्र, ज्ञाति उत्तम हो,
गोत्र वर्ण भी शुभ पाते।
रोगरहित महाप्राज्ञ यशस्वी,
ख्यात कुलीन सबल होते ॥

मई २००८

वीर निर्वाण संवत् २५३४
वैशाख २०६५

वर्ष ६५ अंक ५

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	नाम को प्रणाम	-डॉ. धर्मचन्द जैन	५
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	९
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म. सा.	१०
प्रवचन-	सजग रहें संवर करणी में	-उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म. सा.	११
	झूठी साक्षी : एक महापाप	-श्री यशवन्त मुनि जी म. सा.	१५
शोधालेख-	श्रमणाचार : स्वरूप और चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी	२०
वैज्ञानिक लेख-	ग्लोबल वार्मिंग का कारण : माँसाहार	-डॉ. धर्मेन्द्र कांकरिया	२६
अंग्रेजी स्तम्भ-	Knowledge in Jaina Philosophy(2)	-Dr. Dharmchand Jain	३२
	Life is Coffee	-Sh. Sanjay Jain	४३
तत्त्व-चर्चा-	उपांगों में पुण्य तत्त्व (३)	- सुश्री नेहा चोरडिया	३९
	उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (१०)	- संकलित	४४
	आत्म-दोष	- श्री पी. एम. चोरडिया	५२
	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (४१)	- श्री धर्मचन्द जैन	६०
चिन्तन-	मूल्यांकन क्षण का	-गणाधिपति तुलसी	४७
प्रेरक-प्रसंग-	ब्रह्मचर्य का प्रभाव	-डॉ. दिलीप धींग	४९
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (४८)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म. सा.	५६
उपन्यास-	भाई-बहन (७)	-उपाध्याय श्री केवलमुनिजी म. सा.	६३
सुवा-स्तम्भ-	जोड़-बाकी के प्रयोग : आध्यात्मिक जीवन में	-शशि टाटिया	६७
नारी-स्तम्भ-	नारी : परिवार की धुरी	- श्रीमती उमरावदेवी धींग	७०
बाल-स्तम्भ-	सदुपयोग-दुरुपयोग	-साध्वी युगल-निधी कृपा	७३
स्वास्थ्य-	प्रभावशाली नमस्कार मुद्रा	-श्री चंचलमल चोरडिया	७६
कविता/गीत-	हर्षित मन	-डॉ. रमेश 'मयंक'	१९
	क्रोध बनाता पागल पल में	-श्री अंकित जैन	३१
	सर्वेया स्तवन-त्रय-मधुरन्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म. सा.		३७
	बादाम का पेड़	-श्री ऋषभराज बाफना	८३
विचार-	प्रार्थना से आत्मा पवित्र होती है	-श्री जशकरण डागा	१४
	पीयूष-वाक्	-श्री प्रमोदमुनि जी म. सा.	२५
	आपकी जेब और बच्चों का जेबखर्च	-मीना जैन	६२
पाठक-पत्र-	धोवन पानी	-श्री कुशलचन्द गोटेवाला	४८
	जिनवाणी पर अभिमत	-डॉ. महेन्द्र भानावत	५१
संवाद-	समस्या : समाधान (१२)		८०
साहित्य समीक्षा -	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	८२
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन		८४
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		१०३

नाम को प्रणाम

❖ डॉ. धर्मचन्द जौन

जब हमारा जन्म होता है तो हमारा कोई नाम नहीं होता। माता-पिता हमारा नाम रखते हैं जो काल्पनिक होता है। फिर हमें उसी नाम से पुकारा जाता है। कभी एक ही व्यक्ति के एक से अधिक नाम होते हैं। घर में प्यार का नाम भिन्न होता है तथा विद्यालय एवं सरकारी रिकॉर्ड में भिन्न।

नाम काल्पनिक होते हुए भी उसका व्यक्ति के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को उसके नाम से पहचाना जाता है। यदि नाम न हो तो बड़ी मुश्किल हो जाए। एक-दूसरे से व्यवहार करना कठिन हो जाए। नाम व्यक्ति का ही नहीं, वस्तुओं का भी रखा जाता है, किन्तु वस्तुओं के बोधक प्रायः जातिवाचक शब्द होते हैं, यथा- कुर्सी, पंखा, टी.वी., कूलर, ए.सी. आदि। हाँ, इनमें भी आवश्यकता होने पर हर वस्तु को पहचानने का अलग चिह्न निर्धारित किया जाता है, यथा- कार, स्कूटर, ट्रक, ट्रेन, वायुयान आदि वाहनों के पंजीकरण नं. एवं विशेष नाम दिए जाते हैं। मनुष्य को व्यवहार में सुविधा हो इसके लिए ही नामकरण किया जाता है। हम बाजार से भिण्डी खरीदते हैं तो जातिवाचक भिण्डी शब्द का ही प्रयोग करते हैं, हर एक भिण्डी के लिए अलग नाम रखने की आवश्यकता नहीं होती। हाँ, भिण्डी लम्बी है, कांटेदार है, मोटी है, ताजी है, बासी है आदि के आधार पर उसकी पहचान को अधिक स्पष्ट किया जाता है। 'आम' के विभिन्न प्रकार हैं, अतः उनकी विभिन्न उपजातियाँ हैं, यथा-हापुस, लंगड़ा, दशहरी, बादामी, रत्नाकर, तोतापुरी आदि। फिर भी उनमें हर एक आम का भिन्न नाम रखना सम्भव नहीं है। इसी प्रकार गेहूँ, जीरा, मक्का आदि की विभिन्न उपजातियाँ हैं, किन्तु प्रत्येक गेहूँ, जीरा, मक्का आदि के दाने का नाम रखने की आवश्यकता नहीं होती।

संसार में जितने भी नाम रखे जाते हैं, वे मनुष्य के द्वारा अपने व्यवहार की सुविधा के लिए रखे जाते हैं। बाजार से कोई वस्तु मंगवानी हो तो नाम बताना आवश्यक है। कभी-कभी नाम से वस्तु एक ही होती है, किन्तु उसका ट्रेडमार्क भिन्न होता है, जैसे चाय की पत्ती के लिए टाटा टी, गोल्ड टी, लिप्टन टी आदि।

यही नहीं दुकानों के भी नाम रख लिए जाते हैं। गलियों एवं मौहल्लों के नाम, सड़कों, गाँवों एवं शहरों के नाम भी मनुष्य की सुविधा के लिए रखे जाते हैं। क्रिया, विशेषण आदि को प्रकट करने के लिए भी विभिन्न नामों या शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

मनुष्य अपने भावों का सम्प्रेषण करने के लिए शब्दों का प्रयोग करता है। अनुभूतियों एवं अमूर्त भावों की अभिव्यक्ति भी वह शब्दों एवं भाषा के माध्यम से करता है। साधना के स्वरूप की अभिव्यक्ति हेतु ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि शब्द दिए गए हैं। ये शब्द उस साधन-तत्त्व का बोध मनुष्य की भूमिका के अनुसार कराते हैं। ज्यों-ज्यों व्यक्ति साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ता है, उसे प्रकाश एवं आगे का पथ स्वतः नजर आने लगता है। इसलिए बाह्य शब्दों के ऊपरी अर्थ में अधिक उलझने की अपेक्षा उसके सम्यक् अर्थ को समझने की क्षमता का विकास करना चाहिए। साधना के क्षेत्र में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ साधना-पथ पर आगे बढ़ते रहने से ही स्पष्ट होता है।

भाषा का प्रयोग यद्यपि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय, देव, नारक एवं संज्ञी तिर्यच पंचेन्द्रिय जीवों में भी माना गया है, किन्तु जितना सुस्पष्ट एवं व्यापक प्रयोग मनुष्य करता है, उतना अन्यत्र दृग्गोचर नहीं होता। मनुष्य भाषा का बोलने एवं सुनने में तो प्रयोग करता ही है, उसका लेखन भी करता है। लेखन का रूप मनुष्य के अलावा किसी अन्य जीव में परिलक्षित नहीं होता।

मनुष्य की अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ हैं। विश्व में आज लगभग तीन हजार भाषाएँ हैं। हर भाषा में एक वस्तु के लिए भिन्न-भिन्न शब्द प्रयुक्त हो सकते हैं, उन शब्दों से जब तक कोई परिचित न हो तब तक परस्पर संवाद नहीं हो सकता।

बात मानवजाति की है, जिसमें प्रत्येक मनुष्य का नामकरण किया जाता है। नाम पूर्णतः काल्पनिक होता है। कभी कोई ज्योतिषी को पूछकर राशि के आधार पर नामकरण करता है तो कोई स्वेच्छा से कोई भी अच्छा नाम रख लेता है। नामों में भी कुछ दशकों से नवीनता का पुट दिखाई देता है। पुराने नाम छूट रहे हैं। हाँ, गाँवों में एवं कुछ जातियों में अभी भी किशनाराम, अणदाराम आदि नाम रखे जा रहे हैं, किन्तु शहरों में विशेषतः शिक्षित समाज में नूतन एवं विशिष्ट नामों का

अन्वेषण किया जाता है। अब राशि के अनुरूप नामकरण को भी उतना महत्व नहीं दिया जाता है।

नाम कोई भी हो, जिस नाम से हमारी पहचान होती है उसके साथ हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध हो जाता है। वह नाम मानो हमारे जीवन का अंग बन जाता है। नाम काल्पनिक शब्द होता है जिससे अमुक व्यक्ति को सम्बोधित किया जाता है अथवा उसके बारे में कथन किया जाता है, किन्तु नाम के साथ व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व जुड़ जाता है। शरीर, मन और चेतना सभी स्तरों पर नाम का सम्बन्ध परिलक्षित होता है। कोई श्यामलाल शरीर से स्थूल काय हो जाय तो कहा जायेगा कि श्यामलाल मोटा हो गया। स्थूल तो शरीर हुआ है, किन्तु उस शरीर के साथ नाम का ऐसा सम्बन्ध जुड़ जाता है कि शरीर के मोटेपन को व्यक्ति के नाम से ही अभिव्यक्त कर दिया जाता है। इसी प्रकार किसी के रोगी होने पर कहा जाता है कि अमुक नामधारी व्यक्ति बीमार है। मानसिक रूप से दुःखी होने पर भी हम कहते हैं कि अमुक व्यक्ति दुःखी है। इसी प्रकार काल कवलित हो जाने पर कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति ने देह छोड़ दी है। तात्पर्य यह है कि व्यक्ति की समस्त क्रियाएँ उस कल्पित नाम को जोड़कर अभिव्यक्त की जाती हैं।

व्यक्ति भी अपनी चेतना को उस नाम के साथ इतना एकाकर कर लेता है कि स्वप्न में भी वह अपना नाम नहीं भूलता। निद्रा में सोया व्यक्ति भी अपने नाम के साथ इतना तादात्म्य रखता है कि वह आवाज दिये जाने पर उठ खड़ा होता है। उस कल्पित नाम में इतनी आसक्ति हो जाती है कि सर्वत्र अपने नाम की प्रशंसा सुनना चाहता है एवं निन्दा सुनकर खिन्न होता है। नाम में ही अपनी प्रतिष्ठा और अपयश का अन्वेषण करने लगता है। यह सत्य है कि मनुष्य के शरीर एवं आयुष्य से भी अधिक काल तक नाम रह सकता है। लोग अपनी पीढ़ियों को गिनते रहते हैं। सात पीढ़ियों को जानने वाले व्यक्ति भी मौजूद रहे हैं, किन्तु अब तीन-चार पीढ़ियों से अधिक का नाम जानने वालों की संख्या बहुत कम है। महापुरुषों का नाम शताब्दियों और सहस्राब्दियों से अधिक भी चलता है। संभव है इसीलिए व्यक्ति अपनी चेतना के सुधार की अपेक्षा नाम को चमकाने में अधिक विश्वास करता है।

नाम तो ऋषभदेव आदि २४ तीर्थंकरों का आज भी जिह्वा पर है, किन्तु वह नाम उनके गुणों के कारण स्मरण किया जाता है। जब हम ऋषभदेव का नाम

लेते हैं तो उसका आशय प्रथम तीर्थंकर केवली भगवन्त से है, अन्य ऋषभ नामधारी दूसरे व्यक्तियों से नहीं। महावीर नामधारी बहुत से लोग हैं, किन्तु भगवान् महावीर का नाम लेने पर हम २४वें तीर्थंकर प्रभु का स्मरण करते हैं।

नाम कंस और रावण का आज मौजूद है, किन्तु उन्हें दुरात्माओं के रूप में स्मरण किया जाता है। उसका भी कारण यह है कि हमें स्मरण रहे कि हमें रावण और कंस की तरह का आचरण नहीं करना है। कहा भी गया है- “रामादिवत् आचरितव्यं न रावणादिवत्।” कुछ नाम ऐसे बदनाम होते हैं कि माता-पिता अपने बच्चों का नाम उन नामों से नहीं रखना चाहते। कंस, रावण, गोशालक आदि ऐसे ही नाम हैं।

नाम की महिमा हमें बचपन से पढ़ाई जाती है। अपना नाम ऊँचा करना, माँ-बाप का नाम रोशन करना, कुल का नाम, गाँव का नाम रोशन करना आदि की प्रेरणाएँ सुनने को मिलती रहती हैं, किन्तु इसका अभिप्राय यह है कि हम ऐसा कार्य करें जिससे लोग प्रेरणा प्राप्त करें तथा दूसरों को भी मार्गदर्शन प्राप्त हो। यहाँ नाम का उतना महत्त्व नहीं है जितना कार्य के प्रति निष्ठा, समर्पण, जागरूकता, विवेकशीलता, एकाग्रता आदि का। नाम रोशन करने का कथन तो प्रेरणा (Motivation) का कार्य करता है, किन्तु लक्ष्य तो गुणवत्ता की अभिवृद्धि ही होना चाहिए। गुणवत्ता की अभिवृद्धि से यश की प्राप्ति होती है और यश की अभिवृद्धि में नाम प्रसृत होता है। कोई भी क्षेत्र हो व्यापार, शिक्षा, सेवा, साधना आदि सभी क्षेत्रों में गुणवत्ता की पूजा होती है। हम नाम और यश में अटक जाते हैं और यश के कारण अहंकार में फूले नहीं समाते हैं। यह अहंकार एक ऐसा विष है जो हमारे सद्गुणों के विकास को अवरुद्ध करता है। इसलिए नाम का आकर्षण छोड़कर सम्यक् रीति से कार्य करने में ही अपना हित है।

जैनधर्म व्यक्तिपूजक नहीं गुणपूजक है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह नाम पूजक नहीं गुणों का पूजक है। नाम का आकर्षण हो या नहीं, किन्तु सद्गुणों की सुरभि दूर-दूर तक फैलती रहे, इसके लिए हम दुर्गुणों की कंटीली झाड़ियों की सफाई निरन्तर करते रहें एवं सद्गुणियों की महिमा का गान करते रहें तो सच्चे आनन्द की प्राप्ति होगी। आनन्द अपने नाम में नहीं, अपितु उसके मोह से रहित होने में है।



आत्म-वाणी

पंचविधे जीवन्स गिज्जाणमग्गे पण्णत्ते, तं जहा-पाएहिं, ऊरूहिं, उरेणं, सिरेणं, सव्वंगेहिं ।

पाएहिं गिज्जायमाणे गिरयगामी भवति, ऊरूहिं गिज्जायमाणेति रियगामी भवति, उरेणं गिज्जायमाणे मणुयगामी भवति, सिरेणं गिज्जायमाणे देवगामी भवति, सव्वंगेहिं गिज्जायमाणे सिद्धिगतिपज्जवसाणे पण्णत्ते ।

-स्थानांग सूत्र, पंचम स्थान, तृतीय उद्देशक, सूत्र २१४

जीव-प्रदेशों के शरीर से निकलने के मार्ग पाँच कहे गये हैं। जैसे-

१. पैर, २. उरू, ३. हृदय, ४. शिर, ५. सर्वाङ्ग

१. पैरों से निर्याण करने (निकलने) वाला जीव नरकगामी होता है।
२. उरू (जंघा) से निर्याण करने वाला जीव तिर्यचगामी होता है।
३. हृदय से निर्याण करने वाला जीव मुनष्यगामी होता है।
४. शिर से निर्याण करने वाला जीव देवगामी होता है।
५. सर्वाङ्ग से निर्याण करने वाला जीव सिद्धगति-पर्यवसान वाला कहा गया है अर्थात् मुक्ति प्राप्त करता है।

सत्तविधे आउभेदे पण्णत्ते, तं जहा-

अज्झवसाण-णिमित्ते, आहारे वेयणा पराघाते ।

फासे आणापाणू सत्तविधं भिज्जाए आउं ॥१॥

-स्थानांग सूत्र, सप्तम स्थान, सूत्र ७२

आयुर्भेद(अकाल मरण) के सात कारण कहे गये हैं, जैसे-

१. राग, द्वेष, भय आदि भावों की तीव्रता से।
२. शस्त्राघात आदि के निमित्त से।
३. आहार की हीनाधिकता या निरोध से।
४. ज्वर, आतंक, रोग आदि की तीव्र वेदना से।
५. पर के आघात से, गड्ढे आदि में गिर जाने से।
६. सांप आदि के स्पर्श से -काटने से।
७. आन-पान-श्वासोच्छ्वास के निरोध से।

बिबेचन - सप्तम स्थान के अनुरोध से यहाँ अकाल मरण के सात कारण बताये गये हैं। इनके अतिरिक्त रक्त-क्षय से, संक्लेश की वृद्धि से, हिम-पात से, वज्र-पात से, अग्नि से, उल्कापात से, जल-प्रवाह से, गिरि और वृक्षादि से नीचे गिर पड़ने से भी अकाल में आयु का भेदन या विनाश हो जाता है।

विचार-वार्तिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म. सा.

- जब कभी साधक का मन साधना से विचलित हो जाय, भोग की वस्तुओं में लग जाय, परिवार-जनों, पुत्र, धन आदि में चला जाय, तो सबसे पहले यह सोचो कि जिनको मैं अपना समझ रहा हूँ, वे मेरे नहीं हैं और मैं भी उनका नहीं हूँ।
- गृहपति भाई-बहिन यह समझ लें कि परिवार की देखभाल करना हमारा कर्तव्य है। यह धन-दौलत तो किसी दूसरे की है। मेरे साथ चलने वाली नहीं हैं। मन की चंचलता को मिटाने का यह एक उपाय है।
- राग को कम करना है तो आरामतलबीपना छोड़ो और आतापना लो।
- शास्त्रकार कहते हैं कि बाहर जाने वाले मन को यदि रोकना है तो बाहरी बातों से उसको हटाओ, ममता को समाप्त करो, विषय-कषायों से बचते रहो।
- जो आध्यात्मिक मार्ग की ओर आगे बढ़ाने की बजाय उससे पीछे मोड़ती है, उस कथा का नाम विकथा है।
- बाहरी वस्तु से जितनी-जितनी ममता होगी, राग होगा, स्नेह होगा उतना-उतना मन चंचल बनता जायेगा।
- राग बन्ध का कारण है और विराग बन्ध-मोचन का साधन। इनके बीच में एक कड़ी और होती है राग से खींचने वाली तथा विराग से जोड़ने वाली, जिसका नाम है 'अनुराग'। देव, गुरु, धर्म तथा शास्त्र की ओर अनुराग होता है तो व्यक्ति राग से विराग की ओर बढ़ेगा।
- यदि सहिष्णुता पैदा हो गई तो शारीरिक कष्ट सामने आने पर भी मन में चंचलता नहीं आयेगी।
- जिसने अपने शरीर को साध रखा है, मन को मनाने की क्षमता है, उसको किसी भी परिस्थिति का सामना करने में कठिनाई नहीं होती।
- मन यदि सधा हुआ है तो आप जैसा मिला उसमें सन्तोष करोगे, राग-द्वेष नहीं होगा, मन चंचल नहीं होगा।

- 'नमो पुस्त्रिस्त्रयं हृत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

सजग रहें संवर करणी में

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. द्वारा जैन स्कूल, महामन्दिर, जोधपुर में फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी 6 मार्च, 2008 को फरमाए प्रवचन का संकलन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है—सम्पादक

धर्मप्रेमी बन्धुओं!

आज चतुर्दशी है, साथ में पाक्षिक पर्व 'पक्खी' भी है। इस तरह के पर्व पर आप विशेष रूप से धर्म-ध्यान करें इसकी प्रेरणा की जा रही है। आज ज्ञान-विज्ञान की जानकारी बढ़ी है, विचारों की सामग्री भी बढ़ी है, परन्तु आचार-धर्म और क्रिया दोनों दिनों-दिन शिथिल होते जा रहे हैं। प्राचीन समय में तिथियों पर स्थानकों में रौनक बनी रहती थी। अष्टमी, चतुर्दशी, पक्खी जैसी पर्व तिथियों पर पहले जो उत्साह दिखाई देता था वह आज कम देखने को मिलता है। पहले जैसी धर्म-ध्यान करने की भावना में कमी के कारण संतों को प्रेरणा करनी पड़ती है।

लौकिक पर्व स्वार्थ से जुड़े हैं। इन पर्वों पर लोग निरन्तर उत्सुक रहते हैं। आज शिवरात्रि है। इसे भी कई लोग पर्व के रूप में मनाते हैं। पहले शायद इस तरह शिवरात्रि मनाने का रूप कम था, आज तो धूम-धाम से शिवरात्रि मनाई जाती है। मन्दिरों में, गलियों में, मौहल्लों में सुबह से क्या बच्चे, क्या बूढ़े सभी तैयारियों में जुट जाते हैं। 'गणपति बप्पा मोरिया' (अनन्त चतुर्दशी) पर भी आपने देखा होगा भक्त अब अधिक उत्साहित रहते हैं। भक्त तरक्की में हैं, तरक्की कौनसी? खाने-पीने में, पहनने-ओढ़ने में, गाने-बजाने में, किन्तु यह तरक्की तरक्की नहीं होती। असली तरक्की तो वह है जिसमें आत्म-विकास हो, सत्य का बोध हो, संयम से जुड़ने की प्रेरणा हो और आत्म-आराधन का भाव हो। यह तभी संभव है जब हम लोकोत्तर पर्व से जुड़ेंगे।

भगवान महावीर ने आत्म-कल्याण के लिए ही आचार-धर्म का उपदेश दिया। भगवान ने स्वयं आचार-धर्म का पालन किया, फिर हमें उस धर्म पर चलने का उपदेश दिया। आत्म-विकास के लिए विद्या और चरण साथ-साथ चलने चाहिये। विद्या कहते हैं ज्ञान को, चरण कहते हैं चारित्र को। “पढ़मं नाणं तओ दया”- पहले ज्ञान है, फिर दया है। दया का तात्पर्य यहाँ क्रिया है। लोग आज क्रिया को भूलते चले जा रहे हैं। अभी मुनिश्री कह रहे थे-क्रिया-धर्म शिथिल हो रहा है। मैं तो कहता हूँ आज कई हैं जो सामायिक तो करते हैं, पर विधि का पूछो तो उन्हें पता ही नहीं। श्रावक दौड़ते-भागते आते हैं, मुँहपत्ति बाँधते-बाँधते ‘करेमि भंते’ का पाठ बोलते हैं। दौड़ते-भागते आने वाले जैसे-तैसे समय पूरा करते हैं, उन्हें न विधि सहित सामायिक लेने का ध्यान है, न विधि सहित सामायिक पारने का। फिर साहूकारी ऐसी जताते हैं कि सामायिक पारने की पाटी में बोलते हैं- सामायिक विधि से न ली हो, विधि से न पाली हो, विधि में कोई अविधि हुई हो तो तरस मिच्छामि दुक्कडं। कोई विधि से सामायिक ले और विधि से पाले तो अविधि हो सकती है, पर वह तो भागते-दौड़ते सामायिक लेता है, भागते-दौड़ते पालता है तो विधि में अविधि के मिच्छामि दुक्कडं’ का क्या मतलब?

अष्टमी-चतुर्दशी को श्रावक के लिए पौषध और दयाव्रत की बात कही जाती है, लेकिन आज दयाव्रत का ढर्रा तो इतना बिगड़ गया कि क्या कहें? मैंने देखा है पहले के श्रावक आठ प्रहर की दया करते थे। पीपाड़ में आठ प्रहर की दया करने वाले आज भी मौजूद हैं। हाँ, कोई देरी से आया और वह यदि दया करता है तो उसका दयाव्रत भी सूर्योदय तक सात प्रहर का तो होना ही चाहिये। आज क्या होता है? कुछ तो पाँच सामायिक करके मान लेते हैं कि दया हो गई। कुछ दिन-दिन की दया करते हैं। दया पाँच सामायिक से नहीं होती, चार बजे तक नहीं होती, दिन-दिन में सामायिक से भी दया नहीं होती, दया तो दिन और रात के सात प्रहर और सूर्योदय तक की होती है।

आज देखा-देखी दया में विकृतियाँ पनप रही हैं। देखा-देखी ही

करनी है तो अच्छी बातों की देखा देखी करो। अमुक पाँच सामायिक करता है तो मैं छः सामायिक करूँ, सात करूँ। वह दिन-दिन की दया करता है तो मैं रात-दिन की दया करूँ। आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज) तो दिन-दिन की दया करवाते ही नहीं थे। हाँ, संवर जितने समय का करना हो, किया जा सकता है। संवर दिन का हो सकता है, रात का हो सकता है, रात और दिन का भी हो सकता है। दया व्रत सात अथवा आठ प्रहर का ही होता है, लेकिन आज इसमें भी विकृति आ रही है। लोगों की मानसिकता बन गई हैं कि जितना करें उतना ही अच्छा है। यह बात दयाव्रत के साथ जोड़कर नहीं देखें। सामायिक 48 मिनट की ही होती है, 24 मिनट की सामायिक कर लें, तो ऐसा नहीं सोचना चाहिये। सामायिक 48 मिनट से कम की होती ही नहीं। महाव्रतों के रूप में संयम जीवन भर का होता है दो-चार साल के लिए संयम नहीं होता। आज हर क्रिया में ढिलाई आ रही है, वह ठीक नहीं है। उपवास के साथ पौषध जरूरी है। आज पौषध प्रायः कम लोग ही करते हैं। जो लोग पौषध करते भी हैं वे भागते-दौड़ते आते हैं। चउवीसत्थव किया या नहीं, पर आते ही कहते हैं-बाबजी - पौषध करा दो। घर से आए हैं तो गमनागमन की क्रिया जरूर लगती है, इच्छाकारेण के पाठ से गमनागमन के दोषों का, पापों का मिच्छामि दुक्कडं दिया जाता है। तस्सउत्तरी के पाठ से कायोत्सर्ग करने का संकल्प किया जाता है। ध्यान के बाद में कायोत्सर्ग शुद्धि हेतु पाठ बोला जाता है।

आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज) कई बार कहते थे कि आज तपश्चर्या बढी है, किन्तु संवर करणी कम हो गई है। उपवास करके आहार का त्याग होता है, आस्रव का त्याग नहीं होता। आहार का सेवन कर्मबन्ध का कारण नहीं है। कर्म-बन्ध का कारण तो आस्रव है। आज धर्म-साधना में शिथिलता आ रही है जिसका श्रावकों को ध्यान नहीं है। श्रावकों को धर्म-साधना का ध्यान होता तो वे पुराने श्रावकों की तरह पर्व तिथियों पर दया-संवर, उपवास-पौषध करते। अष्टमी-चतुर्दशी के दिन भी आज पौषध करने वाले विरले हैं। आप चाहें पौषध करें, चाहे दया-संवर, किन्तु करें अवश्य। दया-संवर में ग्यारह सामायिक का विधान इसलिए

किया गया कि आदमी खा-पीकर प्रमाद में न रह जाय। कुछ हैं जो मीठी दया करते हैं। वे खा-पीकर सो जाते हैं। दया में दिन में आराम करना ठीक नहीं। जिस खाने से आलस्य आए उस तरह के भोजन को भी ठीक नहीं कहा है।

आप क्रिया की रुचि बढ़ायें। आज धर्मस्थान तो खूब बन रहे हैं, पर धर्म-क्रिया करने वाले नहीं बढ़ रहे हैं। कहना होगा - 'साधन बढ़ रहे हैं, साधना घट रही है।' पहले साधन कम थे, साधना अधिक थी। आज धर्म-ध्यान के प्रचार-प्रसार के लिए भी कई-कई आयोजन हो रहे हैं। जगह-जगह शिविर लग रहे हैं। धार्मिक पाठशालाएँ भी चलाई जा रही हैं। आज बाहरी प्रवृत्ति तो खूब बढ़ रही है, पर जीवन में जो बदलाव आना चाहिये वह नहीं आ रहा है।

आज संवर करणी बढ़ाने की जरूरत है। आज मासखमण करने वाले हैं, पर वे मासखमण में भी संवरकरणी को कम महत्त्व देते हैं। आने-जाने वालों से साता पुछवा कर, गीत करवा कर, मेंहदी लगवा कर मासखमण करने वाले कई हैं। इसे वास्तव में तप नहीं कहा जा सकता। ज्ञानीजन तो इस तरह के तप को लंघन कहते हैं। आप आस्रव का त्याग करें। संवर क्रिया को विधि पूर्वक उत्साह से करें। आप क्रियात्मक पक्ष में प्रमाद को छोड़कर साधना में आगे बढ़ें, यही मंगल मनीषा है।

प्रार्थना से आत्मा पवित्र होती है

श्री जशकरण डागा

शरीर को निर्मल और स्वच्छ करने हेतु जल से स्नान किया जाता है। इसी तरह आत्मा को निर्मल और स्वच्छ (पवित्र) बनाने हेतु भाव स्नान रूप प्रार्थना है। प्रार्थना श्रद्धा और एकाग्रभाव पूर्वक करने से आत्मा पर लगा कर्म मल दूर हो, उसका निखालिस शुद्ध स्वरूप प्रगट होता है। द्रव्य स्नान तो आस्रव और कर्म-बंध का हेतु होने से उससे आत्मा भारी होती है, जबकि यह भाव स्नान संवर और निर्जरा का हेतु होने से आत्मा को हलकी कर परमात्म स्वरूप बना देता है। अतः आत्मर्थियों के लिए नित्य प्रार्थना करना परमावश्यक है। श्रावक के दैनिक षड् आवश्यकों में यह प्रथम आवश्यक है।

-डागा सदन, संघपुरा, पों. टोंक-304001(राज.)

झूठी साक्षी : एक महापाप

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

देवनगर, जोधपुर में दिनांक ८ अप्रैल, २००८ को श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. द्वारा फरमाये गए इस प्रवचन का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नीरतन मेहता द्वारा किया गया है। -सम्पादक

धर्मजिज्ञासु बन्धुओं!

मानव-जीवन का माहात्म्य समझ में आने पर ही साधक महान् कार्य करने में अपने-आपको संलग्न करता है। मानव-जीवन हमें अनन्त-अनन्त पुण्यवानी से प्राप्त हुआ है। अनन्त जन्मों के दुष्कृत्यों की गर्हा करने के लिए, पापों के प्रायश्चित्त के लिए हमें यह मानव जीवन मिला है। मानव-जीवन में ही साधक पापों का परित्याग कर सकता है। अन्य गतियों में जीव यह जान भी ले कि वह पापों के कारण से दुर्गति में आया है फिर भी पापों का परित्याग करने में सक्षम नहीं होता। नरक गति के जीव जानते हैं कि हमने घोर पापों का सेवन किया इस कारण घोरतम दुःखों की वेदनाएँ प्राप्त हो रही हैं, परन्तु वहाँ पर दुःख से छुटकारे का दूसरा कोई उपाय नहीं है। जब मानव को यह भान हो जाता है कि मैंने पाप कर्म किए हैं उन्हीं के परिणामस्वरूप आज पाप उदय में आ रहे हैं, तब वह आस्रव का निरोध करता है, संवर-करणी को जीवन में स्थान देता है और तप आदि के द्वारा उपार्जित कर्मों की निर्जरा करता है। नरकादि में जीव समकित संवर को प्राप्त कर सकता है, किन्तु देशविरति श्रावक या साधु-जीवन अंगीकार करने की उनमें सामर्थ्य नहीं होती। साधु-जीवन अपनाने का पुरुषार्थ तो मानव भव में ही संभव है।

कहते हैं जो कांटा दिखने में जितना सुन्दर होता है, मुलायम होता है उतना उस कांटे के साथ खिलवाड़ करना भारी होता है। हम पापों को सुन्दर कांटे की उपमा से उपमित कर सकते हैं। पाप-कर्म दिखने में सुन्दर लगते हैं, किन्तु उपार्जित पापों का जब उदय आता है तो व्यक्ति रो-रोकर भी उन पापों से छुटकारा नहीं पा सकता। आप बोलते भी हैं-

पुण्य क्षीण जब होत हैं, उदय होत हैं पाप
दाजे वन की लाकड़ी, प्रजले आपो-आप ॥

जब जीव के पुण्य क्षीण हो जाते हैं और पापों का अनुभाग बढ़ जाता है तो जीव की दशा खतरनाक हो जाती है। कहते हैं- पाप पानी से पतला होता है। पानी जरा से सुराख से पार निकल जाता है। इसी तरह पाप कहीं भी हो सकता है। छोटी सी प्रवृत्ति भी पापकारी हो सकती है। पाप का परिणाम भोगना ही पड़ता है। पापी की हालत कैसी होती है। पाप उदय में आते ही स्थिति कैसी बनती है? हम महासती अंजना के जीवन को देखें या कृष्ण वासुदेव के जीवन को देखें, पुण्य क्षीण होता है तो जीव की बड़ी भयंकर दशा बन जाती है।

यह मानव-जीवन पाप-कर्मों को तिलांजलि देने के लिए मिला है। पुण्य, पाप और धर्म-ये तीन चीजें हैं। पुण्य-पाप कर्म हैं, धर्म दोनों से अलग है। संसार में भ्रमण करते हुए जीव के लिए पुण्य साता का एवं पाप असाता का कारण बन सकता है। जीव को देव गति भी पुण्य के प्रभाव से मिलती है, वहाँ पर जीव सुखों का उपभोग करता हुआ सुख भोगता है। जब तक पुण्य क्षीण न हो तब तक जीव पुण्य का उपभोग करता रहता है और पुण्य क्षीण होने पर जीव को तिर्यञ्च या मनुष्य गति में आना पड़ता है। भगवती सूत्र में पुण्य क्षीण होने का थोकड़ा बताया गया है। पुण्य का भोग करना पाप है।

भोग दो तरह से होता है-राग से तथा द्वेष से। पुण्यवानी से मिली वस्तुओं के प्रति अगर आसक्ति होती है तो यह पाप के अन्तर्गत आता है। अनुकूल मकान मिला, पाँचों इन्द्रियों का योग मिला, किन्तु उनसे राग है तो व्यक्ति पाप-कर्म उपार्जित कर रहा है।

जिनवाणी के मार्ग में सजगता से जीना है। धर्म-साधना कठिन नहीं सरल है। मात्र उसका महत्त्व समझ में आने की देर है। हम इसे ट्रिपल एस(SSS) से भी समझ सकते हैं। बचपन में 'एस' समय का, युवावस्था में 'एस' शक्ति का और वृद्धावस्था में 'एस' समझ का सूचक है। बचपन में समय का और युवावस्था में शक्ति का प्राचुर्य होता है और वृद्धावस्था में समझदारी होती है। ये तीनों धर्म-साधना में सहायक हैं। बचपन में समय एवं युवावस्था में शक्ति सहज है, किन्तु वृद्धावस्था में समझ है, पर शक्ति नहीं रहती इसलिए बुढ़ापे में धर्म-साधना जैसी चाहिये वैसी नहीं हो पाती। लोग सोचते हैं बुढ़ापा आने दो तब धर्म-ध्यान करेंगे पर

वृद्धावस्था में शक्ति नहीं होने से पश्चात्ताप के अलावा कुछ भी नहीं मिलता ।

हमारा महाराष्ट्र में विचरण हो रहा था । तब एक भाई आया, कहने लगा—
“महाराज! आज पश्चात्ताप होता है । हम उस जवानी में दीक्षा ले लेते तो कितना अच्छा होता ।” भगवान् ने कहा—

जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्डइ ।

जाविदिया न हायन्ति, ताव धम्मं सम्मायरे ।

जब तक बुढ़ापा पीड़ा नहीं देता, व्याधियाँ शरीर में घर नहीं करती, इन्द्रियाँ क्षीण नहीं होती उसके पहले धर्म का समाचरण कर लेना चाहिये । यह भी निश्चित नहीं है कि बुढ़ापा आयेगा । आप देखते हैं किसी को सौ के ऊपर उग्र मिल रही है तो कई जवानी में चले जाते हैं । ज्ञानी कहते हैं— “जीवन का कोई भरोसा नहीं है । कई बैठे-बैठे, कई सोते-सोते और कई दुर्घटना में चल बसते हैं । धर्म-साधना करने वाले को हमेशा मृत्यु को ध्यान में रखना चाहिये । यथा-मृत्यु ने मेरी चोटी पकड़ रखी है । मृत्यु न जाने कब गर्दन दबोच ले । मृत्यु शक्तिशाली दैत्य है, इसलिए आदमी को पापों के कार्य पेण्डिंग रखने चाहिये । पाप का कार्य अभी नहीं, बाद में करेंगे और जब भी मन में धर्म का भाव आए, तुरन्त धर्म का समाचरण कर लेना चाहिये । क्योंकि इस जीवन का दो पल का भी भरोसा नहीं है । पता नहीं कब आयुष्य की डोर टूट जाए । बच्चे हों या बड़े अथवा वृद्ध हो, मृत्यु कभी भी आ सकती है । कहा है—

चन्दन मत्त फूलना, काया देख सुडौल ।

बैठे-बैठे हो जाते हैं यहाँ से बिस्तर गोल ।।

किसी की सुडौल काया है, अवस्था से वह युवा है, परन्तु उसका भी पता नहीं चलता, बैठे-बैठे संसार से बिस्तर गोल हो जाते हैं । बारह महापाप बताये गये हैं, उन महापापों को लेकर चर्चा चल रही है । छठा महापाप है झूठी साक्षी देना । झूठी साक्षी देने वाला महापापी कहा गया है । साक्षी का मतलब है-साख देने वाला । मैंने ऐसा देखा है । जो उसने देखा वह मैंने देखा है । आदमी कभी सच्ची तो कभी झूठी साक्षी देता है । स्वार्थ में झूठी साक्षी देने वालों की भी कोई कमी नहीं है । झूठी साक्षी का परिणाम कितना खतरनाक होता है । साधक के लिए कहा गया है कि वह व्यर्थ की पंचायत नहीं करे । पंचायत दूसरे कर रहे हैं तो करने दे, साधक पंचायत में पड़ने के बजाय मौन रहे । बहुत-से लोगों की आदत होती है वे दूसरों के कामों को

निपटा देना चाहते हैं। आत्म-साधक को प्रपंच से हटकर मात्र आत्मा का काम ही करना चाहिये। जिसे आत्मा का काम ध्यान में आ गया वह परायों के काम में कभी उलझेगा नहीं। जिसे भी कर्म-बन्धन का भय है वह गलत काम को कभी भी स्थान नहीं देगा। कई बार व्यक्ति ऐसी झूठी साख दे देता है कि उससे बड़ा अनर्थ हो जाता है। साक्षी प्रायः अदालत में दी जाती है। वह भी पवित्र ग्रन्थों पर हाथ रखकर शपथ पूर्वक दी जाती है। झूठी साक्षी खतरनाक पाप है। व्यक्ति झूठी साक्षी दे तो देता है, लेकिन उस महापाप से अपने-आपको बचा नहीं सकता।

झूठी साक्षी देने वाला चन्द चाँदी के टुकड़ों के लिए अपने-आपको बेच देता है। ज्ञानीजन कहते हैं-तीन प्रकार के कोट से हमेशा बचकर रहना चाहिए। एक है काला कोट, दूसरा है सफेद कोट और तीसरा है खाकी कोट। काला कोट है वकील का, जज का। सफेद कोट डॉक्टर का है और खाकी कोट पुलिस का है। व्यक्ति बीमार होता है तब डॉक्टर की शरण में जाता है। अगर आदमी स्वयं ही खान-पान का संयम रखता तो उसे सफेद कोट वाले के सामने नहीं जाना पड़ता। खाकी कोट से आप परिचित हैं, पुलिस के चक्कर में नहीं पड़ें तब तक ठीक है। वकील और जज काला कोट पहनते हैं। वे काला कोट क्यों पहनते हैं? जिसका काला रंग है वह दूसरे रंग को आने नहीं देता। आज जरूरत है काले कोट से बचकर चलने की। किसी ने बताया कि सौ रुपये के लिए झगड़ा हो गया। झगड़ा अदालत में चलता रहा, वर्षों बीत गये। सौ रुपये के झगड़े के लिए हजारों खर्च हो गये। यह अदालत ही ऐसी है। अदालत का मतलब आप जानते होंगे। 'अ' आओ, 'दा' दोनों, 'ल' लड़ो और 'त' से तबाह हो जाओ।

हमें पापों से बचकर चलना है। पाप से बचकर चलेंगे तो ही समाधि प्राप्त कर सकेंगे। आज व्यक्ति झूठ या फरेब का आचरण कर रहा है। ज्ञानीजन कहते हैं-“जिसका मति और श्रुत ज्ञान निर्मल है वह वाणी का वागरण कर दे तो लोह की लकीर समझिए।” आचार्य भगवन्त ऐसे ही महापुरुष थे। जो सत्य का अनुपालन करता है वह भगवत् पद को प्राप्त करता है। इसलिए कह दिया-सत्य भगवान है, भगवान ही सत्य है।

आप स्वार्थ के वशीभूत कभी झूठी साक्षी न दें। अदालत की साक्षी ही नहीं, संसार के सब काम झूठे हैं। किसी ने भव्य भवन बनवाया। पूछा-मेरा मकान कैसा बना? आप लिहाज में आकर अच्छा बनाया कह तो जाते हैं, पर यह ध्यान में

नहीं आता कि मैं मकान की अनुमोदना क्यों करूँ? गुरुदेव फरमाते थे कि एक व्यक्ति छः काय के जीवों की हिंसा करके मकान बनवाता है, दूसरा मकान तो नहीं बनवाता लेकिन मकान का अनुमोदन करता है तो दोनों पाप करते हैं।

आज आदमी दूसरों के दोष देखता है तो मन में राजी होता है। आपको यह मानव जीवन मिला है। आप श्रावक हैं; इसलिए पाप-कर्मों का अनुमोदन नहीं करें। झूठी साक्षी महापाप है उससे बचें। पाप की अनुमोदना झूठी साक्षी की तरह से है। झूठी साक्षी से बचकर चलना चाहिये। किसी ने किसी का कत्ल किया, न्यायालय में झूठी साक्षी दे दी, उसे कई दिनों तक दीवार पर खून के छींटे नजर आते रहे। झूठी साक्षी से जीवन बर्बाद होता है, व्यक्ति दुःखी रहता है, आगे भी उसे दुःख ही मिलता है। इस पाप से हटकर जीवन को धर्ममय बनायेंगे तो सुख-शांति प्राप्त हो सकेगी।

हर्षित मन

डॉ. रमेश 'मंयक'

मैं निंदा करता रहा

दुर्गुणों की - अपने ही

पश्चात्ताप के लिए,

क्यों-क्रोध को रोक नहीं पाता?

क्यों-लोभ को छोड़ नहीं पाता?

क्षमा शीलता के क्षणों में

अहंकार से भर जाता क्यों?

पराए की निंदा से तो

शत्रुओं की संख्या ही बढ़ाऊँगा

असभ्य, अव्यावहारिक आलोचक कहलाऊँगा

सदैव डरा डरा सा रह जाऊँगा

मैं सदगुणों को पचा सकूँ तो

दुर्गुणों से बचा सकूँ तो

हर्षित मन होगा, अन्यथा

मानव-जीवन पर लांछन होगा।

-बी-८, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-३१२००१ (राज.)

श्रमणाचार : स्वरूप और चिन्तन (५)

उपाध्याय श्री रमेश मुजि जी शास्त्री

श्रमणोचित उपकरण— श्रमण का समूचा जीवन संयम और विरक्ति का प्रतीक होता है। वह बाह्य वस्तुओं के स्वामित्व का अधिकार त्याग कर दीक्षा अंगीकार करता है। अपार ऐश्वर्य और अतुलित सम्पत्ति को भी तृणवत् त्याग देता है और उसके मानस में उसके प्रति कोई मोह व्याप्त नहीं होता है। निश्चित रूप से वह अपरिग्रही होता है, तथापि उसे अपनी साधना में कतिपय उपकरणों की अपेक्षा रहती है। वह मोह को त्यागने हेतु प्रयत्नशील रहता है। तप-और संयम की साधना का वरण करने पर भी, विरक्तावस्था में भी उसकी काया तो रहती है और इसलिए जीवन के निर्वाह के लिए कतिपय साधनों की अनिवार्यता भी रहती है। शरीर तो अध्यात्म-साधना का एक अनिवार्य साधन है। ऐसी अवस्था में शरीर-निर्वाह साधक के लिये भी अपेक्षित रहता है। इस गात्र-रक्षण एवं पोषण के लिये भी साधनों की अपेक्षा रहती है। इस विषय में श्रमणाचार की विशेषता यह है कि श्रमण न्यूनतम अनिवार्य उपकरणादि का ही उपयोग करता है और उनके साथ अपनी ममता को रंच मात्र भी जुड़ने नहीं देता है।

श्रमण को भोज्य पदार्थों, कतिपय वस्त्र-पात्र, विश्राम-स्थल आदि की जो आवश्यकता होती है, उसकी पूर्ति हेतु वह उनका उपार्जन नहीं करता है। उपार्जन में आरम्भ और आरम्भ से हिंसा होती है और श्रमण सर्वप्रकार की हिंसा का त्याग करता है। वह तो निर्दोष भिक्षा द्वारा इन आवश्यक साधनों को जुटाता है। अणुगार श्रमण नौ प्रकार के बाह्य संयोग परिग्रह और चौदह प्रकार के आभ्यन्तर संयोग से मुक्त रहता है। बाह्य संयोग निम्नानुसार हैं—

- | | | |
|------------|-----------|--------------|
| १. क्षेत्र | २. वास्तु | ३. हिरण्य |
| ४. सुवर्ण | ५. धन | ६. धान्य |
| ७. दासी | ८. दास | ९. कुप्य आदि |

आभ्यन्तर संयोग परिग्रह इस प्रकार हैं^{१०} -

- | | | |
|---------------|--------------|-------------|
| १. मिथ्यात्व | २. स्त्रीवेद | ३. पुरुषवेद |
| ४. नपुंसक वेद | ५. हास्य | ६. रति |
| ७. अरति | ८. भय | ९. शोक |
| १०. जुगुप्सा | ११. क्रोध | १२. मान |
| १३. माया | १४. लोभ | |

उक्त स्तुत्य त्यागवृत्ति के साथ श्रमण के लिये जो अनिवार्य चार वस्तुएँ मानी जाती हैं, वे ये हैं^{११} ।

१. पिण्ड- अन्न, जल, औषध ।
२. शय्या- निवासार्थ स्थान ।
३. वस्त्र- पहनने, पादप्रोज्छन आदि के लिए।
४. पात्र- काष्ठ आदि से निर्मित।

श्रमण के पास तीन पात्र रहते हैं- एक पात्र आहार के लिए, दूसरा पात्र जल पीने के लिये और तीसरा पात्र देह शुद्धि के लिए है । ये पात्र धातु के नहीं होते हैं, तुम्बे, काष्ठ अथवा मिट्टी से निर्मित पात्र ही श्रमण प्रयुक्त कर सकता है । शारीरिक शोभा वृद्धि या शृंगार रुचि की तुष्टि के लिये श्रमण वस्त्रों को धारण नहीं करता है । वस्त्र धारण के तीन ही प्रयोजन हैं- लज्जा-निवारण, जनघृणा-निवारण और शीतादि प्राकृतिक प्रहार से सुरक्षा । ये वस्त्र केवल ऊन अथवा सूत से निर्मित होते हैं । वस्त्रों की मर्यादा स्थिर की गयी है । श्रमण अधिकतम बहत्तर हाथ और श्रमणी तिरानवें हाथ वस्त्रों का उपयोग कर सकती हैं ।

श्रमणों के उपयुक्त उपकरण इस प्रकार हैं^{१२} -

१. मुख वस्त्रिका- वस्त्र खण्ड इक्कीस अंगुल लम्बा और सोलह अंगुल चौड़ा होता है, जिसे आठ पटों में संकुचित कर सूत्र-संयुक्त कर दिया जाता है । पट्टिका

१०. क-प्रश्नव्याकरण टीका पृष्ठ-४५१, ख- बृहत्कल्प भाष्य - ८३१

११. उत्तराध्ययन सूत्र - बृहद् वृत्ति पत्र - ५१७

१२. क - प्रवचनसारोद्धार गाथा - ५९२, वृत्ति पत्रांक - १६६

ख - ओघ निर्युक्ति गाथा - ६६८

या वस्त्रिका का उपयोग मुखावरण के रूप में किया जाता है। दोनों कानों में सूत्र (डोरी) को धारित कर लिया जाता है।

२. रजोहरण— यह वस्त्रावृत और दण्ड से जुड़ा ऊन का गुच्छक होता है। जो रज, चींटी आदि को हटाने में प्रयुक्त होने वाला मृदुल उपकरण है।

३. पात्र— आहार—ग्रहण करने, जल पीने और देह शुद्धि के लिये तीन काष्ठ पात्र हैं।

४. चोलपट्टक— शरीर के अधोभाग (कमर से नीचे का भाग) को आवृत करने का वस्त्र।

५. वस्त्र— श्रमण के बहत्तर और श्रमणी के तिरानवें हाथ वस्त्र की मर्यादा है।

६. कम्बल— शीत-रक्षा-हेतु।

७. आसन— बैठने के लिये।

८. पाद प्रोच्छन— छोटा सा वस्त्र—खण्ड।

९. शय्या— ठहरने के लिये।

१०. संधारा— बिछाने के लिये घास, पुआल आदि।

११. पीठ— आसीन होने की चौकी।

१२. फलक— शयनार्थ तख्ता आदि।

१३. पात्र बन्ध— आहार लाने हेतु प्रयुक्तपात्र को बांधने का वस्त्र।

१४. पात्र स्थापन— वस्त्र खण्ड।

१५. पटल— पाँव ढकने का वस्त्र।

१६. पात्र केसरिका— प्रमार्जनी।

१७. रजस्त्राण— पात्र को ढकने का वस्त्र।

१८. दण्ड— वृद्ध श्रमणों के लिये सहारा।

१९. मात्रक— लघुनीति—परठने का पात्र।

२०. उडक— उच्चार—प्रस्रवण परठने का पात्र।

श्रमण के लिये निर्धारित भिक्षा प्रणाली विशिष्ट कोटि की होती है। यह वस्तुतः एक तपश्चर्या का रूप होता है। इस भिक्षाचर्या को गोचरी के नाम से जाना जाता है। श्रमण अपने लिये आवश्यक आहार की सारी मात्रा किसी एक गृहस्थ से

ग्रहण नहीं करता है। वह अनेक घरों से थोड़ी-थोड़ी भिक्षा स्वीकार करता है। इससे किसी एक पर भार नहीं पड़ता है। न ही उसके किसी कार्य-व्यापार अथवा निर्धारितव्यवस्था में कोई व्यवधान आता है। भिक्षा पद्धति की यह उल्लेखनीय विशेषता है कि इसके कारण दाता गृहस्थ आनन्द का अनुभव करता है। सदगृहस्थ अपने लिए पहले से बने भोजन में से श्रमण को प्रदान कर लाभान्वित होता है।

श्रमण रसना-तुष्टि अथवा स्वाद के लिए आहार-ग्रहण नहीं करता है। उसके आहार-ग्रहण करने के लिए निम्नांकित छह कारण हैं -

१. क्षुधा वेदना सहन न होना।
२. वैय्यावृत्य के लिये।
३. ईर्या शोधनार्थ- चलते-फिरते समय जीव रक्षा की सावधानी हेतु नेत्र-ज्योति की रक्षा के लिये।
४. संयम पालनार्थ।
५. जीवों की रक्षा के लिये।
६. धर्म चिन्तनार्थ।

इसी प्रकार आहार-त्याग हेतु भी छह ही निमित्तों का विधान है-

१. रोगव्याधि आदि अभिवर्धित हो जाने पर।
२. संयम-त्याग का उपसर्ग आने पर।
३. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिये।
४. जीवों की रक्षा के लिये।
५. तपस्या के लिये।
६. शरीर-त्याग का अवसर आ जाने पर।

आहार का ग्रहण एवं उसका त्याग, ये दोनों ही संयम - रक्षार्थ होते हैं।

सामाचारी

श्रमण की दिनचर्या का जैन-आहार-शास्त्र में विस्तृत विश्लेषण प्राप्त होता है जिसे सामाचारी कहते हैं। सामाचारी के दस प्रकार हैं^{१३}, संक्षेप में उन भेदों

१३- क - भगवती सूत्र २५/७, ख-उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन - २६

ग - स्थानांग सूत्र, स्थान १० सूत्र, ७४९

का स्वरूप इस प्रकार प्रतिपादित है-

१. **आवश्यकता**- इसके अन्तर्गत यह सुव्यवस्था है कि जब कभी श्रमण को किसी आवश्यक कार्य से स्थानक से बाहर जाना हो, तो उसे कहना चाहिये- मैं आवश्यक कार्य के लिये बाहर जाता हूँ।
२. **नैषेधिकी**- बाहर से लौट आने पर उसे कहना चाहिये कि अब मुझे बाहर नहीं जाना है।
३. **आपृच्छना**- श्रमण को कोई कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व आचार्य या ज्येष्ठ श्रमण से अनुमति लेने के लिये कहना चाहिये कि क्या मैं यह कार्य कर लूँ।
४. **प्रतिप्रच्छना**- किसी कार्य विशेष की आचार्य अथवा ज्येष्ठ श्रमण द्वारा पहले अनुमति नहीं दी गई हो, अब उस कार्य का किया जाना आवश्यक हो गया हो, तो श्रमण उसके लिये इस प्रकार अनुमति लेता है, क्या अब मैं यह कार्य कर लूँ।
५. **छन्दना**- लाये गये आहारादि के लिये सहवर्ती श्रमणों को आमन्त्रित करना और ऐसा कर श्रमण द्वारा धन्य होना।
६. **इच्छाकार**- परस्पर एक-दूसरे की इच्छा जानकर तदनुसार व्यवहार करना।
७. **मिथ्याकार**- प्रमादवश हुई त्रुटियों के लिये प्रायश्चित्त करना।
८. **तथैतिकार**- श्रमण को चाहिए कि गुरु तथा ज्येष्ठ श्रमण की आज्ञा स्वीकार करे और तहत्ति (आप का कथन यथार्थ है) कह-कर आदर करे।
९. **अभ्युत्थान**- उठने-बैठने आदि में अपने से बड़ों के प्रति श्रमण को विनय का व्यवहार करना चाहिये।
१०. **उपसंपदा**- ज्ञानार्जन आदि के उद्देश्य से समर्थ गुरु का आश्रय ग्रहण करना।

श्रमणजीवन में स्वाध्याय का अति महत्त्वपूर्ण स्थान है। दिन एवं रात में इस प्रवृत्ति हेतु पर्याप्त समय निर्धारित किया गया है। श्रमण अपनी दिनचर्या को समयबद्ध रूप से विभक्त कर तदनुसार आचरण करता है। दिन और रात्रि के दोनों कालों को वह चार-चार भागों में विभक्त कर दिनचर्या का निर्धारण करता है। श्रमण को चाहिए कि दिन के प्रथम प्रहर में स्वाध्याय, द्वितीय प्रहर में ध्यान, तृतीय प्रहर में भिक्षाचर्या और चतुर्थ प्रहर में स्वाध्याय करे। इसी प्रकार उसे रात्रि के प्रथम प्रहर में स्वाध्याय, द्वितीय प्रहर में ध्यान, तृतीय प्रहर में निद्रा और चतुर्थ प्रहर में पुनः स्वाध्याय करना चाहिये। यदि प्रवृत्तिवार देखा जाय तो दिन और रात्रि के कुल आठ

प्रहरों में से चार प्रहर का प्रयोग स्वाध्याय हेतु किया जाता है। दो प्रहर ध्यान के लिये, एक प्रहर आहार और एक ही प्रहर निद्रार्थ निर्धारित है। इस प्रकार श्रमण की दिनचर्या और रात्रिचर्या के सन्दर्भ में विचार किया गया है। उक्त दिन एवं रात्रिकालीन चर्या का संपालक श्रमण का जीवन वस्तुतः जागृति का प्रतीक होता है।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि श्रमणत्व स्वेच्छा से अंगीकृत आत्मशुद्धि और सुख-प्राप्ति का प्रशस्त पथ है। सांसारिक सुख श्रमण का दृष्टि-बिन्दु नहीं बनता है। उसका सर्वोच्च-संलक्ष्य परम-अनन्त सुख होता है, उसकी अध्यात्म-साधना अनन्त और वास्तविक सुख-प्राप्ति के लिये होती है। यह ध्रुव सत्य है कि श्रमण की यात्रा निश्चय रूपेण निरापद नहीं कही जा सकती। उसके साधना-मार्ग में अनेक शूल भी हैं, अनेक फूल भी हैं। श्रमण इन शूलों की चुभन भी हँसते-हँसते सह जाता है, उसके नेत्रों में तो परम-अक्षय सुख का स्वप्न ही तैरता रहता है और उस संजोये हुए स्वप्न को आकार देने के उद्यम में उसे जो भी कष्ट-व्यथा झेलनी पड़ती है, वे उसके लिये नगण्य सी होती हैं। साधना क्रम में श्रमण ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों उसके ये दुःख भी स्वतः न्यून होते जाते हैं और अन्ततः अनन्त-अक्षय सुख की स्वर्णिम-स्थिति आ जाती है। उसकी आत्मा स्वयं परमात्मा बन जाती है, अनिर्वचनीय अतुलनीय आनन्द की दिव्य-ज्योति से सर्वदा सर्वथा रूप से प्रदीप्तिमान हो जाता है। (समाप्त)

पीयूष-वाक्

१. सहनशीलता से संवेदनशीलता बढ़ती है।
२. धर्म का प्रत्येक चरण जीव के लिए हितकारी है।
३. दीक्षा की पाठशाला एकान्त व दीक्षा का पाठ मौन है।
४. पाप बिना उपयोग के हो जायेगा, लेकिन धर्म बिना उपयोग नहीं होगा।
५. धर्म आत्मसाक्षी से होता है।
६. जानकारी जीवन बननी चाहिए।
७. प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करनी चाहिये।
८. वीतराग वाणी समग्र है।
९. प्रतिपालन से ही प्रतिपादन संभव है।

-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म. सा. के प्रवचन से संकलित

ग्लोबल वार्मिंग का कारण : मांसाहार

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार कांकरिया

भूमण्डलीय तपन या 'ग्लोबल वार्मिंग' पृथ्वी की पारिस्थितिकी (इकोलॉजी) के लिए भयंकर त्रासदी बनकर उभर रही है। मानवीय गतिविधियों और क्रियाकलापों के कारण औद्योगिक क्रान्ति प्रारम्भ होने के बाद वायुमण्डल में कार्बनडाइऑक्साइड और मीथेन की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही है। लगभग ३० गैसों भूमण्डलीय तपन को बढ़ा रही हैं, जिनमें उपर्युक्त दो गैसों प्रमुख हैं। औद्योगिक विकास और अन्य मानवीय गतिविधियों के कारण १८ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से फौसिल ईंधन के बढ़ते दहन, जनसंख्या में अभूतपूर्व वृद्धि, मांसाहार के लिए पशुपालन और उनके भोजन का प्रबंध करने के लिए वृक्षों की द्रुतगति से निरन्तर कटाई के कारण कार्बनडाइऑक्साइड और मीथेन की मात्रा में क्रमशः २५ प्रतिशत और ५० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसके कारण पर्यावरण और मौसम की दशा और दिशा में व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं और फलस्वरूप सारे विश्व में वैज्ञानिक चिंतित हैं, अत्यन्त आशंकित है। अमेरिका के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति अल्गोरे ने एक 'इन्कन्वीनियेण्ट ट्रुथ' नामक पुस्तक लिखी है और उस पर आधारित फिल्म का सारे विश्व में प्रदर्शन किया जा रहा है। परिणामस्वरूप सभी जगह इस समस्या का प्रकम्पन मनुष्य समाज के विभिन्न वर्गों को विचलित कर रहा है। अन्य लोगों ने भी अपने-अपने स्तर पर इस दिशा में सार्थक प्रयत्न किये हैं, जिनमें अल्गोरे साहब का प्रयास विशेष उल्लेखनीय है।

ग्लोबल वार्मिंग का कारण समझना आवश्यक है, क्योंकि इससे सारी मानवता और पृथ्वी के पर्यावरण पर व्यापक कुप्रभाव पड़ने का अंदेशा केवल कल्पना की वस्तु नहीं रही। औद्योगिक क्रान्ति १८वीं सदी के उत्तरार्द्ध में प्रारम्भ हुई। उस समय वायुमण्डल में कार्बनडाइऑक्साइड की मात्रा २८० पीपीएम थी जो सन् २००५ में बढ़कर ३८० पीपीएम हो गई। यह आकलन किया गया है कि यदि हमने अपने तौर तरीके नहीं बदले और फौसिल ईंधनों के दहन की गति बढ़ती रही तो लगभग ५० वर्ष के अंतराल में कार्बनडाइऑक्साइड की मात्रा ६०० पीपीएम पार

कर जाने की संभावना है। इसी प्रकार मीथेन और अन्य ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा भी निरन्तर बढ़ने की संभावना है। मानवीय क्रियाकलापों के कारण जैसे कोयला, तेल, गैस का ज्वलन और वृक्षों की बेहिसाब और निर्मम कटाई के कारण इन ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा द्रुतगति से बढ़ रही है। इसके लिए विश्व स्तर पर जो प्रयास किये जा रहे हैं वे अभी तक सतही ही सिद्ध हुए हैं।

वृक्ष फोटो सिंथेसिस प्रक्रिया से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और वायुमण्डल में ऑक्सीजन का उत्सर्जन करते हैं। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया वनों की कटाई के कारण गंभीर रूप से बाधित हुई है। इसका दुष्परिणाम है कि ०.५ से ०.९ डिग्री सेंटीग्रेड ताप में वृद्धि हुई है और यदि यही क्रम चलता रहा तो सन् २१०० तक तापमान में १.४ से ५.८ डिग्री सेंटीग्रेड की वृद्धि होगी। इसके दूरगामी दुष्परिणाम सारे विश्व को झेलने पड़ेंगे।

शुक्र (वीनस) ग्रह के वातावरण में अत्यधिक कार्बनडाइऑक्साइड की उपस्थिति से इतनी अधिक तपन होती है कि वहाँ किसी जीवन का अस्तित्व संभव नहीं है। मंगल (मार्स) ग्रह में ग्रीन हाउस गैसों के अभाव में वातावरण निरन्तर अतिशीतल रहता है, जिसके कारण वहाँ भी किसी प्रकार के जीवन का अस्तित्व संदिग्ध है। कुछ ऐसा संयोग बैठा है कि पृथ्वी के वातावरण में उचित मात्रा में ग्रीन हाउस गैसों की उपस्थिति के कारण औसत तापमान लगभग ३७ डिग्री सेण्टीग्रेड रहता है और इसके कारण यहाँ की पारिस्थितिकी में भिन्न-भिन्न प्रकार का जीवन संभव हो सका है। इसी कारण पृथ्वी को 'गोल्डीलॉक्स' प्लेनेट कहा जाता है। यह मानना पड़ता है कि पृथ्वी अपने आप में विशिष्ट है और इसकी सुरक्षा करना हमारा पवित्र कर्तव्य है। अनेक व्यक्ति भूलवश यह सोचते हैं कि पृथ्वी इतनी बड़ी है कि हमारा कोई भी कार्यकलाप पृथ्वी की इकोलॉजी को स्थायी हानि नहीं पहुँचा सकता। परन्तु बढ़ती हुई जनसंख्या और तकनीकी प्रगति के कारण उपलब्ध साधनों की बहुलता और विविधता इस धारणा को एकदम गलत सिद्ध कर देते हैं, क्योंकि पृथ्वी के वायुमण्डल, वातावरण और समग्र पारिस्थितिकी पर भयंकर कुप्रभाव दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

गो-माँस उत्पादन के लिए यह आकलन किया गया है कि सारे विश्व में गायों की संख्या १४०० करोड़ से अधिक है। यह संख्या मानव जनसंख्या की

तुलना में दुगुनी से अधिक है। प्रत्येक गाय अप्पानवायु के रूप में और अन्य प्रकार से लगभग ४५ किलो मीथेन गैस का प्रतिवर्ष उत्सर्जन करती है। इस प्रकार देखा जाय तो गो-माँस उत्पादन के लिए पशुपालन 'ग्लोबल वार्मिंग' का महत्त्वपूर्ण कारण है, जिसके ऊपर विचार करना और ध्यान देना आवश्यक है। मीथेन गैस कार्बनडाइऑक्साइड की तुलना में ग्रीन हाउस गैस की तरह लगभग २५ गुनी अधिक सशक्त है। एक स्वाभाविक प्रश्न यह उठता है कि मीथेन गैस के उत्सर्जन की, नापने की और आकलन की प्रयोगात्मक विधि अपनाई जाती है। इसके लिए गायों को 'फ्लेक्सी' ग्लास के कठघरे में रखकर कितनी मीथेन गैस का उत्सर्जन हुआ, इसकी गणना की जाती है और इसलिए यह नापने की वैज्ञानिक प्रक्रिया संदेह में नहीं है। अनेक लोग ग्लोबल वार्मिंग के इस पहलू से परिचित नहीं हैं। माँसाहार के लिये सघन पशुपालन किया जाता है और पशुओं की विष्टा और मूत्र भीमकाय साइलो में संगृहीत रखा जाता है। सीमित स्थान के कारण इनका जैविक उर्वरक की तरह उपयोग तकनीकी और आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं होता। इन भीमकाय पात्रों में सड़न के कारण मीथेन गैस बराबर बनती रहती है। यह माँसाहार का दुःखद पहलू है। कई बार दुर्घटना के कारण ये संगृहीत दूषित पदार्थ बह निकलते हैं और नदियों में जल-प्रदूषण का बड़ा कारण बनते हैं। मोटे तौर पर यह अंदाज लगाया गया है कि मीथेन गैस के कारण ग्लोबल वार्मिंग का १७ से २० प्रतिशत योगदान है। सूअर और माँसाहार के लिए पाले गये अन्य पशु भी मीथेन गैस के उत्पादन के निमित्त हैं।

मानव जनसंख्या की वृद्धि के कारण और विकासशील देशों में बढ़ते माँसाहार के कारण ग्लोबल वार्मिंग का यह पहलू निरन्तर महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। यह बात सच है कि अमेरिका, इंग्लैण्ड, जर्मनी इत्यादि विकसित देशों में स्वास्थ्य, पर्यावरण और नैतिक मूल्यों के आधार पर शाकाहार की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत बलवती हो रही है। पूरी जानकारी के अभाव में विकासशील देशों द्वारा माँसाहार अपनाना तथा उसे स्वास्थ्य और प्रगति का सूचकांक मानना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। यथोचित जानकारी का अभाव और अज्ञान के कारण इस त्रासदी की विकटता बढ़ रही है। इकोलॉजी पर इसके दुष्परिणाम घटित हुए हैं, जो काफी चिन्ताजनक हैं।

गो-माँस के लिए पशुपालन और मीथेन गैस का उत्पादन समस्या का एक अहम पहलू है। दो देश अमेरिका और कनाडा विश्व की दो तिहाई मीथेन गैस उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार हैं। इसका मुख्य घटक गो-माँस का भक्षण है। पशुओं के लिए खाद्य पदार्थ उगाने के लिए जमीन उपलब्ध करने हेतु ट्रोपिकल वर्षावनों की कटाई हो रही है। ३२ हेक्टेयर (८० एकड़) हरित-वन प्रति मिनट की गति से काटे जा रहे हैं और गत ६० से ७० वर्षों में ट्रोपिकल वर्षावनों की कटाई के कारण सारे विश्व के लिए एक भयानक त्रासदी तीव्र गति से घटित हो रही है। इसके कारण सारी मानवता और पृथ्वी की पारिस्थितिकी (इकोलॉजी) के सभी घटक बुरी तरह से प्रभावित हो रहे हैं। इस प्रक्रिया के कारण समृद्ध ट्रोपिकल वर्षावन का क्षेत्रफल प्रारम्भिक १५०० करोड़ हेक्टेयर से काफी घट गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के फूड और एग्रीकल्चर आर्गेनाइजेशन (एफ.ए.ओ.) ने यह आकलन प्रस्तुत किया है कि प्रतिवर्ष ११४० लाख हेक्टेयर वर्षा वन काटे जाते हैं। उपग्रह तस्वीरों से इस प्रक्रिया की भयानकता और अधिक उजागर हुई है। प्रतिवर्ष वृक्षों की कटाई की गति बढ़ रही है और विश्व के अनेक देशों जैसे इंडोनेशिया, थाईलैण्ड, मलेशिया, बांग्लादेश, चीन, श्रीलंका लाओस, नाईजीरिया, लाइबेरिया, गिनी, घाना, फिलीपिन्स में ५० से ८० प्रतिशत वनों की कटाई हो चुकी है। ट्रोपिकल वर्षा वनों की कटाई के कारण लेटिन अमेरिका में ३७ प्रतिशत, एशिया में ४२ प्रतिशत और अफ्रीका में ५२ प्रतिशत वन समाप्त हो गये हैं।

वर्षा वनों के विषय में यह जानकारी आवश्यक है कि अन्य वनों की तुलना में वे भिन्न होते हैं और इन्हें 'हरा मरुस्थल' कहा जाता है। इन वनों की मृदा में पोषक तत्वों का अपेक्षाकृत अभाव होता है। कालान्तर में इन वनों का तंत्र इस तरह विकसित हुआ है कि वृक्ष और पौधे सब तरफ फैलते हैं, परन्तु इनकी जड़ें गहरी नहीं होती। अपने स्थान में ये पेड़ पौधे गिरने वाले पत्तों और अपशिष्ट उत्पादों से अपना पोषण प्राप्त करते हैं और इस तरह इनका अपना अलग तंत्र बन गया है। एक बार कटने के बाद मृदा का तेजी से हास होता है और बरसात होने पर इस वृक्ष-रहित भूमि से प्रति हेक्टेयर १८५ टन तक सतही मृदा बह जाती है। वर्षा बंद होने के बाद जब सूर्य तपता है तो यह खुली भूमि लाल रंग की लेटेरिटिक संहति में बदल जाती है। इस तरह से निर्जीव हुई मृदा में आगे चलकर कोई वनस्पति नहीं उगती। इसका अर्थ यह हुआ कि वर्षावनों की कटाई के बाद इस जटिल प्रक्रिया के फलस्वरूप

सारी जमीन बंजर हो जाती है और तपने के बाद एक मरुस्थल के समान ऊष्मा को परावर्तित करती है। स्पष्ट है इससे ग्लोबल वार्मिंग की भयानकता बढ़ती है। हरित भूमि से ऊष्मा का परावर्तन बहुत घट जाता है और अच्छे वृक्ष तो एयर कण्डीशनर की तरह शीतलन का कार्य करते हैं। पेड़ों की कटाई से इस प्रकार दुगुनी हानि होती है।

वर्षावनों की कटाई की प्रक्रिया भी अपने आप में बहुत विनाशकारी है। दृढ़ काष्ठ (हार्डवुड) की खोज में लड्डक (लागर्स) कुछ वृक्षों की कटाई करते हैं और फिर मशीन द्वारा उन्हें खींचकर वन से बाहर लाते हैं। बड़ी विचित्र स्थिति यह है कि इस तरह के दृढ़ काष्ठ के वृक्षों की संख्या जिनका व्यावसायिक महत्त्व है एक हेक्टेयर में दो या तीन से अधिक नहीं होती और निर्यात के लिये इनको खींचने और बाहर निकालने से बचे हुए वृक्षों का एक तिहाई से दो तिहाई भाग काफी हानि भुगतता है। जो वृक्ष आहत हो जाते हैं, उन्हें कई देशों में जला दिया जाता है। उदाहरण के लिए थाईलैंड और सारावाक में प्रति वर्ष १५ करोड़ डालर मूल्य की लकड़ी जलाकर नष्ट की जाती है और इस तरह काफी मात्रा में कार्बनडाइऑक्साइड गैस का उत्सर्जन होता है। ब्राजील (दक्षिण अमेरिका) में इस प्रकार लकड़ी जलाने से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन सभी विकासशील देशों का लगभग ५० प्रतिशत है।

वृक्षों की कटाई और जलने के बाद गरीब किसान परिवार इन क्षेत्रों में जीविका के लिए कुछ फसल उगाते हैं। परन्तु दुर्भाग्यवश यह केवल दो तीन बार पैदावार के लिए ही संभव होता है और बाद में कृषि का कार्य बंद कर देना पड़ता है, क्योंकि वह लाभदायक उत्पादन नहीं रहता। यह भूमि पशुपालकों को घास उगाने के लिए बेच दी जाती है और इस प्रकार अल्पकाल में ही यह वृक्षविहीन भूमि बंजर हो जाती है। मध्य अमेरिका में इस प्रकार कई लाख हेक्टेयर वन भूमि सस्ता गो माँस उपलब्ध कराने के लिए नष्ट हो गई है और यह प्रक्रिया सारे विश्व की व्यथा गाथा है।

ट्रोपिकल वर्षावन जल-प्रवाह को नियंत्रित करते हैं, जलवायु को संतुलित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और ऑक्सीजन के उत्सर्जन एवं उत्पादन में प्रभावी योगदान करते हैं। इन वनों की कटाई के कारण सारी प्रक्रियाएँ

इतनी अधिक विखंडित हो रही हैं कि जिससे सारे विश्व की जलवायु प्रचण्ड रूप से असंतुलित हो रही है। वर्षा वन सर्वाधिक पुरातन और अनेक प्रकार के आनुवंशिक संसाधनों के अनुपम भंडार हैं। इन वर्षा वनों को बचाने की वार्ता और छुटपुट प्रयत्न कई देशों में प्रारम्भ किये गये हैं। प्रभावित अधिकांश देश आर्थिक रूप से इतने दीन हीन हैं कि वनों की कटाई और विकसित देशों के लिये गोमाँस के अलावा कोई अन्य विकल्प इन्हें आकर्षित नहीं करते। वर्षावनों का विकास पृथ्वी के लिए बड़ी दुःखान्तिका बन रही है, जिसकी कल्पना मात्र भी दिल दहला देती है। पृथ्वी की इकोलॉजी बार-बार चेतावनी देकर सँभलने का संदेश दे रही है।

सोसायटी फॉर साइन्टिफिक एण्ड एथिकल लिविंग,
प्राकृत भारती अकादमी, १३ए-मेन मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

क्रोध बनाता पागल पल में

श्री अंकित जैन

१. क्रोध कषाय जिसको भी आता, ला देता भूचाल बड़ा।
शिक्षा लगती तनिक न उसको, झगड़ा करता बांह चढ़ा ॥
२. क्रोध से बचना बड़ा ही मुश्किल, बार-बार करता है घात।
क्रोधी वैर बढ़ाता सबसे, बिगाड़ लेता अपनी ही बात ॥
३. क्रोध बनाता पागल पल में, उसका करो नहीं विश्वास।
क्रोध अनल है, क्रोध काल है, क्रोध प्रीत का करे विनाश ॥
४. क्रोध कर्मों का भार बढ़ाता, दुर्गतियों का द्वार दिखाता।
क्रोध विपत्तियों को है बुलाता, विनय-विवेक को दूर भगाता ॥
५. क्रोधी जन नहीं करे विचार, किसमें हित होना है उसका।
क्रोधी होता न प्रिय किसी का, भान भूल जाता है खुद का ॥
६. क्रोध से घुलता ज़हर जीवन में, क्रोध से मानव करता क्रन्दन।
क्रोध जीवन की भयावह कल्पना, जिसमें न होता कोई अपना ॥
७. क्रोध क्षमा से जीता जाता, क्षमा सुखद है 'अंकित' जान।
क्षमा धर्म संजीवनी बूँटी, बिन प्रमाद इसको पहचान ॥

-श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर

Knowledge in Jaina Philosophy(2)

*Dr. Dharm Chand Jain**

Knowledge : in the form of pramāṇa

Jaina logicians propounded pramāṇa for uncontradictory behaviour of a person. The foremost Jaina Logician Siddhasena divākara says in his Nyāyāvatāra-

प्रमाणादिव्यवस्थेयमनादिनिधनात्मिका ।

सर्वसंव्यवहर्तृणां प्रसिद्धाऽपि प्रकीर्तिता ॥

-Nyāyāvatāra,32

[Pramāṇādi-vyavastheyamanādinidhanātmikā.

Sarvasamvyavahartṛṇām prasiddhāpi prakīrtitā]

Pramāṇa is a part of daily life. Without Pramāṇa knowing process may remain unsuccessful or invalid. Buddhist logician Dharmakīrti also says- प्रामाण्यं व्यवहारेण [Prāmāṇyam Vyavahāreṇa..] – Pramāṇa vārtika 1.7

Jaina Logicians created many works for the establishment of Jaina Logic and for refutation of other systems in this regard. They included the Knowledge and it's kinds enumerated in the Jaina canons in the concept of pramāṇa, but they gave them an empirical attitude. Due to this reason they considered the sensuous knowledge as perception and established smṛti, pratyabhijñāna and tarka as indirect (parokṣa) pramāṇa. They included kāraṇa, pūrvacara and Uttaracara hetus in the list of hetus. Someone may arise a point here that why Jaina philosophers gave place to the supersensuous Knowledge in the category of perception, a kind of Pramāṇa? Here we can say that it was essential to mention as perception because of a such practice in other Indian Systems also.

Right Knowledge and mohanīya karma

In Jaina philosophy, it is notable that the right

*[Prof. Jain has presented this paper in the National seminar organised by Asiatic society, Kolkata during 11th-12th March 2005]

knowledge leading the path of liberation is not only connected with jñānavaraṇa karman, but it also has relation with the mohaniya-karma, The righteousness of samyag - jñāna depends on the destruction or partly destruction and subsidence of mohaniya Karman. Mohaniya karman is mainly of two types - (1) darśana mohaniya and (2) cāritra mohaniya. Darśana mohaniya karman represents the deluded inner view of the person towards the life and the world. Cāritramohaniya is linked with the perverted activities of the soul, e.g. anger(krodha), proud(māna), deceit (māyā) and greed (Lobhā). Each of these are of four types, viz-Anantānubandhi, Apratyākhyānāvaraṇa, pratyākhyānāvaraṇa and sañjvalana. When the category of Anantānubandhi krodha, māna, māyā and lobha are subsidised or destructed alongwith the category of darśana mohaniya the right-view emerges in the soul and the existing perverted knowledge changes into right knowledge.

This righteousness of knowledge depends on the subsidence, subsidence-cum-destruction or destruction of some part of mohaniya karman. Another very important relation between them is manifested when the total destruction of mohaniya karman leads to complete destruction of jñānavaraṇa karman and then Kevalajñāna emerges in the soul. In this way destruction of mohaniya karman generates complete and perfect knowledge kevalajñāna.

Types of Knowledge

Five types of knowledge are found in Rāyapaseṇīya Uttarādhyayana(28.4) Sthānānga(5.3.464) Anuyogadvāra sūtra(sūtra,1), Nandisūtra(sūtra,1) and Vyākhyāprajñapti sūtra(8.2.23). Those are-

1. Ābhinibodhika jñāna/mati jñāna(sensuous knowledge)
2. Śrutajñāna(scriptural or verbal knowledge)
3. Avadhijñāna(visual intuition/clairvoyance)
4. Manaḥparyāya jñāna(intuition of mental modes)
5. kevalajñāna(pure and perfect knowledge/omni science)

These five types of knowledge are the specific contribution of Jaina wisdom to the Indian epistemological sphere. In Nandisūtra (sūtra 2) this fivefold knowledge has been divided into two kinds- (1) Pratyakṣa (direct) (2) Parokṣa (indirect). This broad division of knowledge has been accepted by Jaina logicians in the division of Pramāṇa also. The knowledge which requires the sense-organs and quasi-sense in it's manifestation, then it comes under the category of indirect (parokṣa) knowledge and the knowledge which occurs only through the soul without the help of sense organs and mind then it is called direct (pratyakṣa) knowledge- आत्ममात्रसापेक्षं प्रत्यक्षम् ।

In this respect the Jaina view is different from the other Indian systems because all other systems of Indian philosophy consider the sensuous knowledge as direct knowledge where as the early Jaina thinkers accept it as indirect knowledge. The Jaina Logicians including Jinabhadra-gaṇin (6th century A.D.), Bhaṭṭa Akalaṅka (720-780 A.D.) introduce sensuous knowledge as empirical perception. This was a latter development in the Jaina philosophy.

Matijñāna or Ābhinibodhikajñāna

Generally matijñāna or ābhinibodhika jñāna is considered as sensuous knowledge. Somewhere it occurs through sense-organs only, somewhere through sense-organ and quasi-sense, and somewhere it occurs through quasi-sense (mind) only. In Nandisūtra (sūtra 71) we find synonyms of ābhinibodhika jñāna as- īhā, apoha, vīmaṁsā, maggaṇā, gaveṣanā, saṇṇā, saī, maī and paṇṇā. These synonyms present the wide perspective of matijñāna or abhinibodhika jñāna. Thinking, reasoning, memory, intellect are also the forms of abhinibodhikajñāna. Jāti-smaraṇa jñāna (knowledge of former birth) is also included in the ābhinibodhika jñāna. Thus it is having a vast area of knowledge. Umāsvāti in Tattvārthasūtra has defined it as- तदिन्द्रियानिन्द्रिनिमित्तम् । [Tattvārthasūtra 1.14]- the

knowledge which is generated or manifested by the sense-organs and quasi-sense. He has given five synonyms of it as- 'मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम्।(Tattvārtha sūtra, 1.13). This sūtra also explains that sensuous knowledge, memory, recognition, thinking and inference all these come under the category of matijñāna or ābhinibodhika jñāna. These kinds of matijñāna were approved as the base of development of Jaina logic. Bhaṭṭa Akalanka considered. 'mati' as sensuous perception and quasi-sensuous perception. He also developed new pramāṇas i.e. smṛti pramāṇa from the word 'smṛti', pratyabhijñāna pramāṇa from 'sañjñā' word, 'tarka' pramāṇa from 'cintā' and inference pramāṇa from 'abhinibodha' word. In this way, he systematized the Jaina logic & epistemology.(for details please see “बौद्ध प्रमाण मीमांसा की जैनदृष्टि से समीक्षा” book of writer of this article)

This ābhinibodhika knowledge has been divided into two types-(1) śrutaniśrita & (2) aśrutaniśrita. Aśrutaniśrita matijñānā is divided into four kinds of buddhis-(1) autapattikī (2) vainayikī (3) karmajā and (iv) pārināmikī.

Autpattikī buddhi is a intellectual sense of striking at the right point, which was never seen, heard or otherwise known before, and leading to a successful result. Vainayikī buddhi is the intellect of finding out a right solution in a complicated matter of religion, politics and ethics. Karmajā is the intellect developed through practice in a particular work. The pārināmikī intellect is attained through inference, reasoning and other such methods, created with the age factor and helpful in mundane as well as in spiritual achievements. These four types of buddhis are found in Nandi sūtra (sūtra 48-52) and in sthānāngasūtra(4.4). This division of aśrutaniśrita is not available in Digambara tradition. In śvetāmber tradition this division is not found in Bhagavatī, Prajñāpanā, āvaśyaka niryukti and anuyogadvāra sūtra.

Śrutaniśrita matijñāna is of four kinds- (i) Avagraha

(ii) *īhā* (iii) *avāya* & (iv) *dhāraṇā*. This classification is found as the division of *matijñāna* or *ābhinibodhika jñāna* in Jaina literature. These four types of *matijñāna* are actually the four stages which occur in an order during the knowing process. This classification is of a significant value in the theory of knowledge in Indian System.

Avagraha is a general cognition of the object, *īhā* is a further step in which the knowledge is inclined towards ascertainment of the object. It is different from doubt because during the doubt, knowledge hangs towards two things while in *īhā* the knowledge is inclined towards one of them. '*Avāya*' is the ascertained knowledge of the object. *Dhāraṇā* is retention or impression of the judgement which becomes the cause of memory. In *Nandisūtra*, in the commentaries of *Tattvārtha sūtra* and in *Viśeṣaśāstrakāṇḍīya* of *Jinabhadra* a detailed account of these four stages of *matijñāna* is available. It has been discussed by the writer in an article entitled "जैन प्रमाणशास्त्रेऽवग्रहस्य स्थानम्" published in *Svādhyāya-Sikṣā*, July, 1994. The essence of that article is that between the two types of *avagraha* *vyanjanāvagraha* does not come under the category of *pramāṇa*, because it is not a determinate knowledge, but the another type i.e. *arthāvagraha* is a determinate knowledge and comes under the category of *pramāṇa*. *Bhaṭṭa Akalanka*, *Vidyānandi*, *Prabhācandra* and *Vāḍideosūri* are the logicians of this view.

Here, it will be an important note that these stages may be helpful in strengthening the learning process of human being. The things which we want to recall, the learning process should go upto the *dhāraṇā* (retention). We can not remember anything of which knowing process does not reach the stage of *dhāraṇā*. *Dhāraṇā* is the case of memory. In this way study and application of these four stages of *avagraha* *īhā*, *avāya* and *dhāraṇā* may prove fruitful in the field of educational psychology for moderating the learning process of children.

(Continue in the next issue)

सर्वैया स्तवन-त्रय

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती संत मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा निर्मित एवं मध्याह्न में धर्म-चर्चा करते हुए श्रावक समूह के समक्ष घोड़ों का चौक, जोधपुर में ३ फरवरी २००८ को उच्चरित त्रिविध सर्वैया श्री सम्पतराज जी चौधरी, दिल्ली द्वारा संकलित एवं संशोधित है। इनमें क्रमशः आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्तवृन्द के गुणों का आख्यान है।

आचार्य श्री हीराचन्द्र-स्तवन

नमूँ श्री हीराचन्द्र, शान्त-दान्त-सुखकन्द।
मोती मोहिनी के नन्द, हस्ती पट्टधारी हैं॥
ज्ञानवान गुणवन्त, जीवन के कलावन्त।
शासन है जयवन्त, छत्तीस गुणधारी हैं॥
रत्नसंघ सिणगार, धारत हैं पंचाचार।
मधुर वाणी उच्चार, जग हितकारी हैं॥
आठ सम्पदा से सोहे, सबका ही मन मोहे।
धन्य धन्य प्रभु तोहे, वन्दना हमारी है॥

उपाध्याय श्री मानचन्द्र-स्तवन

उपाध्याय गुणवान, मानमुनि जी महान।
तनिक नहीं है मान, पच्चीस गुणधारी हैं॥
सौम्यता झलक रही, ज्ञान गंगा बह रही।
विकृति प्रपंच नहीं, शांत रस धारी हैं॥
मुख पर मुस्कान, पदे व पदावे ज्ञान।
निराले होते व्याख्यान, मुग्ध नर-नारी हैं॥
आगमों का गहरा ज्ञान, बढ़ाते हस्ती की शान।
संतों में आदर्श मान, वंदना हमारी है॥

रत्न-संत-गुणगान

रत्नसंघ अणगार, गुणों का मैं कहूँ सार।
 पाल रहे शुद्धाचार, आगम विहारी है ॥
 गुरु भक्ति बेमिसाल, सेवा गुण है विशाल।
 तप संयम भी कमाल, 'महेन्द्र' शुभकारी है ॥
 शरण में आयो नाथ, सुनो अब मेरी बात।
 मुझ पर रहे हाथ, 'गौतम' आभारी है ॥
 कृपा करो भगवन्त, मैं भी बनूँ अरिहन्त।
 गुणवान सारे सन्त, गौतम उच्चारी है ॥
 तप सेवा आठों याम, 'नन्दीषेण' दियो नाम।
 भाव से है निष्काम, आतमा निखारी है ॥
 बहुश्रुत क्रियावान, संयम में वर्द्धमान।
 संघ में 'प्रमोद' शान, गुण के पुजारी है ॥
 संयम में निष्ठावान, मुगति के हैं अरमान।
 पान करे तत्त्वज्ञान, 'योगेश' गुणधारी है ॥
 लघुवय दीक्षा धार, पाया आगमों का सार।
 मनीष मुनि होनहार, गुरु आज्ञा धारी है ॥
 'बलभद्र' शुभनाम, संयम के वे हैं धाम।
 सदा शुभ परिणाम, आतमा को तारी है ॥
 देवेन्द्र हैं गुणवान, लक्ष्य में हैं सावधान।
 अंतेवासी प्रतिमान, सेवाव्रत धारी हैं ॥
 साधना का लिया पंथ, नाम जिनका यशवन्त।
 ज्ञानवान दृष्टिवन्त, साधक संस्कारी हैं ॥
 लोकचन्द्र मतिमान, प्रतिभा का नहीं मान।
 विनय सेवा की खान, ध्येय सुखकारी है ॥

उपांगों में पुण्य तत्त्व(३)

(जीवाजीवाभिगम में पुण्य)

सुश्री नेहा चोरडिया, जलगाँव

आर्यरक्षित द्वारा चार अनुयोगों का विभाजन किया गया। उसमें जीवाजीवाभिगम द्रव्यानुयोग के अन्तर्गत समाविष्ट होता है। जीव और अजीव इन दोनों द्रव्यों का अभिगम 'जीवाजीवाभिगम' है। द्रव्य में जानकारी के लिए विवेचन हुआ है, जबकि तत्त्व में साधनापरक कथन है। 'पुण्य' तत्त्वों में समाहित है, इसीलिए द्रव्यानुयोग में उसका विशेष कथन आना संभावित नहीं फिर भी गुरुकृपा से किंचित् अन्वेषण करते हैं। सुत्तागमे के प्रारम्भ में इस आगम का प्रारम्भ करते ही आया-

णमो उसभाइयाणं चउवीसाए तित्थयराणं, इह खलु जिणमयं
जिणाणुमयं जिणाणुलोमं जिणप्पणीयं जिणपरुवियं जिणक्खायं जिणाणुचिणं
जिणपणत्तं जिणदेसियं जिणपसत्थं अणुव्वीइयं तं सइहमाणा तं
पत्तियमाणा तं रोएमाणा थेरा भगवंतो जीवाजीवाभिगमं णामज्झयणं
पणवइंसु।

ऋषभ आदि २४ तीर्थकरों को नमस्कार। इस मनुष्य लोक में अथवा जिन प्रवचन में जिनमत-तीर्थकर भगवान् के सिद्धान्त रूप द्वादशांग गणिपिटक का जो जिनानुमत अन्य सब तीर्थकरों द्वारा अनुमत है, जिनानुलोम-जिनों के लिए अनुकूल है, जिन प्रणीत है, जिन प्ररूपित है, जिनाख्यात है, जिनानुचीर्ण है, जिनप्रज्ञप्त है, जिन प्रशस्त है, पर्यालोचन कर उस पर श्रद्धा करते हुए, उस पर प्रतीति करते हुए, उस पर रुचि रखते हुए स्थविर भगवंतों ने जीवाजीवाभिगम नामक अध्ययन प्ररूपित किया है।

प्रारम्भ ही 'णमो' से हुआ है। जहाँ भी नमस्कार है वहाँ पुण्य की नियमा है। वह नमस्कार पुण्य है। पहले गुणस्थान में गुणीजनों के प्रति श्रद्धा पूर्वक प्रणति पुण्य है-

इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वइहमाणस्स
संसार-सागरं तारेइ, नरं वा नारिं वा।

संसार सागर से तिराने वाला है नवकार । चौदह पूर्व का सार है नवकार ।
पाप प्रणाशक है नवकार । पुण्य वर्धापक है नवकार ।

यह भक्ति, विनय, नमस्कार जो सभी गुणों का मूल है, जीव को आगे बढ़ाने वाला है । समकित सहित पुण्य के साथ विनय तप होता है, निर्जरा बढ़ती है तथा उत्कृष्ट पुण्य होता है ।

तीसरी प्रतिपत्ति का तिर्यंच योनिक दूसरे उद्देशक के अन्त में क्रिया संबंधी सूत्र आया है-

अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेति एवं परूवेति एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेइ तं जहा-सम्मत्तकिरियं च मिच्छत्तकिरियं च, जं समयं सम्मत्तकिरियं पकरेइ तं समयं मिच्छत्तकिरियं पकरेइ, जं समयं मिच्छत्तकिरियं पकरेइ तं समयं सम्मत्तकिरियं पकरेइ, सम्मत्तकिरियापकरणयाए मिच्छत्तकिरियं पकरेइ मिच्छत्तकिरियापकरणयाए सम्मत्तकिरियं पकरेइ, तं जहा-सम्मत्तकिरियं च मिच्छत्तकिरियं च, से कहमेयं भंते! एवं?

गोयमा! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेति एवं परूवेति एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेइ तहेव जाव सम्मत्तकिरियं च मिच्छत्तकिरियं च, जे ते एवमाहंसु तं णं मिच्छा, अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि-एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं किरियं पकरेइ, तं जहा-सम्मत्तकिरियं वा मिच्छत्तकिरियं वा, जं समयं सम्मत्तकिरियं पकरेइ णो तं समयं मिच्छत्तकिरियं पकरेइ, तं चेव जं समयं मिच्छत्तकिरियं पकरेइ, णो तं समयं सम्मत्तकिरियं पकरेइ, सम्मत्तकिरियापकरणयाए णो मिच्छत्तकिरियं पकरेइ मिच्छत्तकिरियापकरणयाए णो सम्मत्तकिरियं पकरेइ, एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं किरियं पकरेइ, तं जहा-सम्मत्तकिरियं वा मिच्छत्तकिरियं वा ।

अर्थ- हे भगवन्! अन्यतीर्थिक इस प्रकार कहते हैं, इस प्रकार बोलते हैं, इस प्रकार प्रज्ञापना करते हैं, इस प्रकार प्ररूपणा करते हैं कि “एक जीव एक समय में दो क्रियाएँ करता है, यथा-सम्यक् क्रिया और मिथ्या क्रिया । जिस समय सम्यक् क्रिया करता है उसी समय मिथ्या क्रिया भी करता है और जिस समय मिथ्या क्रिया करता है उस समय सम्यक् क्रिया भी करता है । सम्यक् क्रिया करते हुए मिथ्या क्रिया

भी करता है और मिथ्या क्रिया करते हुए सम्यक् क्रिया भी करता है। इस प्रकार एक जीव एक समय में दो क्रियाएँ करता है, यथा-सम्यक् क्रिया और मिथ्या क्रिया।

प्रश्न- हे भगवन्! उनका यह कथन कैसा है?

उत्तर- हे गौतम! अन्यतीर्थिक जो ऐसा कहते हैं, ऐसा बोलते हैं, ऐसी प्रज्ञापना करते हैं, और ऐसी प्ररूपणा करते हैं कि एक जीव एक समय में दो क्रियाएँ करता है, यथा-सम्यक् क्रिया और मिथ्या क्रिया। जो अन्यतीर्थिक ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कथन करते हैं।

हे गौतम! मैं ऐसा कहता हूँ यावत् प्ररूपणा करता हूँ कि एक जीव एक समय में एक ही क्रिया करता है यथा-सम्यक् क्रिया अथवा मिथ्या क्रिया। जिस समय सम्यक् क्रिया करता है उस समय मिथ्या क्रिया नहीं करता और जिस समय मिथ्या क्रिया करता है उस समय सम्यक् क्रिया नहीं करता। इस प्रकार एक जीव एक समय में एक ही क्रिया करता है। वह इस प्रकार है- सम्यक् क्रिया और मिथ्या क्रिया।

सुन्दर अध्यवसाय वाली क्रिया सम्यक् क्रिया कहलाती है और असुन्दर अध्यवसाय वाली क्रिया मिथ्या क्रिया है। इसमें स्पष्ट कहा- हे गौतम! एक जीव एक समय में एक ही क्रिया करता है- सम्यक् क्रिया या मिथ्या क्रिया, तो जब मिथ्या क्रिया हेय ही है तो सम्यक् क्रिया उपादेय द्योतित होती है। एक क्रिया अशुभ है तो एक क्रिया शुभ है। इसे शुभ-अशुभ कह दिया, क्योंकि क्रिया में योग अनिवार्य है।

जीव जब भी सम्यक् क्रिया करता है तो पुण्य तत्त्व के ९ भेदों में से मन पुण्य, वचन पुण्य, काय पुण्य होगा।

इस तरह जीवाजीवाभिगम सूत्र क्रिया के रूप से असम्यक्, असुन्दर मिथ्यात्व की क्रिया से बचने और सम्यक्, सुन्दर, सही क्रिया कर अक्रिय होने को ध्वनित कर रहा है। सही करके पूर्व में दुष्कृत के प्रभाव को समाप्त कर जीव अक्रिय होने की स्थिति को उपलब्ध हो सकता है। पाप नाश करके पुण्य, संवर, निर्जरा जीव को मोक्ष प्राप्त कराते हैं। संयम और तप मोक्ष प्राप्ति के प्रधान साधन हैं- उन प्रधान साधन की योग्यता दिलाने वाला, प्रधान साधनों का सहायक पुण्य तत्त्व है, अतः उपादेय है।

(३) इस सूत्र की तृतीय प्रतिपत्ति में कर्मभूमि, अकर्मभूमि, अन्तरद्वीप मनुष्यों का

बहुत ही विस्तार से वर्णन किया गया है। क्या सूचित करता है वह वर्णन? कितना नैसर्गिक, सहज, स्वाभाविक सौंदर्य था उन एकोरुक द्वीप के मनुष्यों का। आज तो सौन्दर्य के लिए न जाने कितने साधनों का उपयोग कर सौन्दर्य बढ़ाने का प्रयत्न चल रहा है। ब्यूटी पार्लर (Beauty parlour) में जाकर कृत्रिम रूप से सौन्दर्य बढ़ाने का प्रयास चल रहा है। सौन्दर्य की प्रतिस्पर्धाएँ आयोजित हो रही हैं। पर वहाँ नैसर्गिक सौन्दर्य था। जिन-जिन ने मिथ्यात्व में भी कुछ पुण्य विशेष किया वे युगलिक अनुपम, सौम्य और सुन्दर रूप वाले हैं।

मिथ्यात्व खराब ही है, पर पुण्य ही उससे छूटने में, उससे लड़ने में जीव का पुरुषार्थ कराने में सक्षम है। जिस आत्मभाव के प्रभाव से संचित होता है, उसी आत्मा को बाहर की साधन-सामग्री मनुष्य जन्म, आर्यक्षेत्र आदि उपलब्ध कराता है।

हम कैसे समुद्र तटों पर बिना खतरे रह जाते हैं। पुण्य के प्रभाव से लवण समुद्र जम्बूद्वीप को जलमग्न नहीं करता। जैसा कि उसी तीसरी प्रतिपत्ति मंदरोद्देशक के अन्त में कहा-

अरिहंत चक्कवहि बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा सम्मणा
सम्मणीओ सावया सावियाओ मणुया पगइभट्टया पगइविणीया पगइउवसंता
पगइपयणुकोहमाणमायालोभा मिउमट्टवसंपण्णा अल्लीणा भट्टगा विणीया,
तेस्सि णं पणिहाए लवणे समुट्टे जंबुद्वीवं दीवं णो उवीलेइ णो उप्पीलेइ णो चेव णं
एगोदगं करेइ।

लवण समुद्र, जंबूद्वीप को जलमग्न क्यों नहीं करता? समाधान में आया है जंबूद्वीप नामक द्वीप में भरत, ऐरवत क्षेत्रों में अरिहन्त (तीर्थंकर), चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, जंघाचारण आदि विद्याधर मुनि, श्रमण, श्रमणियाँ, श्रावक और श्राविकाएँ हैं। वहाँ के मनुष्य प्रकृति से भद्र, प्रकृति से विनीत, उपशांत, प्रकृति से क्रोध, मान, माया, लोभ को मंद करने वाले, मृदु, मार्दव संपन्न, आलीन, भद्र और विनीत हैं, उनके प्रभाव से लवण समुद्र जंबूद्वीप को जलमग्न नहीं करता है।

यह पुण्यवानों का प्रभाव है कि लवणसमुद्र जंबूद्वीप को जलमग्न नहीं करता है।

इस सूत्र में सीधा पुण्य नाम उपलब्ध नहीं है। फिर भी यह तीसरा उपांग पुण्य की उपादेयता ध्वनित करता है।

Life is Coffee

A group of alumni, highly established in their careers, got together to visit their old university professor.

Conversation soon turned into complaints about stress in work and life.

Offering his guests coffee, the professor went to the kitchen and returned with a large pot of coffee and an assortment of cups porcelain, plastic, glass, crystal, some plain looking, some expensive, some exquisite- telling them to help themselves to hot coffee.

When all the students had a cup of coffee in hand, the professor said: "If you noticed, all the nice looking expensive cups were taken up, leaving behind the plain and cheap ones. While it is but normal for you to want only the best for yourselves, that is the source of your problems and stress. What all of you really wanted was coffee, not the cup, but you consciously went for the best cups and were eyeing each other's cups.

Now if life is coffee, then the jobs, moeny and position in society are the cups. They are just tools to hold and contain Life, but the quality of life doesn't change. Some times, by concentrating only on the cup, we fail to enjoy the coffee in it."

Don't let the cups drive you....Enjoy the coffee instead.

Some great authors says-

Joy is not in things; it is in us.

- Richard Wagner, German composer

When a man finds no peace within himself, it is useless to seek it elsewhere.

Collected by : Sanjay Srisrimal Jain (Hubli)

उपासकदशांग सूत्र से पायें तार्त्विक बोध (१०)

प्रश्न १६ के उत्तर का शेषांश (अप्रैल २००८ के अंक से क्रमशः) :-

१२ से १९ तक के बोलों में भोजन के पूर्व श्रावक खाद्य-पदार्थों की मर्यादा करता है। फिर भोजन के पश्चात् पानी पीया जाता है, अतः 'पाणियविहि' की मर्यादा करता है। भोजन-पानी के पश्चात् मुख-शोधन किया जाता है, अतः 'मुखवास' की मर्यादा करता है। खाने-पीने के पश्चात् वह व्यापार/व्यवसाय के लिए अपने घर से बाहर निकलता है। बाहर जाने से पूर्व वाहन एवं उपानह(जूतों) की मर्यादा करता है। व्यापार से निवृत्त होने के पश्चात् थके शरीर को आराम देने के लिए सोता है, अतः सोने के पूर्व शयन की मर्यादा करता है। सोने के पूर्व वह दिवस भर में लगे सचित्त पदार्थ एवं समस्त द्रव्यों का चिंतन करता है-अतः अंतिम दो बोल चिन्तन-परक हैं। सामान्यतया साधक की इसी तरह की दिवस चर्या होती है।

प्रश्न १७-तीन-करण, तीन-योग से त्याग होने पर भी संलेखना-संधारा किये हुए श्रमणोपासक को श्रमण क्यों नहीं कहा जाता?

उत्तर- (१) अन्तिम समय में संधारा-संलेखना करने वाले सद्गृहस्थ को उपासकदशांग में श्रमणोपासक ही कहा है।

(२) श्री समवायांग सूत्र के १७ वें समवाय में मरण के १७ प्रकार आये हैं, उनमें ९वाँ पण्डित मरण संयमी के लिए है और १० वाँ बाल-पण्डितमरण देशविरति संयमी अर्थात् श्रावक-श्राविका के लिए है। यदि संलेखना-संधारा किया हुआ श्रमणोपासक भाव के द्वारा श्रमण हो जाता है तो दोनों के अलग-अलग मरण भेद नहीं होते।

(३) श्रावक के ३ मनोरथ बताये गये हैं, जिनमें वह मारणांतिक संलेखना की आराधना की भावना भाता है। दूसरा मनोरथ धारण करने में समर्थ न भी हो तो भी तीसरा मनोरथ स्वीकार कर सकते हैं- यदि दूसरे मनोरथ से महाव्रत अंगीकार करके फिर संधारा करे तब तो श्रमण होगा अन्यथा नहीं। संधारा करने के पश्चात् भी वह दीक्षा ले सकता है। संधारा देश

उत्तरगुण पचक्खाण है, दीक्षा मूलगुण पचक्खाण है।

(४) श्रावक ३ करण ३ योग से पाप का त्याग संधारा ग्रहण करने के पूर्व भी करता है। भगवती सूत्र, शतक ८, उद्देशक ५ में श्रावक के ४९ भंग बताये गये हैं। वह शक्ति हो तो ३ करण ३ योग से भी संवर-आराधना कर सकता है, पर रहेगा श्रावक ही। जब १८ पापों का त्याग करके महाव्रतों में आरूढ होते हैं, तभी श्रमण कहलाते हैं, जबकि श्रावक पाप का त्याग तो करते हैं, पर महाव्रत ग्रहण नहीं करते।

(५) कर्म-सिद्धान्त एवं तत्त्व दृष्टि से अंतरंग में प्रत्याख्यानारणीय कषाय के उदय तथा बंधस्थान पर सूक्ष्म ममत्व से परिगाहिया की क्रिया आदि चालू रहने से वह श्रमणोपासक है, श्रमण नहीं। इसी प्रकार पाँचवें गुणस्थान से सम्बन्धित बोल यथा धर्माधर्मी, सुप्त जाग्रत आदि से युक्त होने एवं श्रमणोचित कल्प का पालन नहीं करने से वह श्रमण नहीं है।

प्रश्न ७ - बारह व्रत ग्रहण कराते समय प्रमुख किन-किन बातों का विवेक करवाना आवश्यक है?

उत्तर - उपासकदशांग के प्रथम अध्ययन में भगवान् ने व्रतों का स्वरूप समझाने के पूर्व जो धर्मोपदेश दिया था, वह उपदेश व्रत-ग्रहण के पूर्व जानना आवश्यक है। भगवान् ने (१) लोक का अस्तित्व (२) निर्ग्रन्थ प्रवचन का महत्त्व (३) नरक, तिर्यच, मनुष्य, देवयोनि में उत्पत्ति के चार कारण (४) सिद्ध, सिद्धावस्था एवं छः जीवनिकाय का विवेचन करने के पश्चात् दो प्रकार का धर्म बतलाकर व्रतों का विस्तृत उपदेश दिया है।

व्रत-ग्रहण करवाने के पूर्व श्रावक को निम्न बातों की जानकारी आवश्यक है:- (१) श्रावक का स्वरूप, (२) मार्गानुसारी के ३५ गुण एवं (३) श्रावक के २१ गुण।

व्रती बनने से पूर्व सम्यक्त्व का स्वरूप जानना आवश्यक है। सम्यक्त्व के अंतर्गत निम्नाङ्कित बिंदु सम्मिलित होते हैं:- (१) सुदेव, सुगुरु, सुधर्म का स्वरूप, (२) सम्यक्त्व का महत्त्व, (३) सम्यक्त्व के लक्षण, दूषण, आगार आदि की जानकारी। व्रत ग्रहण के पूर्व निम्नांकित की प्रतिज्ञा भी

आवश्यक है :- (१) अन्यतीर्थी देव को देव बुद्धि से वन्दन नमस्कार नहीं करना (२) सुसाधु-सुसाध्वी के अतिरिक्त अन्य को गुरु बुद्धि से वंदन-नमस्कार नहीं करना, गुरु बुद्धि से दान नहीं देना, (३) केवलिभाषित दयामय धर्म को ही धर्म-मानना ।

व्रतों का दृढ़ता पूर्वक पालन करने हेतु व्रत को दूषित करने वाली चार कोटियों को जानना आवश्यक है-अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार । इसके पश्चात् व्रत विषयक इन बातों का विवेक यथा व्रत ग्रहण कराते समय, व्रत क्या है? उसका स्वरूप एवं जीवन में उसकी आवश्यकता क्या है? इस बात का विवेक भी कराना चाहिए । (२) व्रत-ग्रहणार्थी को आदर्श श्रमणोपासक का जीवन-चरित्र, उनकी धर्म-दृढ़ता, कष्ट सहिष्णुता, अटूट-आस्था, स्वीकृत व्रतों के प्रति सजगता का कथन कर उसे भी महापुरुषों का अनुकरण करने के लिए प्रेरित करना चाहिए, ताकि परीक्षा की घड़ियों में भी वह साधक अपनी दृढ़ता को डिगा न पाए, अपितु महापुरुषों के जीवन का स्मरण कर स्वीकृत व्रतों के प्रति और भी अधिक सजग बन जाय । (३) व्रत-ग्रहण कराते समय उस व्रत का आध्यात्मिक फल बताने रूप विवेक अवश्य रखना चाहिए, ताकि भौतिक प्रलोभनों में फँसकर, साधक निदान द्वारा अपने व्रतों को दूषित न कर बैठे । (४) स्वीकृत व्रतों को पक्खी-पक्खी, अथवा महीने में एक बार पढ़ने का विवेक अवश्य करा देना चाहिए । अन्यथा अनुपयोग से कभी उस दोष का सेवन हो जाने पर भी दोष लगता है, यह ध्यान में ही नहीं आता, फलतः व्रत-शुद्धि के अभाव में साधक विराधक बन जाता है । अतः आराधकता के लिए जाग्रति परम आवश्यक है । (५) व्रत ग्रहण कराते समय यह विवेक अवश्य रखना चाहिए कि ग्रहणार्थी क्रोध, मान, माया, लोभ के आवेश में आकर तो व्रत ग्रहण नहीं कर रहा है, क्योंकि अज्ञान/आवेश में ग्रहण किया गया व्रत सुव्रत नहीं होता, अपितु वह व्रत अप्रशस्त है-(भगवती सूत्र में अज्ञान-त्याग को दुष्ट्याग कहा है ।)

मूल्यांकन क्षण का

गणाधिपति तुलसी

वर्तमान अतीत का ऋणी होता है और भविष्य की संभावनाओं का आधार होता है। जो मनुष्य वर्तमान से जुड़कर जीता है, उसके अनुभव समृद्ध होते हैं। भविष्य के सपने उसे कुछ नया सोचने और नया करने की प्रेरणा देते हैं। यह सब उसी के जीवन में घटित हो सकता है जो अपने वर्तमान के प्रति जागरूक रहता है। प्राप्त क्षण का सही उपयोग करने वाला व्यक्ति ही महान् बन सकता है। भगवान् महावीर ने एक सूत्र दिया- 'खणं ज्ञाणाहि'- क्षण का मूल्य आंको। समय की पहचान करना और सही समय पर सही काम करना जीवन की विशिष्ट कला है।

दिन रात के चौबीस घंटे होते हैं। संसार के किसी भी व्यक्ति को इससे अधिक समय नहीं मिलता। इंजीनियर, वैज्ञानिक, कलाकार, समाजसेवी, व्यवसायी आदि कोई भी व्यक्ति हो, सफलता के शिखर पर आरोहण करने वाला इन्हीं चौबीस घंटों का उपयोग करता है। सच तो यह है कि कमी समय की नहीं, उसके सम्यक् नियोजन की है। जो लोग एक साथ अनेक काम शुरू कर देते हैं और किसी एक भी काम पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते, वे सफल कैसे हो सकते हैं? काम करने का भी तरीका होता है। अव्यवस्थित चित्त और अव्यवस्थित कार्यपद्धति समय अधिक लेती है, परिणाम कम लाती है।

यन्त्रयुग के मानव की जीवन-रफ्तार बहुत शीघ्रगामी है। वह वर्षों का काम महीनों, महीनों का काम दिनों, दिनों का काम घंटों और घंटों का काम कुछ सैकंडों में समेट लेता है। तकनीक और वैज्ञानिक उपकरणों का भरपूर विकास एवं उपयोग होने पर भी मनुष्य की भागदौड़ कम नहीं हुई है। न उसके पास खाने-पीने का निश्चित समय है और न सोने का समय है। समय का सम्यक् नियोजन नहीं हो पाने के कारण ही वह तनावों में जीता है। तनाव इस युग की अहम समस्या है। इस समस्या का समाधान पाने के लिए मनुष्य को वर्तमान में जीने का अभ्यास करना होगा और क्षण का मूल्यांकन करना होगा।

- 'बैसाखियां विश्वास की' पुस्तक से साभार



अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का युवक संगठन)

अध्यक्षीय कार्यालय : पुराना खण्डार रोड, सवाईमाधोपुर ३२२०२१ (राज.)

फोन : ०७४६२-२३३५५०, २३३१४० मोबाइल : ९४६०४ ४१५७०

अध्यक्ष

कुशलचन्द जैन गोटेवाला

दिनांक : २६.०४.२००८

स्नेही युवार्त्न बन्धुओं,

सादर जय जिनेन्द्र ।

परमादरणीय राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोधरा के जिनवाणी मार्च अंक में प्रकाशित अनुरोध पत्र एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष परमादरणीय श्री पी.एस. सुराणा सा. के जिनवाणी के अप्रैल अंक में प्रकाशित धोवन(अचित) पानी के निरन्तर प्रयोग के प्रति मेरा दृष्टय से पूर्ण, आदर भाव, श्रद्धा भाव एवं आचरण सहित दृढ़ संकल्प है। (मेरे द्वारा धोवन का प्रयोग लगभग विगत २० माह से किया जा रहा है।)

सुह्र बन्धुओं, चतुर्विधसंघ की आराधना में सहायक, जीव रक्षण हेतु उपयोगी, जैनाचार के शुद्ध पालन में अहम भूमिका प्रदान करने हेतु तथा तन, मन, जीवन एवं घर को विशुद्ध तथा पावन बनाने में सहायक धोवन पानी को अपनायें। धोवन ही पिछे और पिलाएँ, अपना जीवन निर्दोष बनाएँ। धोवन पानी के सेवन से हमें निम्नलिखित लाभ सहज ही प्राप्त होंगे।

१. कच्चे पानी में जीवों का चय उपचय (जन्म मरण) निरन्तर होता रहा है, परन्तु धोवन में जब तक वह अचित है, उसमें जीवों का चय उपचय नहीं होता है।
२. धोवन पानी के प्रयोग से तप होगा, साथ ही रसनेन्द्रिय विजय का लाभ भी होगा।
३. धोवन पानी सेवन से अचित परित्याग एवं काया क्लेश इन दो प्रकार के तपों का सहज लाभ मिलता है।
४. आहार की अपेक्षा भी निर्दोष धोवन के दान में, विशेष कर्म-निर्जरा होती है।
५. वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी अचित जल के सेवन से उत्तम स्वास्थ्य की बात सिद्ध करता है।

धोवन पानी का प्रयोग प्रत्येक जैन परिवार में हो, इस हेतु अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा "राष्ट्रीय अभियान-धोवन पानी निर्दोष जिन्दगानी" के माध्यम से विशेष प्रयास आरम्भ किया गया है। इस अभियान में सभी धर्मानुरागियों को धोवन(अचित) पानी पीने का संकल्प, संकल्प पत्रों के माध्यम से करवाने का लक्ष्य है। इस महान् लक्ष्य में आप सभी अपना सकारात्मक सक्रिय सहयोग प्रदान कर चतुर्विध संघ की आराधना एवं संघ उन्नयन में सहयोगी बनकर पुण्यार्जन करावें।

आपके सुख, सुदीर्घ समुज्ज्वल भविष्य की शुभ कामनाओं के साथ...

सहयोगाकांक्षी

(कुशलचन्द जैन गोटेवाला)

ब्रह्मचर्य का प्रभाव

डॉ. दिलीप धींग

मेवाड़ आरम्भ से ही जैन धर्म गतिविधियों का केन्द्र रहा है। हर समय यहाँ जैन साधु-साध्वियों का विचरण होता रहा है और सभी वर्ग के व्यक्तियों में जैन सन्तों के प्रति श्रद्धाभाव रहा है। जैन दिवाकर चौथमलजी के काल में जन सामान्य के मन में मुँहपत्ती वाले सन्तों के प्रति आस्था बढ़ गई थी।

महाराणा फतहसिंह के शासनकाल की बात है। मुनि मयाराम उस समय उदयपुर में प्रवास कर रहे थे। प्रतिदिन जिस मार्ग से मुनि का आवागमन होता था, उस मार्ग में फतहसिंह का राजोद्यान था। उसी मार्ग पर उद्यान की रखवाली करने वाले माली का घर भी था। जब भी कोई जैन मुनि उधर से गुजरते तो वह माली उन्हें श्रद्धापूर्वक वन्दन नमस्कार करता था। मुनि मयाराम भी आवश्यक कार्यों से उद्यान मार्ग पर आते जाते थे। वह माली उन्हें भी रोज वन्दन नमस्कार करता था।

एक दिन वह माली बहुत उदास बैठा था। मुनि मयाराम उधर से जा रहे थे। माली ने मुनि को नमन किया। मुनि से माली की उदासी छिप नहीं पाई।

परदुःखकातर मुनि ने माली को पूछा- “क्यों भाई! आज कुछ चिन्तित दिखाई पड़ रहे हो। क्या हो गया?”

माली ने मुनि से उसकी चिन्ता का कारण बताते हुए कहा- “पूज्य महाराज जी! राणाजी के उद्यान में अनेक आम्रवृक्ष हैं। कई आम के पेड़ मैंने और मेरी घरवाली ने लगाए हैं और कई पेड़ मेरे माता-पिता ने लगाए थे। मैं मेरे बच्चों की भाँति उनकी देखभाल करता हूँ। इन आम के वृक्षों में सब वृक्षों पर आम लगते हैं, किन्तु एक वृक्ष पर आम नहीं लगते हैं। राणाजी जब बाग में घूमने आए तब उस फलरहित पेड़ पर उनकी नजर पड़ गई। राणाजी ने मुझसे पूछा- ‘इस पेड़ पर आम क्यों नहीं लगे?’ मैंने बताया कि क्या पता किस कारण से इस पेड़ पर कभी आम लगे ही नहीं। यह सुनकर राणाजी ने आदेश

दिया कि ऐसे वृक्ष को काटकर फेंक दिया जाए। राणाजी का यह आदेश ही मेरी चिन्ता और उदासी का कारण है।”

अपनी बात आगे बढ़ाते हुए माली ने कहा- “महाराज! अब आप ही बताइये कि मैं क्या करूँ ? मैंने बगीचे के एक-एक पेड़ को बच्चों की तरह सींच-सींच कर बढ़ा किया है। भला, मैं उस विशाल छायादार पेड़ को काटकर कैसे फेंक दूँ? आप जैसे सन्तों के उपदेशों में सुना है कि हरे-भरे वृक्ष नहीं काटने चाहिये।”

मुनि मयाराम ने माली के मन की व्यथा को जाना और महसूस किया। मुनि आगम ग्रन्थों के गहरे जानकार थे। उन्होंने पल-दो-पल विचार किया और बोले- “मेरी एक बात मानो तो अफलित पेड़ भी फल सकता है। जिस वृक्ष पर अब तक आम नहीं लगे, उस पर आम लग सकते हैं।”

जैसा कि बताया गया, उस माली को जैन मुनियों के प्रति बहुत भरोसा था। उसे लगा कि मुनि मयाराम उसकी समस्या का समाधान कर देंगे। मन ही मन आश्वस्त होकर उसने मुनि से उपाय पूछा।

मुनि ने बताया- “तुम्हें और तुम्हारी पत्नी को छह माह के लिए ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण करना होगा और व्रत का निष्ठापूर्वक पालन करते हुए छह माह तक उस आम्र वृक्ष के नीचे सोना होगा।” यह सुनकर माली प्रसन्न हो गया। पेड़ की रक्षा के लिए वह कुछ भी करने के लिए सहर्ष तैयार था।

माली हाथ जोड़कर बोला- “इसी वक्त मुझे ब्रह्मचर्य व्रत का संकल्प करवा दीजिये। मेरी चाह है कि आम फलने लग जाएँ।” तत्काल उसने उसकी पत्नी को बुलाया और दोनों ने प्रसन्नतापूर्वक मुनि मयाराम से ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। उन्हें पूरा विश्वास था कि मुनि के वचन फलेंगे और आम भी फलेगा। छह माह तक उन्होंने व्रत का अनुपालन किया। बसंत ऋतु आने के साथ ही उस आम पर भी मंजरियाँ फूट पड़ीं। उस आम पर मंजरियाँ देख माली दम्पती की खुशी का पारावार नहीं रहा।

प्रफुल्लित होकर माली महाराणा फतहसिंह के पास गया और बोला- “अन्नदाता! उस आम के पेड़ पर भी बहुत सुन्दर मंजरियाँ आ गई हैं।”

“यह कैसे सम्भव हुआ? उस दूँठ पर मंजरियाँ कैसे आ गई ?”

आश्चर्य से राणाजी ने पूछा ।

“जैन मुनि मयाराम की कृपा है । उन्होंने उपाय बताया । हमने उनके बताए उपाय के अनुसार जीवन जिया । फल हमारे सामने हैं ।” यह कहते हुए माली ने सारी कहानी राणाजी को बता दी ।

इस घटना से महाराणा फतहसिंह और प्रजाजनों का धर्म के प्रति विश्वास बढ़ गया । शास्त्रों में ब्रह्मचर्य की बड़ी महिमा गाई गई है । प्राणी जगत् और वनस्पति जगत् पर भी उसका अच्छा प्रभाव पड़ता है । इस घटना के माध्यम से उसका प्रत्यक्ष सुपरिणाम सबने देखा । कहते हैं उस आम के पेड़ पर लगने वाले आम अधिक मधुर और रोगनाशक होते थे । सच ही कहा है कि त्याग का फल हमेशा मीठा होता है ।

इस घटना से प्रभावित होकर महाराणा फतहसिंह की ओर से मुनि को एक बार और उदयपुर पधारने की विनति की गई । बाद में हरियाणा से विचरण करते हुए मुनि मयाराम पुनः उदयपुर पधारे थे । तब महाराणा और अन्य राव, उमराव और जागीदारों ने मुनि से अहिंसा और संयम से सम्बन्धित व्रत-नियम ग्रहण किये थे ।

-५३-बी, डोरे नगर, उदयपुर-३१३००२

जिनवाणी पर अभिमत

जिनवाणी नियमित प्राप्त हो रही है । मनुष्य की नियमितता से भी अधिक जिनवाणी नियमित तथा स्वस्थ जीवन जीने की सदाबहार स्रोतस्विनी बनी हुई है । आचार्यप्रवर हस्तीमल जी म.सा. ने इसकी जो सुचिंतना बांधी थी, उसका पूर्णतः निर्वाह आप बड़े ही उदात्त पुरुषार्थ तथा वैचारिक दांयित्व से कर रहे हैं, यह सुखद संयोग है ।

जैन दर्शन, चिंतन और उससे जुड़े जीवन संस्कृतिपरक धार्मिकता के विविध आयामों के गहन अध्ययन तथा गरिमापूर्ण संधान दृष्टि से भी यह पत्रिका बहु उपयोगी है ।

-डॉ. महेन्द्र भानावत, उदयपुर

आत्म-दोष

श्री पी.एम. चोरडिया

प्रश्न:- दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर:- जो दूषित करे वह दोष है। दोष शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, सामाजिक आदि विभिन्न स्तरों पर हो सकते हैं। आत्मिक दोष प्रायः अज्ञानावस्था में मिथ्यात्व एवं प्रमाद के कारण होते रहते हैं।

प्रश्न:- आत्मिक दोषों को दूर करने का क्या उपाय है ?

उत्तर:- दोषों को देखो, विचार करो और प्रभु या गुरु की साक्षी से आलोचना एवं प्रायश्चित्त करो।

प्रश्न:- अन्यस्थाने कृतं पापं, धर्मस्थाने विमुच्यते।

धर्मस्थाने कृतं पापं, वज्रलेपो भविष्यति ॥

उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थ कीजिए।

उत्तर:- अन्य स्थान में किया हुआ पाप धर्मस्थान का सम्पर्क साधने से धुल जाता है, लेकिन धर्म स्थान में किया गया पाप वज्रलेप हो जाता है। अर्थात् उससे छुटकारा कठिन है।

प्रश्न:- न तं अरी कंठेत्ता करेद्द।

जं से करे अप्पणिया वुरप्पा ॥

इन पंक्तियों में क्या कहा गया है?

उत्तर:- सिर काटने वाला शत्रु भी उतना अपकार नहीं करता जितना कि दुराचार में आसक्त आत्मा स्वयं अपना अपकार करता है।

प्रश्न:- 'सुदस्सं वज्जमज्जेसं, अत्तनो पन् दुद्दसं'-धम्मपद १८/१८।
इसका अर्थ बताइये।

उत्तर:- दूसरों के दोष देखना आसान है, अपने दोष देख पाना कठिन है।

प्रश्न:- "जरा रूप को, आशा धैर्य को, मृत्यु प्राणों को, ईर्ष्या धर्मचर्या को, क्रोध लक्ष्मी को, अनार्य सेवा शील को एवं काम लज्जा को नष्ट करता है,

लेकिन अभिमान सर्वगुणों को नष्ट करने वाला है।” उपर्युक्त विचार कहाँ प्रस्तुत हुए हैं?

उत्तर:— विदुर नीति ३/५०

प्रश्न:— “परिणाम को नहीं जानता हुआ पतंगा दीपक की तीव्र अग्नि में गिरता है। मछली भी अज्ञानवश काँट सहित मांस को निगल जाती है। लेकिन हम काम-भोगों को दुःखदायी जानते हुए भी नहीं छोड़ पाते। अहो! मोह की महिमा कितनी गहन है।” उपर्युक्त प्रेरणादायी सन्देश किस पुस्तक से लिया गया है?

उत्तर:— भर्तृहरि - वैराग्य शतक, श्लोक २१ के आधार पर।

प्रश्न:— असत्य और मायाचार का निकट का सम्बन्ध किस प्रकार है?

उत्तर:— जो मायावी होता है, वह असत्यभाषी अवश्य होगा। सत्य में कोई छिपाव नहीं होता। असत्य भाषी को बहुत कुछ छिपाना पड़ता है। उसे एक बड़ा सा मायाजाल बिछाना पड़ता है। इसलिये भगवान् महावीर ने असत्य के लिए बार-बार ‘माया मृषा’ शब्द का प्रयोग किया।

प्रश्न:— अस्तेय व्रत में क्या सावधानी रखनी पड़ती है?

उत्तर:— अस्तेय व्रत में निष्ठा रखने वाला व्यक्ति बिना किसी की अनुमति के यहाँ तक कि दाँत कुरेदने के लिए तिनका भी नहीं लेता।

प्रश्न:— हिंसा दोष क्या है?

उत्तर:— व्यवहार में प्राणी को मारना-सताना हिंसा है और तत्त्व-दृष्टि से राग-द्वेष युक्त प्रवृत्ति से किया जाने वाला प्राणवध हिंसा हैं। हिंसा जीवन की कमजोरी है। वह किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं की जानी चाहिए।

प्रश्न:— ज्ञानार्णव में हिंसा के प्रति क्या कहा गया है?

उत्तर:— हिंसा ही दुर्गति का द्वार है, हिंसा ही पाप का समुद्र है, हिंसा ही घोर नरक है और हिंसा ही सघन अंधकार है।

प्रश्न:— आत्मा के तीन दोष क्या हैं?

उत्तर:— आत्मा के तीन दोष हैं:— (१) राग (२) द्वेष और (३) मोह।

प्रश्न:— मोह दुःख का कारण क्यों है?

उत्तर:- मनुष्य के दुःखी होने के अनेक कारणों में मोह प्रमुख कारण है। मोह आत्मा की भ्रान्त दशा है। भ्रान्ति के कारण वस्तु जैसी है, मनुष्य वैसी नहीं समझ पाता, किन्तु जैसी उसकी अन्दर भावना होती है, वैसी ही समझता है। मोह, बुद्धि पर एक आवरण चढ़ा देता है, जिससे चेतना, संवेदना भ्रमित हो जाती है।

प्रश्न:- परिग्रह-दोष का मूल किसे कहा है ?

उत्तर:- भगवान् महावीर ने परिग्रह का मूल 'मूर्च्छा' अर्थात् आसक्ति को कहा है। वस्तु परिग्रह हो सकती है, किन्तु वह परिग्रह का मूल नहीं है। वह मूर्च्छा से जुड़कर ही परिग्रह बनती है। मूर्च्छा अपने आप में परिग्रह है चाहे वस्तु हो या नहीं। वस्तु अपने आप में परिग्रह नहीं है, वह मूर्च्छा द्वारा संगृहीत होकर परिग्रह बनती है।

प्रश्न:- पैशुन्य (चुगली) दोष क्या है ?

उत्तर:- पीठ पीछे दूसरे के सत् या असत् दोष को दुर्भावना से प्रकट करना अथवा दूसरे के गुणों को न सह सकने के कारण उसका दोष दिखलाना 'पैशुन्य' (चुगली) कहलाता है।

प्रश्न:- राग-दोष क्या हैं ?

उत्तर:- 'असंयमभव सुखाभिप्रायो रागः।' - जैन सिद्धान्त दीपिका ६/१२ संयमहीन पौद्गलिक सुखों की अभिलाषा को 'राग' कहते हैं।

प्रश्न:- अप्रामाणिकता क्या है ?

उत्तर:- मन, वाणी और कर्म की विसंगति ही अप्रामाणिकता है।

प्रश्न:- अनर्थदण्ड दोष क्या है ?

उत्तर:- जिसमें कोई लाभ नहीं होता हो, ऐसी क्रिया कर आत्मा को दण्डित करना, उसका नाम अनर्थदण्ड कहलाता है। यह दोष प्रमादवश होता है।

प्रश्न:- अभ्याख्यान दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर:- असत्य कलंक लगाने को 'अभ्याख्यान' कहते हैं।

प्रश्न:- परस्वानां च हरणं परदाराभिर्मर्शनम्।

सुहृदामतिशंका च त्रयो दोषाः क्षयावहाः ॥

भावार्थ:- दूसरों का धन चुराना, परस्त्रियों की ओर ताकना और मित्रों के प्रति अविश्वास करना - ये तीनों दोष मानव को नष्ट करने वाले हैं। उपर्युक्त पंक्तियाँ कहाँ से ली गई हैं ?

उत्तर:- वाल्मीकि रामायण ८७/२४।

प्रश्न:- अप्पणो णामं एगे वज्जं पासइ, णो परस्स।
परस्स णामं एगे वज्जं पासइ, णो अप्पणो।
एगे अप्पणो वज्जं पासइ परस्स वि।
एगे णो अप्पणो वज्जं पासइ णो परस्स।

भावार्थ:-

कुछ व्यक्ति अपना दोष देखते हैं, दूसरों का नहीं।
कुछ दूसरों का दोष देखते हैं, अपना नहीं।
कुछ अपना दोष भी देखते हैं, दूसरों का भी।
कुछ न अपना दोष देखते हैं, न दूसरों का।

उपर्युक्त वाणी किस सूत्र से ली गई है ?

उत्तर:- स्थानांग सूत्र ४/१ से।

प्रश्न:- रात्रि-भोजन से होने वाले दोष क्या हैं?

उत्तर:- रात्रि भोजन करने से सूक्ष्म जीव भोजन के साथ पेट में प्रवेश कर जाते हैं, जिससे पापों का बन्धन होता है। रात्रि भोजन से होने वाले पाप के प्रभाव से परभव में उल्लू, कौआ, बिल्ली, कबूतर, सर्प, बिच्छू, गिलहरी आदि नीच योनि में जन्म लेना पड़ता है। नरकों के चार द्वारों में प्रथम रात्रि भोजन है।

प्रश्न:- अपने दोष देखकर जीवन में किस प्रकार का निखार लाया जा सकता है ?

उत्तर:- यदि हमें अपने जीवन में निखार लाना है तो अपने स्वयं के अन्दर झाँककर अपने दोषों को देखना चाहिए। इन दोषों को तथा अपनी दुर्बलताओं को समझकर इन्हें दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। यही आत्मालोचन की प्रक्रिया है जो जीवन को परिमार्जित कर निखार देती है।

रजकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म. सा.

पूर्ववृत्तः- प्रातः काल होने वाले फाँसी के भय से युवराज रात्रि में पुनः अपने तीन मित्रों के यहाँ सहायता माँगने जाता है। प्रथम मित्र धक्का देकर बाहर निकाल देता है, दूसरा मित्र घोड़े और मोहरें देकर युवराज को भाग जाने का उपाय सुझाता है। किन्तु वह उसे अस्वीकार कर देता है। अब आगे....

युवराज की निराशा चरम को जा पहुँची थी। उसके आगे मृत्यु मुँह फाड़े खड़ी थी। भय के मारे वह कांप रहा था। इसी समय उसे अपने तीसरे मित्र का ध्यान आया। जब दो घनिष्ठ मित्रों से कुछ भी न बन पड़ा तो वह भी क्या कर सकेगा? फिर भी डूबते को तिनके का सहारा भी बहुत प्रतीत होता है। वह निराश हृदय से अपने तीसरे साधारण मित्र के पास गया। उसके दरवाजे पर पहुँच कर किवाड खटखटाया।

आवाज आई- 'कौन है?'

युवराज- "मैं हूँ भाई! क्या नीचे आ सकते हो?"

तीसरा मित्र युवराज की आवाज को पहचान कर फौरन नीचे आया। आते ही युवराज को खड़ा देखकर बोला- "आज मेरा बड़ा सौभाग्य है कि आपके चरणों से मेरी झोपड़ी पवित्र हुई। आपकी दयालुता के लिए अत्यन्त आभारी हूँ। पधारिए, भीतर चलिए।"

युवराज- "मालूम होता है तुम्हें अभी पता नहीं है, मुझे कल फाँसी होने वाली है। महाराज ने प्राणदण्ड दिया है। मेरी सहायता करने वाले को भी प्राणदण्ड देने की आज्ञा है। मेरे दो मित्रों ने मेरी सहायता नहीं की है। तुम चाहो तो मुझे जाने को कह सकते हो।"

मित्र- "राजकुमार! मैं सब कुछ सुन चुका हूँ। पर यह तो बताइए कि आपने वास्तव में कुछ अपराध तो नहीं किया है?"

युवराज- "बन्धुवर! मेरी जानकारी में मैंने तो कोई साधारण भी अपराध

नहीं किया है।”

मित्र—“जब आपने कोई अपराध नहीं किया तो आपकी सहायता करने में मुझे किस बात का भय है? आप भी क्यों चिंता करते हैं? चिन्ता तो पापी-अपराधी को करनी चाहिए। चलिए, ऊपर पदार्पण कीजिए। पहले मुझे फाँसी होगी तब आपका नम्बर आएगा।”

युवराज और उसका मित्र दोनों ऊपर अटारी पर जा पहुँचे। यद्यपि रात्रि काफी व्यतीत हो गई थी फिर भी युवराज अभी तक निराहार था। उसके मित्र ने भोजन बनवाया और युवराज को बड़े ही आदर, सत्कार और स्नेह के साथ परोसा। युवराज अपनी सन्निकट मृत्यु से अत्यन्त भयभीत हो रहा था तथापि इस मित्र के आश्वासन से उसे कुछ शान्ति मिली। मित्र ने अत्यन्त आग्रह करके राजकुमार को भोजन कराया और विश्राम करने को कहा। कोमल शय्या बिछाई गई और राजकुमार उस पर विश्राम करने हेतु लेट गया।

सूर्य निकलते ही राजमहल की ओर जनता उमड़ रही थी। प्रत्येक नागरिक बड़ी उत्सुकता के साथ राजकुमार विषयक फैसले को जानना चाहता था। इधर राजमहल में राजकुमार का पता नहीं चला। अन्त में राजा ने रात-दिन साथ रहने वाले मित्र को बुलवाया और उससे राजकुमार का पता पूछा। वह बोला—“अन्नदाता! जैसे ही मुझे यह पता चला कि राजकुमार को प्राणदण्ड की आज्ञा सुनाई है, त्यों ही मैं उनके पास से चल दिया था। भला मैं अपराधी का साथ क्यों देता? रात्रि को युवराज मेरे घर आए थे। मुझसे लल्लो-चप्पो करके सहायता माँगते रहे, पर मैंने उन्हें साफ टरका दिया।” मैंने साफ कह दिया—“चले जाओ यहाँ से। मैं तुम्हारी तनिक भी सहायता नहीं कर सकता। तुमने चाहे कोई अपराध किया हो या न कियो हो, फिर भी महाराज ने तुम्हें अपराधी करार दिया है, अतएव तुम अपराधी को आश्रय देकर या सहायता करके महाराज की आज्ञा का मैं व्यतिक्रम नहीं कर सकता। यदि तुम शीघ्र ही यहाँ से न जाओगे तो मैं पत्थर मारकर सिर फोड़ दूँगा।” इस प्रकार स्पष्ट बात सुनकर राजकुमार न जाने कहाँ चले गए हैं। फिर मैंने उनकी खोज-खबर नहीं की।

मूर्ख मित्र ने राजा का प्रेम प्राप्त करने के लिए बातें कही थीं, उनसे राजा भीतर ही भीतर जल-भुन गया। फिर भी अवसर देखकर राजा ने कहा—“तुमने

बहुत अच्छा किया जो राजा के अपराधी को आश्रय न दिया।” मन में सोचा - “तू कितना नीच, पामर और कृतघ्न है! तेरी बेईमानी की भी कोई सीमा है? नीच नरक का कीड़ा कहीं का। अब मेरे आगे भला बनना चाहता है।” राजकुमार ने अब तक इसका सबसे अधिक आदर किया। खूब खिलाया, पहनाया और इसने यह जघन्य व्यवहार किया। ऐसे पामर प्राणियों को हजार बार धिक्कार है।

राजा ने मन में इस प्रकार सोच कर, ऊपर से उसकी पीठ ठोकी, धन्यवाद दिया। मन में कहा- “ठीक है बेटा, बहुत माल उड़ाया है। अब तुम्हें ही शूल पर चढ़ाऊँगा।”

इसके बाद राजा ने युवराज के दूसरे मित्र को बुलाया। उसके आने पर पूछा- “सच-सच बताना, तुम्हें युवराज का पता है? उसे प्राण दण्ड देना है, पर वह कहीं भाग गया है। क्या वह तुम्हारे पास आया था?”

वह बोला- “हुजूर! युवराज मेरे घर पर आए थे, पर मैं कम्बख्त उनके कुछ भी काम न आ सका। आपका आदेश मेरे द्वारा किस प्रकार टाला जा सकता था। मुझे लाख बार धिक्कार है कि मैं अपने मित्र की जरा भी सहायता न कर सका। जब रात्रि में वे मेरे घर आए तो मैंने उन्हें एक घोड़ा और मोहरें देने के लिए कहा था और कहीं भाग जाने की सलाह भी दी थी, पर उन्होंने इसे स्वीकार न किया और वहाँ से चले गए। अन्नदाता! मैंने उन्हें उपाय बताकर यद्यपि आपका अपराध किया है, फिर भी वे मेरे मित्र थे। ऐसी घोरतम मुसीबत के समय मैं क्यों न उनकी सहायता करता। फिर भी दुःख है कि मुझसे कुछ न बन सका। इस अपराध के लिए मैं आपके प्रति नम्रतापूर्वक क्षमाप्रार्थी हूँ।”

राजा ने उसे ऊपर से डांट-फटकार बताई। कहा- “तुमने मेरी आज्ञा के विरुद्ध राजकुमार की सहायता करने का विचार कर लिया था। राजकुमार अगर घोड़ा माँगता तो तुम उसे दे देते और राजकुमार को फरार कर देते। इस अपराध का तुम्हें यथोचित दण्ड दिया जाएगा।”

मन में कहा- “यह पहले वाले से बहुत अच्छा है। फिर भी जैसी सहायता इसे अपने मित्र युवराज की करनी चाहिए थी, वैसी सहायता इसने भी नहीं की है। अतएव इसे देश निकालने का दण्ड देना चाहिए।”

इसके पश्चात् राजा ने अपने कर्मचारियों से पूछा- “क्या युवराज का और

भी कोई मित्र है?"

राजकर्मचारी- जी हाँ, हुजूर युवराज के एक मित्र और हैं, पर उनके साथ घनिष्ठता नहीं है। कभी कभी साधारण रूप से मिलजुल लेते हैं।

राजा- अच्छा जाओ, उसे भी पकड़ लाओ। शीघ्र लौट कर आओ। यदि कदाचित् युवराज वहाँ हो तो उसे भी पकड़ ले आना।

राजकर्मचारी दुःखी दिल से तीसरे मित्र के घर पहुँचे। वहाँ जाकर पूछा- क्या यहाँ राजकुमार हैं?

उत्तर मिला- हाँ यहाँ मौजूद हैं। पर तुम लोग उलटे पांव यहाँ से अभी लौट जाओ।

राज कर्मचारी- उन्हें अन्नदाता-ने फाँसी की सजा सुनाई है। उनकी मदद करने वाले को भी फाँसी होगी। यदि तुम अपनी जान की खैरियत चाहते हो तो युवराज को इसी समय हमारे सुपुर्द कर दो।

उत्तर आया- आप लोग यहाँ से चले जाइए। फाँसी से डरने वाले कोई और होंगे हम नहीं डरते? राजकुमार ने कोई अपराध नहीं किया है, फिर क्यों उन्हें फाँसी के तख्ते पर लटकाया जा रहा है?

राज्य कर्मचारी- हमारे सामने बहस करने से काम नहीं चलेगा, हम महाराज के हुकम के ताबेदार हैं। तुम्हें लाचार होकर युवराज को बाहर निकालना होगा। जल्दी करो, विलम्ब करने से महाराज खफा होंगे।

उत्तर मिला- हों तो होते रहें। कह दिया है- चले जाओ यहाँ से। यदि अब क्षण भर भी यहाँ खड़े रहे तो, याद रखो सबके सब यहीं भून दिए जाओगे।

यह उत्तर सुनकर राज कर्मचारी महाराज के पास भागे गए। आदि से अन्त तक का समस्त वृत्तान्त कह सुनाया।

महाराज ने राज्य कर्मचारियों के मुख से यह वृत्तान्त सुना तो उनका रोम-रोम प्रसन्न हो गया। राजकुमार का एक सच्चा मित्र है, यह सोचकर उन्हें बहुत संतोष हुआ। फिर भी उसकी परीक्षा करने के उद्देश्य से उन्होंने तोपखाना भेजा। तोपखाने के अधिकारी को एकान्त में बुलाकर कहा- "देखो, धमकाने के लिए तोपखाना भेज रहा हूँ। जब तक मेरी दूसरी आज्ञा न मिले तब तक तोपें न चलाना। अन्यथा प्रजा बिगड़ खड़ी होगी।"

(क्रमशः)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(अजीव पर्याय-परमाणु)

श्री धर्मचन्द्र जैन

प्र.२७९ परमाणु किसे कहते हैं?

उत्तर पुद्गल द्रव्य का ऐसा सूक्ष्मातिसूक्ष्म एवं अविभाज्य अंश जो स्कन्ध से मिला हुआ नहीं है, परमाणु कहलाता है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय एवं जीवास्तिकाय में जो सूक्ष्म एवं अविभाज्य अंश होता है, वह स्कन्ध से मिला हुआ, जुड़ा हुआ ही रहता है, इस कारण इसे परमाणु न कहकर प्रदेश कहते हैं। अर्थात् परमाणु अकेला एवं स्वतन्त्र होता है, जबकि प्रदेश स्कन्ध से जुड़ा हुआ होता है।

प्र.२८० क्या परमाणु सदैव परमाणु रूप ही रहता है?

उत्तर नहीं, परमाणु सदैव परमाणु रूप ही नहीं रहता, क्योंकि परमाणु पुद्गल की एक पर्याय है। पुद्गल की कोई भी पर्याय असंख्यात काल से अधिक नहीं रहती है। अर्थात् असंख्यात उत्सर्पिणी, असंख्यात अवसर्पिणी काल बीतने के बाद तो उस पर्याय (विद्यमान पर्याय) में परिवर्तन अवश्य ही आ जाता है। इस नियम के अनुसार परमाणु भी कम से कम तो १ समय में ही तथा अधिक से अधिक असंख्यात काल में तो प्रदेश का रूप धारण कर ही लेता है।

प्र.२८१ एक परमाणु में कितने वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शादि होते हैं?

उत्तर एक परमाणु में पाँच वर्ण, दो गन्ध, पाँच रस तथा चार स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष) इस प्रकार कुल १६ वर्णादि पाये जाते हैं। किन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिये कि एक परमाणु में एक समय में पाँच वर्णों में से एक वर्ण, दो गन्धों में से एक गन्ध, पाँच रसों में से एक रस तथा चार स्पर्शों में से दो स्पर्श (शीत-उष्ण में से एक, स्निग्ध-रुक्ष में से एक) इस प्रकार कुल ५ वर्णादि ही पाये जाते हैं।

प्र. २८२ परमाणु कितने हैं तथा कितनी जगह में रहते हैं?

उत्तर सम्पूर्ण लोक में परमाणु अनन्त हैं। लोक के असंख्यातवें भाग में भी परमाणु अनन्त हैं। अंगुल के असंख्यातवें भाग जितनी जगह में भी परमाणु अनन्त हैं। एक आकाश प्रदेश पर भी परमाणु अनन्त हैं। अनन्त के भी अनन्त भेद होते हैं।

एक परमाणु कम से कम भी एक तथा अधिक से अधिक भी एक आकाश प्रदेश पर ही ठहरता है। परमाणु अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण वह दो आकाश प्रदेशों पर नहीं ठहर सकता। आकाश प्रदेशों में अवगाहन गुण की (जगह देने की) ऐसी विचित्रता रही हुई है कि एक आकाश प्रदेश पर एक परमाणु भी रह जाता है तथा अनन्त परमाणु भी उसी एक आकाश प्रदेश पर रह जाते हैं।

गुरु भगवन्तों के श्रीमुख से सुनने में आया है कि लोक के एक-एक आकाश प्रदेशों पर अनन्त परमाणु, अनन्त दो प्रदेशी यावत् अनन्त संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, अनन्त असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध तथा अनन्त अनन्त प्रदेशी चतुस्पर्शी स्कन्ध रहे हुए हैं।

प्र. २८३ परमाणु में वर्णादि गुण कितनी मात्रा में, कितने काल तक एक जैसे रह सकते हैं?

उत्तर परमाणु में पूर्व में बतलाये गये १६ वर्णादि जघन्य एक गुण भी हो सकते हैं तथा उत्कृष्ट रूप में अनन्त गुण भी हो सकते हैं। अर्थात् जैसे काले वर्ण को लें-काला वर्ण एक गुण अर्थात् अत्यल्प मात्रा, १ डिग्री कालापन भी परमाणु में हो सकता है तथा अनन्त गुण अर्थात् सर्वाधिक कालापन भी परमाणु में हो सकता है तथा जघन्य एवं उत्कृष्ट के बीच की सभी अवस्थाएँ भी काले वर्ण के परमाणु में पाई जा सकती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि परमाणु में १६ ही वर्णादि एक गुण से लेकर अनन्त गुण तक पाये जा सकते हैं। इसी कारण से वर्णादि १६ बोलों की अपेक्षा से परमाणु को षट्स्थान पतित कहा जाता है।

वर्णादि १६ ही बोल परमाणु में जघन्य एक समय में भी परिवर्तित हो सकते हैं तथा उत्कृष्ट असंख्यात काल में तो उनमें उनकी वर्तमान पर्याय में परिवर्तन हो ही जाता है। जैसे काले वर्ण को लें- जो परमाणु

एक गुण वाला है वह एक गुण कालापन के रूप में असंख्यात काल तक भी रह सकता है। उत्कृष्ट गुण कालापन में भी जघन्य एक समय तथा उत्कृष्ट असंख्यात काल तक रह सकता है। इस प्रकार काले वर्ण की सभी अवस्थाओं में असंख्यात-असंख्यात काल तक रह सकता है। काले वर्ण के समान ही शेष १५ वर्णादि भी समझ लेने चाहिये।

प्र.२८४ परमाणु को प्रत्यक्ष कौन जान सकते हैं?

उत्तर परमाणु अत्यन्त सूक्ष्म रूपी पुद्गल होता है, अतः उसे उत्कृष्ट अवधिज्ञानी तथा केवल ज्ञानी ही प्रत्यक्ष जान सकते हैं। सामान्य अवधिज्ञानी परमाणु को प्रत्यक्ष जान-देख नहीं सकते। (क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

आपकी जेब और बच्चों का जेबखर्च

मीना जैन

माता-पिता और अभिभावकों के दिमाग में यह प्रश्न उठता है कि 'जेबखर्च' कब बच्चों को दी जाए और कितनी दी जाए। इसके उत्तर में इतना ही कहा जा सकता है कि जब बच्चों को पैसों के विषय में सही समझ आ जाए तभी उन्हें जेबखर्च दिया जाना चाहिए। अन्यथा 'जेबखर्च' को बच्चा अन्धाधुन्ध खर्च कर सकता है। बच्चों को पैसे देकर उन्हें पैसे ठीक ढंग से खर्च करना, जोड़ना और उनका हिसाब रखना सिखाया जा सकता है। इनमें इसके द्वारा स्वतंत्रता से कुछ सोच सकने की और किसी अच्छी वस्तु को खरीदने की लगन भी पैदा की जा सकती है, जो कि उनके चरित्र निर्माण में और स्वस्थ दृष्टिकोण के पनपने में मदद कर सकती है। जेबखर्च किसी उद्देश्य पूर्ति का साधन होना चाहिए न कि फिजूल-खर्ची का जरिया।

माता-पिता और अभिभावकों को यह भी जानना चाहिए कि वह आँख बन्द कर बच्चों की प्रत्येक इच्छा पूरी न करें। इससे बच्चों की जिद की आदत कम हो सकती है। किसी विशेष वस्तु के आग्रह पर उसके चिल्लाने से, रोने से न डरें, बल्कि उसे प्यार से बताएं कि वह क्यों नहीं विशेष वस्तु प्राप्त कर सकता है। यदि वह समझे कि उसकी मांग सही है तो उसे समझाएं कि वह कुछ पैसे अपने जेबखर्च से जोड़े और कुछ वे मिलायेंगे, तभी वस्तु खरीदी जा सकती है। ऐसा करने से बच्चे की चिल्लाने-रोने की आदत धीरे-धीरे छूट जाएगी। यथासंभव अपना वायदा अवश्य पूरा करें।

-द्वारा राज स्टेशनर्स, पचपहाड़ रोड, भवानीमण्डी

भाई-बहन

उपाध्याय श्री केवलमुनि जी म. सा.

पूर्ववृत्त:- राजमहल पहुँचने के बाद राजा ने निर्मला के भाई की बहुत खोज की, किन्तु वह कहीं नहीं मिला। उसने दुःखी निर्मला के मन-बहलाव के कई साधन अपनाये। अन्त में राजा ने उससे सहमति प्राप्त कर विवाह कर लिया। कुछ समय बाद उसके गर्भावस्था की बात जानकर राजा के हर्ष का पार नहीं रहा, किन्तु अन्य रानियाँ, जो बांझ थीं, अत्यधिक निराश और चिन्तित हो गईं। वे भविष्य में अपनी दयनीय स्थिति को सोचकर परस्पर विचार-विमर्श करने लगीं-

चारों रानियाँ एक साथ बैठकर काफी देर तक उपाय सोचती रहीं। फिर चौथी रानी बोली-“मेरी समझ में तो हम पहले इस छोटी रानी से मेल बढ़ाकर अपना विश्वास जमा लें और फिर भोजन में या किसी भी तरह इसको ऐसी औषधि खिला दें, जिससे इसका गर्भ गिर जाय। तब यह पतिदेव को प्रिय न रहेगी।”

बड़ी रानी ने इस योजना में दोष बताया-“ऐसा करना ठीक नहीं है। पहली बात तो यह है कि सारा दोष हमारे सिर आयेगा। दूसरी बात यह है कि गर्भपात की औषधि हमें मिलेगी कहाँ से? कौन लाकर देगा?”

“इसमें क्या कठिनाई है? जिस दासी को धन का लोभ दिया जायेगा, वही दासी लाकर देगी।” छोटी रानी ने अपनी छोटी बुद्धि के अनुसार सुझाव दिया और सबकी ओर देखने लगी।

“और यदि उसने राजा से कह दिया तो.....? नहीं, मेरी समझ में तो छोटे लोगों पर इतना विश्वास नहीं करना चाहिए। इनके पेट में कोई बात पचती नहीं।” तीसरी रानी ने कहा।

दूसरी बोली-“विश्वास तो किसी-न-किसी का करना ही पड़ेगा, क्योंकि हम स्वयं तो ऐसा काम कर ही नहीं सकतीं।”

बड़ी रानी ने सुझाव दिया-“विश्वास तो करना ही पड़ेगा। किन्तु गर्भपात की बात मेरी समझ में नहीं आई। मेरी राय में तो हम पुत्र होने दें।

“यह आप क्या कह रही हैं बड़ी रानी जी!” तीनों एक साथ बोल उठीं-
“तब तो बाजी हाथ से निकल ही जायेगी, पुत्र होने के बाद हम कर भी क्या सकेंगी?”

बड़ी रानी बोली-“तुम तीनों पहले मेरी पूरी योजना सुनो। उसके बाद अपने-अपने सुझाव देना। योजना में कोई कमी हो तो बताना।”

तीनों रानी ध्यान से सुनने लगीं। बड़ी रानी ने योजना बताई-“यह सत्य है कि ऐसे काम धन का लालच देकर इन छोटे लोगों से ही कराये जाते हैं। नई रानी निर्मला का प्रसव हमारी राज-दाई(नाईन) गंगा ही करायेगी। उसे धन का लालच देकर अपनी ओर कर लें। वह निर्मला के पुत्र को हटाकर कुत्ते का पिल्ला रख देगी और कह देगी कि नई रानी के उदर से यह कुत्ते का पिल्ला पैदा हुआ है।”

“इससे क्या लाभ होगा?” छोटी रानी ने शंका की।

बड़ी रानी ने बताया-“इससे हम निर्मला को चुड़ैल अथवा मानवीरूप में राक्षसी साबित कर सकेंगी, परिणाम यह होगा कि राजा के दिल से वह हमेशा के लिए निकल जायेगी।”

दूसरी रानी ने शंका उठाई-“गंगा बहुत ही स्वामिभक्त है। वह कर भी देगी यह काम?”

बड़ी रानी ने कहा-“स्वामिभक्त होने से गंगा यह काम अवश्य कर देगी और फिर आज उसकी स्थिति बदली हुई भी है। वह बहुत दुःखी है। उसके बेटे बहू ने उसकी जो दुर्दशा की है, उससे उसे धन का महत्त्व मालूम हो गया है। मेरे विचार से तो वह धन के लोभ में यह काम जरूर कर देगी।”

वास्तविकता भी यही थी। गंगा ने अपनी युवावस्था तक धन का मूल्य नहीं समझा था। एक ही तो पुत्र था उसका झमरू। दो लड़कियाँ थीं। उनका विवाह हो चुका था। विवाह से पहले तो झमरू बहुत सीधा तथा आज्ञाकारी पुत्र था। उसका विवाह गंगा के पति नानकराम ने किया था। पुत्र के विवाह के एक वर्ष बाद वे स्वर्गवासी हो गये।

नानकराम यानी पति के जीवित रहने तक तो गंगा की स्थिति में कोई फर्क नहीं आया; बहू भी आज्ञाकारिणी बनी रही। लेकिन गंगा के विधवा होते ही स्थिति में फर्क आ गया।

एक गलती कहो या धन का मूल्य न समझने की भूल कहो, गंगा ने अपना सारा धन बेटे-बहू को दे दिया। यही सोचा कि मुझे अपने पास धन रखकर क्या करना है। दो रोटी तो पेट भरने के लिए ये दे ही देंगे और मुझे क्या चाहिए ?

लेकिन धन पाते ही बेटे-बहू की आँखे बदल गयीं। अब उन्हें गंगा भारी पड़ने लगी। रोटी तो खैर देते थे, देनी ही पड़ती थी; किन्तु हलके शब्दों से खूब अपमानित करते; नित्य कलह होती, बहू खरी-खोटी सुनाती।

बेटे-बहू के व्यवहार से गंगा बहुत दुःखी थी। जब दुःख अधिक बढ़ जाता तो बड़ी रानी के पास आकर रो-रोकर दुखड़ा सुनाती। रानी उसके प्रति सहानुभूति दिखाती और थोड़ा-बहुत काम करवाकर एक-दो सोनैया देती।

सोनैया (स्वर्णमोहर) पाकर गंगा बहुत खुश होती। ढेरों आशीर्वाद देती और स्वामिभक्ति दिखाकर कहती-

“महारानीजी ! आपकी कृपा से अब महीना-पन्द्रह दिन चैन से कट जायेंगे। स्वर्णमोहर पाकर बहू रोटी दे देगी। मैं आपकी बहुत कृतज्ञ हूँ। आपका कोई भी काम हो आप मुझे बताइये। मैं प्राणों की बाजी लगाकर भी आपका काम करूँगी।”

गंगा की ऐसी दशा और उसके द्वारा बार-बार कहे गये इन शब्दों से बड़ी रानी को विश्वास था कि धन अधिक देने से गंगा उसके द्वारा बताये गये इस काम को भी कर देगी।

बड़ी रानी ने अन्य तीनों रानियों से कहा-“बहनों ! गंगा अक्सर मेरे पास आती रहती है। उस पर किसी को सन्देह भी नहीं होगा और हमारा काम भी बन जायेगा। नई रानी निर्मला या तो महल से निकाल दी जायेगी और यदि न भी निकाली गई तो उसकी दशा दासियों से भी गई बीती हो जायेगी। महाराज फिर उसकी ओर भूलकर भी देखने का प्रयास नहीं करेंगे।”

इस योजना पर सभी रानियों की सहमति हो गई।

गंगा तो हर तीसरे-चौथे दिन आती ही थी। इस बार आई तो बड़ी रानी ने बड़े प्रेम से उसका स्वागत किया। अन्य रानियाँ भी आ गईं। औपचारिक बातों के बाद बड़ी रानी ने कहा-“गंगा! तुझसे एक आवश्यक काम है।”

खुश होकर गंगा बोली-“आज्ञा कीजिए, महारानीजी।”

बड़ी रानी ने कहा-“तुझे मालूम है नई रानी निर्मला गर्भवती हो गई है।”

“हाँ, महारानीजी! मुझे मालूम है और महाराज ने मुझे नई रानी की देख-भाल के लिए कह भी दिया है।” गंगा ने खुशी प्रकट करते हुए रानियों को बतलाया।

“तो तू वहाँ जाती होगी?” बड़ी रानी ने उससे पूछा।

“हाँ, महारानीजी! मैं जाती हूँ। नई रानी की देख-भाल भी करती हूँ।” गंगा ने कहा और आगे बोली-“महारानी जी! यह तो बड़ी खुशी की बात है। महाराज को पुत्र की प्राप्ति होगी और जनता को युवराज-भावी शासक मिलेगा।”

बड़ी रानी ने बात को मोड़ दिया-“गंगा! है तो यह खुशी की बात। लेकिन हमारा तो भविष्य ही अन्धकार में डूब जायेगा, यही चिन्ता है।”

“सो कैसे महारानीजी!” गंगा ने आश्चर्यमिश्रित उत्सुकता दिखाई।

बड़ी रानी ने बात को घुमाया-“एक बात बता गंगा! पत्नी के लिए पति का प्रेम न हो, बेरुखी हो तो इससे बड़ा दुःख और क्या हो सकता है?”

“यह तो पत्नी के लिए सबसे बड़ा दुःख है।” गंगा ने सहमति दी-“लेकिन आपके मस्तिष्क में यह बात क्यों आई? क्या आप भी इसी दुःख से पीड़ित हैं? क्या महाराज आपकी.....?”

“हाँ गंगा! यही बात है?” बड़ी रानी ने आह भरी ठण्डी सांस ली-“जबसे यह नई रानी आई है, महाराज हमारे महलों में नहीं आते, बात भी नहीं करते, उनकी रातें नई रानी के महलों में बीतती हैं। उन्होंने हमें तो उपेक्षित ही कर दिया है।” और बड़ी रानी आँखों में आँसू भर लाई।

तीनों रानियाँ भी समवेत स्वर में बोल उठीं-“गंगा! अपने दिल का दुःख किससे कहें। तुझे अपना समझा है, तभी तेरे सामने हमारी जबान खुली है।”

और उसकी आँखें भी आँसुओं से भर गईं।

जोड़-बाकी के प्रयोग : आध्यात्मिक जीवन में

श्रीमती शशि टाटिया

प्रिय महानुभावों ! आज का युग भाग-दौड़ का युग है। प्रत्येक मनुष्य अपने दैनिक कार्य में व्यस्त है। बालक को लीजिए, बहनों, भाइयों को लीजिए। गणित की आवश्यकता सबको रहती है। बच्चा जब स्कूल जाता है तो उसी समय से जोड़, बाकी, गुणा और भाग शब्दों से परिचित हो जाता है।

यदि एक बच्चे को कह दिया जाये कि हम आपको प्रत्येक दिन एक रुपया देंगे तो बच्चे के मस्तिष्क में गणित का हिसाब प्रारम्भ हो जाता है, माँ हमें प्रतिदिन एक रुपया देगी तो महीने में ३० रुपये एवं वर्ष के ३६५ रुपये एकत्रित हो जायेंगे। अपने गुल्लक में ज्यादा रुपये इकट्ठे होने पर बच्चा बैंक में बचत खाता खुलवा लेता है। बच्चा स्वयं इस जोड़ में से कभी बाकी (माइनस) करता है। अपने जन्मदिन पर नई ड्रेस लाता है, भाई-बहनों, दोस्तों को उपहार देता है। एक दिन की खुशी, कुछ पलों की खुशी के लिए पैसा निकालता है और जमा रकम का बैलेन्स माइनस में आ जाता है।

युवाओं को लीजिए। वे स्वयं से प्रतिस्पर्धा कर लेते हैं। उन्हें जल्दी से जल्दी करोड़पति बनना है। अपना जमा पैसा म्युचअल फंड में लगाया, शेयर में लगाया, ऊँची ब्याज दर पर दिया, क्योंकि जोड़ में इतना माहिर हो गया है कि उसे जोड़ ही पसन्द है। वह अपने मन में जोड़ का आनन्द लिये घूमता है, पैसा बढ़ रहा है। अचानक एक ही दिन में शेयर के भाव टूटते हैं, ऊँची ब्याज दर घटती है, माथा पकड़ता है बैलेन्स सीट माइनस में आ जाती है। यह है हमारे सांसारिक जीवन की गणित।

बुजुर्ग वर्ग को लीजिये। वह परिवार के सदस्य के लिये कुछ न कुछ जोड़ता चला जाता है। कभी बच्चों की पढ़ाई, कभी शादी। कभी उनके बच्चों के मांगलिक कार्यों के लिये जोड़-जोड़ में इतना व्यस्त हो जाता है कि उस आपाधापी में उस जोड़ में से दान देना, धर्म क्षेत्र में खर्च करना, गरीबों की सेवा करना भूल जाता है। बाकी भी करता है तो स्वयं के परिवार के लिये, कभी बच्चों के जन्मदिन पर उन्हें

होटल भोजना, मंहगे गिफ्ट देना, फिल्म देखने भोजना और पिकनिक पर भोजना ये सभी बुजुर्ग वर्ग के जोड़ में से, जीवन की कमाई में से बाकी हो रही है, बैलेन्स सीट माइनस में जा रही है। यह है हमारे क्षणभंगुर जीवन की गणित।

आइये! हम अध्यात्म जीवन की गणित देखें। इसे माइनस में नहीं जाने देंगे। जीवन की क्षणभंगुरता में चैतन्य का शाश्वत रूप है। आध्यात्मिक क्षेत्र में जो भी जुड़ते हैं उनका अभिनंदन है, स्वागत है। इसमें जोड़-बाकी का खेल शुरू करते हैं तो बैलेन्स सीट प्लस में ही जायेंगी। बच्चे, युवा, बुजुर्ग, बहन और भाई हम सभी जोड़ने के आदि हैं, निपुण हैं, इसलिए पहले हम अपने जीवन के लिये प्रत्येक दिन कुछ न कुछ जोड़ने का नियम लेंगे। पहले छोटे-छोटे नियम की सूची बनायेंगे। प्रत्येक दिन अपने सामर्थ्य के अनुसार व्रत लेंगे। अपने जीवन में नया जोड़ेंगे। जैसे:- नवकारसी करना, नवकार मंत्र का ध्यान करना, प्रार्थना करनी, सामायिक करनी, स्वाध्याय करना, विगय, जमीकंद एवं वनस्पति का त्याग करना आदि। अपने व्रत, नियम की सूची स्वयं को बनानी है तथा अपने जीवन में कोई न कोई नियम जोड़ना है, जिससे जीवन आगे बढ़ता रहे।

अब अपनी जोड़ में से कुछ बाकी करते हैं। गणित का विषय है। आध्यात्मिक क्षेत्र है। अपने भौतिक सुखों में से कुछ बाकी करनी है, घटाना है।

१. हम महिलाएँ वर्ष की ८ या १० साड़ी खरीदती हैं। सिर्फ एक साड़ी माइनस करें एवं जरूरतमंद को उस साड़ी को दे दें।
२. अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में पढ़ाते हैं, इतनी सारी ड्रेसें होती हैं कि अलमारी में नहीं आती। तरह-तरह के बैग, टिफिन एवं जूते होते हैं, क्यों न हम जरूरतमंद एक बच्चे की फीस जमा करा दें। एक बच्चे को पढ़ाने की जिम्मेदारी लें।
३. हम ए.सी. में बैठे हैं, टी.वी. देख रहे हैं, परन्तु सोचें कि आज किसी को १५ मिनट धर्म की बात समझायेंगे। टी.वी. का एक सीरियल नहीं देखा, माइनस किया।
४. घर में चार काम एक नौकर करता है। आज उसका एक काम हम कर देंगे। हमने अपने आराम के क्षणों में से कुछ पल कम किये, माइनस किये।

५. जानवरों के दाना-पानी की व्यवस्था करेंगे ।
६. दीपावली पर हजारों रुपये के पटाखे लाते हैं; उनमें कमी करके अनाथ आश्रम में मिठाई बटवायेगें ।
७. किसी की बेटी की शादी में सहायता के दो हाथ बढ़ायेंगे । अपनी जोड़ी हुई राशि में से माइन्स करेंगे ।

इस प्रकार कई नेक कार्य करते हुए यदि जोड़ में से बाकी करते रहेंगे तो भी हमारी आध्यात्मिक क्षेत्र की गणित में बैलेंस सीट प्लस में ही जायेगी ।

कृपया इस नेक कार्य के लिये देरी न करें । कॉपी-पेन लीजिये, जोड़-बाकी की सूची बनाइए । रात को सोते समय अपनी बैलेन्स सीट देखिए, आप पायेंगे कि आपकी बैलेन्स सीट प्लस में है ।

जीवन में त्याग को जोड़िए । अपने भौतिक ऐशो आराम में कमी लाइये । ब्रतों को जीवन में जोड़ने से, अपने परिग्रह एवं भौतिक सुखों को माइन्स करने से बड़ा ही आनन्द आयेगा ।

मंत्री-श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, घोड़ों का चौक, जोधपुर(राज.)

WHAT IS FREEDOM

Freedom is not an idea; a philosophy written about freedom is not freedom. Either one is free or one is not. One is in a prison, however decorative that prison is; a prisoner is free only when he is no longer in prison. Freedom is not a state of the mind that is caught in thought. Thought can never be free. Thought is the response of memory, knowledge and experience; it is always the product of the past and it cannot possibly bring about freedom because freedom is something that is in the living active present, in daily life. Freedom is not freedom from something--freedom from something is merely a reaction.

-Collected : You are the World

नारी : परिवार की धुरी

-उमराव देवी धींग

परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। विभिन्न परिवारों की समवेत स्थिति से समाज की विशिष्ट छवि का निर्माण होता है। परिवार की नींव अथवा धुरी है- नारी। परिवार का प्रत्येक निर्णय, क्रिया-कलाप एवं व्यवहार नारी की सहमति और उसके योगदान पर निर्भर है। जिस परिवार में नारी शिक्षित, संस्कारित, समझदार और सहिष्णु होती है, वह परिवार अखण्ड और अजेय होता है।

संयुक्त कुटुम्ब परम्परा का हास

पहले बड़े-बड़े परिवार एक साथ संयुक्त रूप से रहते थे। संयुक्त कुटुम्ब की यह परम्परा आज तिरोहित होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण है - आपसी सामंजस्य और साथ-साथ रहने की कला का अभाव। पश्चिम की सभ्यता के अंधानुकरण से कई परिवार टूटे हैं। इस सुविधावादी, उपभोगवादी और स्वार्थपरायण कुसंस्कृति ने स्वच्छन्द रहने की लालसा पैदा की और बड़े-बड़े कुटुम्ब खण्ड-खण्ड होते चले गये। इन सबके अलावा आवासीय समस्या ने भी संयुक्त कुटुम्बों को अलग-अलग रहने के लिए विवश किया है। परिणामस्वरूप बाल पीढ़ी दादी-नानी की शिक्षाप्रद कहानियों से वंचित है।

सहिष्णुता आवश्यक

समुदाय में रहने के लिए समता-सहिष्णुता का विकास करना बहुत आवश्यक है। सौ सदस्यों वाले संयुक्त कुटुम्ब के मुखिया के पास एक व्यक्ति पहुँचा और कहा - “आपकी अद्भुत पारिवारिक अखण्डता और सौहार्द से मैं बेहद प्रभावित हूँ तथा इस अनुकरणीय एकता का राज पूछना चाहता हूँ।” मुखिया वृद्ध था और उसने मौन व्रत धारण कर रखा था। उसने कागज पर एक शब्द लिखकर आगन्तुक को दे दिया। कागज पर लिखा था - ‘सहिष्णुता’।

प्रेरणा की स्रोत

नारी जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव और बदलाव आते हैं। परिस्थितियों के अनुरूप ढल जाने और विपरीत परिस्थितियों को स्वयं के अनुरूप ढाल देने की

कला का विकास नारी-जीवन के लिए बेहद जरूरी है। एक महिला दो कुलों को प्रभावित करती है। उसे बेटी, बहिन, पत्नी, भाभी, माता आदि भूमिकाओं को निभाना होता है। मरुदेवी, ब्राह्मी, सुन्दरी से लेकर त्रिशला, चन्दनबाला और बाद में भी एक से बढ़कर एक सन्नारियाँ, सतियाँ और महासतियाँ हुईं, जिन्होंने अपने अनूठे आदर्शों और सत्कार्यों से जमाने को आश्चर्यचकित और नतमस्तक कर दिया। सत्य और शील की ऐसी साहसी अमर साधिकाओं के जीवन चरित्र आज की भटकती पीढ़ी को सही दिशा देने में सक्षम हैं।

निजा सलाहकार

परिवार एक ऐसी संस्था है जहाँ प्यार, सहकार और कर्तव्य का निर्मल निर्झर निरन्तर प्रवाहित होता रहता है; जिसका स्रोत नारी होती है। नारी शब्द की व्याख्या करते हुए मूक माटी काव्य में आचार्य विद्यासागर लिखते हैं - नारी यानी न आरी, न अरि अर्थात् जो आरी (छुरी) अथवा अरि (शत्रु) नहीं है, वह है नारी। उन्होंने अबला शब्द के बारे में भी कहा कि जो बला (समस्या) नहीं है, वह है- अबला। नारी को स्वयं के प्रति अपने चिन्तन को बदल कर अस्तित्व के प्रति सजग होना चाहिये। उसे परिवार और परिवार के बाहर ऐसे गरिमामय कार्य करने चाहिये, जिनसे स्वयं के और दूसरों के व्यक्तित्व पर स्थायी सकारात्मक प्रभाव हो। परिवार और समाज की प्रबुद्ध महिलाओं से यह उम्मीद की जाती है कि वे दिग्भ्रमित तरुणियों के भटकते कदमों को सही दिशा की ओर मोड़ें। पारिवारिक जीवन के विकट समय में नारी की समझ और सलाह बहुत उपयोगी साबित होती है। परिवार की कई मुश्किलें उसके विवेक से आसान हो सकती हैं। ज्ञान-ध्यान, स्वाध्याय, व्रत-निष्ठा आदि के द्वारा वह परिवार को सुसंस्कारों की पवित्र ज्योत्स्ना से सम्पूरित कर सकती है। नारी अपनी कुदरती क्षमताओं, गुणों एवं प्राप्त अवसरों के माध्यम से परिवार और समाज में एक अभिनव चेतना का संचार कर सकती है।

संस्कारों की संवाहिका

वर्तमान समय में नारी को जो व्यापक स्वतन्त्रता मिली है, यदि उसका स्वच्छन्दता पूर्वक उपभोग करने की बजाय विवेकसम्मत उपयोग किया जाए तो घर-घर में उग रही कलह और संस्कारहीनता की कंटली झाड़ियाँ शान्ति और सदाचार के फूलों के गुलदस्ते में बदल सकती हैं तथा एक प्रभावी सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात हो सकता है। एक शिक्षित, सहिष्णु तथा शीलवती नारी के लिए कुछ

भी सच्चा और अच्छा करना असंभव नहीं है। रसोईघर जैसा महत्वपूर्ण विभाग नारी के पास है। जिस पर भक्ष्याभक्ष्य विवेकविहीन अपसंस्कृति का आक्रमण हुआ है। यदि नारी दृढ़ तथा तेजस्वी रहे तो किसकी मजाल कि रसोईघर की पवित्रता को नुकसान पहुँचा सके। इसके अतिरिक्त नारी जिन भावों और विचारों के साथ भोजन तैयार करती है, उनका अच्छा-बुरा प्रभाव भोजन करने वालों पर भी पड़ता है। अतः गृहिणी को सदैव सद्भावों, श्रेष्ठ विचारों और प्रसन्नता के साथ भोजन तैयार करना चाहिये।

नारी शिक्षा की महत्ता

आज जहाँ टेलीविजन, विज्ञापन, फिल्म, मीडिया तथा घासलेटी-भड़कीले साहित्य के द्वारा नारी को अत्यन्त विकृत और अश्लील रूप में प्रदर्शित किया जा रहा है, वहाँ एक धर्मपरायण भारतीय नारी के लिए अपनी मान-मर्यादाओं, उज्ज्वल परम्पराओं तथा आत्म-गौरव को बनाए रखना मुश्किल किन्तु नितान्त अनिवार्य हो गया है। इसके लिए हमारे शाश्वत उदात्त जीवन मूल्य, संयमित जीवन शैली तथा नैतिक शिक्षण की उपयोगिता व अर्थवत्ता स्वयंसिद्ध है। आचार्य श्री हस्ती के शब्दों में - “यदि पुत्र को सुसंस्कृत नहीं बनाया जाए तो सिर्फ एक घर की हानि होगी, किन्तु यदि बालिका में सुसंस्कार नहीं दिये जाएँ तो पितृघर और श्वसुरगृह दोनों को धक्का लगेगा तथा भावी संतानों पर भी कुप्रभाव पड़ेगा। अतः लड़की के शिक्षण-संस्कार पर अधिक ध्यान देना चाहिये।” आचार्यश्री अन्यत्र कहते हैं - “लड़कियों की शिक्षा के साथ आपकी यह जिम्मेदारी है कि उनका जीवन सदाचारी रहे और व्यावहारिक शिक्षा के साथ उन्हें नैतिक और धार्मिक शिक्षा भी मिले।” आज नारी शिक्षा के क्षेत्र में तो उत्साहवर्द्धक कीर्तिमान स्थापित कर रही है, किन्तु संस्कारों में आ रही गिरावट बहुत चिन्ताजनक है।

एक शिक्षित, संस्कारित और सुशील नारी न सिर्फ एक परिवार अपितु कई पीढ़ियाँ बचा लेती है। परिवार की धुरी नारी ही परिवार को बचा सकती है और परिवार बचेगा तो समाज और देश भी बचेगा। वर्तमान का दूषित वातावरण, हमारी शिक्षा-पद्धति और सम्बन्धित राजकीय नीतियाँ भारतीय नारी की गरिमामय छवि को कितना अक्षुण्ण रख पा रही हैं और रख पाएँगी, इसका निर्णय पाठक स्वयं करें और आत्म-चिन्तन कर सही दिशा में कुछ अवश्य करें।

सदुपयोग-दुरुपयोग

साध्वी युगल-निधि कृपा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० जून २००८ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्री मनोजकुमार जी, कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

किसी भी वस्तु का उपयोग दो प्रकार से होता है। एक है Best और दूसरा है Waste यानी सही और गलत तरीके से वस्तु का उपयोग हो सकता है। इसीलिए तो वस्तु की प्राप्ति का इतना महत्त्व नहीं है जितना कि उसके उपयोग का है। इस संसार में सभी इतने पुण्यशाली नहीं होते कि जिनको हर वस्तु प्राप्त हो जाए। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि जिन्हें वस्तुओं का योग तो मिल जाता है परन्तु उन्हें संभालने की कुशलता उनमें नहीं होती।

एक गाँव में दो मित्र रहते थे। दोनों में प्रेम की प्रगाढ़ता इतनी थी कि वे जहाँ भी जाते, साथ ही जाते थे। एक बार वे दोनों प्रदर्शनी देखने शहर में गए। वहाँ उन्होंने दो यन्त्र देखे; एक सूक्ष्मदर्शी यन्त्र और दूसरा था दूरदर्शी यन्त्र। सूक्ष्मदर्शी यन्त्र के माध्यम से छोटी से छोटी वस्तु बड़ी दिखाई देती थी और दूरदर्शी यन्त्र से दूर की चीजें भी पास दिखाई देती थी। दोनों ने यन्त्र खरीद लिए और अपने घर लौट आए। दूसरे ही दिन से दोनों ने यन्त्र का प्रयोग शुरू कर दिया।

एक मित्र ने सूक्ष्मदर्शी यन्त्र का पहला प्रयोग घर के किसी कोने में किया तो पाया कि मिट्टी के छोटे-छोटे कण कचरे की भाँति दिखाई दे रहे हैं। उसने नौकरों को बुलाकर डाँटते हुए कहा- “क्या तुम्हें सफाई करनी नहीं

आती? रोज घर की सफाई करते हो फिर भी इतनी मिट्टी है?” फिर उसने यन्त्र का दूसरा प्रयोग भोजन करते समय किया। वह देखकर हैरान रह गया कि थाली में रखी हुई रोटी तो सारी जली हुई हुई है, क्योंकि रोटी पर पड़ा हुआ छोटा सा दाग उसे बहुत बड़ा दिखाई देने लगा। आवेश में आकर उसने पत्नी को फटकारा और खाना छोड़कर घर से बाहर बरामदे में आ गया।

तब उसने दूरदर्शी यन्त्र को पहना और देखा कि बरामदे के बाहर जो कचरे का ढेर पड़ा था वह ऐसा प्रतीत हुआ कि सारा कचरा घर के आँगन में पड़ा है। फिर उसने घर से दूर बहती हुई नाली को देखा तो ऐसा महसूस हुआ कि वह गंदी नाली उसके घर में ही बह रही है। यह सब नजारे देखकर अब तो उसके गुस्से की सीमा ही नहीं रही। उसने दोनों यन्त्र हाथ में लिए और जमीन पर पटककर तोड़ डाले।

दूसरे दिन उसने सोचा कि मेरे मित्र ने भी ये दो यन्त्र खरीदे थे, वह बेचारा कितना दुःखी होगा। यह सोचकर वह मित्र के घर पहुँचा। उसने देखा कि उसका मित्र तो बहुत प्रसन्न था और उसकी प्रसन्नता का कारण वे दोनों यन्त्र ही थे, यह सुनकर उसे बड़ी हैरानी हुई।

तब उसके मित्र ने बताया- “मित्र! मैं सूक्ष्मदर्शी यन्त्र को दुकान में पहनता हूँ, जिससे मुझे ज्ञात हो जाता है कि किस हीरे में कितना अंश कचरे का है। इस तरह यन्त्र के प्रयोग से मेरा जवाहरात का काम खूब बढ़ गया है। दूरदर्शी यन्त्र को मैं अपने घर में पहनता हूँ; जब थककर घर लौटता हूँ तब मेरे घर के पीछे बहने वाली नदी और सुन्दर बगीचे का दृश्य इस यन्त्र से देख लेता हूँ तब मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मैं घर में नहीं हूँ, किसी स्वर्गलोक में बैठा हूँ।” यह सुनकर मित्र को अपने दुःख का कारण और मित्र की प्रसन्नता का राज समझ में आ गया।

किसी भी वस्तु का सत्प्रयोग ही व्यक्ति को सुखी बनाता है। जीवन का योग मिल गया तो सब कुछ मिल गया ऐसा मत समझो। जीवन का उतना ही मूल्य है जितना हम उसमें पैदा करेंगे। यदि आपके पास स्वर्ण की ईंटें हैं तो उसका उपयोग उसे संभालकर रखने में नहीं, अपितु सही प्रयोग करने में है। उपयोग के अभाव में ईंट चाहे सोने की हो या पत्थर की, इससे क्या फर्क

पड़ता है।

- 'जीवन पाथेय' पुस्तक से साभार

प्रश्न

१. आप अपनी बुद्धि का बेस्ट एण्ड वेस्ट उपयोग कैसे करते हैं? समझाइये।
२. दूसरा मित्र उन दोनों यन्त्रों को पाकर प्रसन्न क्यों था?
३. 'शाली' प्रत्यय जोड़कर चार शब्द बनाइये।
४. अर्थ बताइये - कुशलता, प्रगाढता, दाग, आवेश, हैरान।
५. आपको यदि २०० रुपये पॉकेट मनी मिले तो आप उसका सदुपयोग कैसे करेंगे?

बाल-स्तम्भ [मार्च-२००८] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-२००८ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'मृत्यु का विचार : बदले आचार' कहानी के प्रश्नों के उत्तर ३१ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक २० में से दिये गये हैं

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	अक्षिता जैन-जोधपुर	२०
द्वितीय पुरस्कार-२००/-	पल्लवी जैन-जोधपुर	१९
तृतीय पुरस्कार-१५०/-	मंजू पारलेचा-जोधपुर	१८.५
सान्त्वना पुरस्कार-१००/-	सेजल भंसाती-जलगाँव	१८
	शिल्पा जैन-रतकुड़ियां	१८
	दर्शना जैन-जोधपुर	१८
	गरिमा जैन-कोटा	१८
	मीनाक्षी जैन-नागौर	१८

कहानी प्रतियोगिता हेतु सूचना

विद्वान् लेखकों एवं बाल रचनाकारों से निवेदन है कि वे जिनवाणी में प्रकाशनार्थ अच्छी कहानियाँ भिजवाएँ। श्रेष्ठ कहानियों को पुरस्कृत किया जाएगा। कहानी आगमिक हो अथवा नैतिक जीवन मूल्यों की संवाहक होनी चाहिए। कहानी की भाषा प्रभावी एवं अक्षर सुस्पष्ट होना चाहिए। श्रेष्ठ कहानियों को जिनवाणी में प्रकाशित किया जाएगा। -सम्पादक

प्रभावशाली नमस्कार मुद्रा

श्री चंचलमल चोरडिया

दोनों हाथों की हथेलियों की पाँचों अंगुलियों से कोहनी तक के भाग का आपस में स्पर्श करने से नमस्कार मुद्रा बनती है। हथेली में सुजोक एवं हैण्ड रिफ्लेक्सोलॉजी एक्यूप्रेसर के सिद्धान्तानुसार शरीर के प्रत्येक भाग के प्रतिवेदन बिन्दु होते हैं और जब दोनों हथेलियों को मिलाते हैं तो हथेली के चारों तरफ का आभा मंडल संतुलित होने लगता है, जिससे सभी अंगों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह होने लगता है, आवेग शांत होने लगते हैं। इसी कारण हमारे यहाँ एक लोकोक्ति है— “हाथ जोड़ो - गुस्सा छोड़ो” अर्थात् हाथ जोड़कर क्रोध नहीं किया जा सकता।

ज्योतिष में हस्त रेखा विज्ञान के अनुसार हथेली में व्यक्ति के सम्पूर्ण ग्रहों की स्थिति होती है। हस्त रेखा विशेषज्ञ हथेली का आकार एवं विभिन्न रेखाओं की स्थिति देखकर मनुष्य के भविष्य की घटनाओं को बताने में सक्षम होते हैं। मुद्रा साधक हाथों की अंगुलियों और अंगूठों को अलग-अलग ढंग से आपस में निश्चित समय तक स्पर्श कर पंच तत्त्वों को संतुलित कर विभिन्न रोगों का उपचार करते हैं। नाखूनों की बनावट एवं उनके रंगों के आधार पर मनुष्य के स्वभाव के बारे में जाना जा सकता है। हथेली की अंगुलियों में तरह-तरह के रत्न एवं विशिष्ट पत्थर अंगूठियों में पहनने से रत्न चिकित्सा के सिद्धान्तानुसार उन रत्नों की तरंगों का प्रभाव सभी स्तर पर पड़ने लगता है। जिससे न केवल रोगों का उपचार होता है अपितु प्रतिकूल ग्रह नक्षत्रों की स्थिति को नियन्त्रित किया जा सकता है। जब दोनों हथेलियों को आपस में मिलाते हैं तो अशुभ ग्रहों का प्रभाव कम होने लगता है।

धातु विशेषज्ञ अलग-अलग ग्रहों की शांति के लिए हथेली की अंगुलियों में सोने, चाँदी, तांबे, लोहे जैसी अलग-अलग धातुओं की बनी अंगूठियों में अलग-अलग रत्नों को पहनने पर जोर देते हैं।

हथेली की अंगुलियों में प्राण ऊर्जा का विशेष प्रवाह होता है। इसी कारण रेकी, प्राणिक हीलिंग द्वारा उपचार एवं आशीर्वाद हथेली से ही दिया जाता है।

चीनी पंच तत्त्व सिद्धान्तानुसार हृदय, फैंफड़े, पेरीकार्डियन(मस्तिष्क) मेरेडियन एवं उसके सहयोगी पूरक अंग छोटी आंत, बड़ी आंत, ट्रिपल वार्मर

(मेरुदण्ड) की पाँच प्रमुख ऊर्जाओं (वायु, ताप, नमी, शुष्कता एवं ठण्डक) के मुख्य प्रतिवेदन बिन्दु हथेली और कोहनी के बीच होते हैं। मेरेडियन की दांये और बांये शरीर में समान स्थिति होने से उनमें प्रवाहित ऊर्जाओं का असंतुलन रोगों का मुख्य कारण होता है। परन्तु नमस्कार मुद्रा द्वारा जब दोनों हथेलियों से कोहनी तक को आपस में मिलाया जाता है तो इन मेरेडियनों में पाँचों ऊर्जाओं का संतुलन होने लगता है। परिणाम स्वरूप शरीर में दांये-बांये संतुलन होने लगता है। रक्तचाप सामान्य हो जाता है। श्वसन तंत्र बराबर कार्य करने लगता है। इस मुद्रा से डॉयफ्राम के ऊपर स्थित हृदय, फैंफड़े और मस्तिष्क संबंधी सभी रोगों में विशेष लाभ होता है। हाथों एवं कंधों के रोगों में तो इस मुद्रा के चामत्कारिक परिणाम आते हैं।

वैसे तो अधिकांश मुद्राओं को लगभग 48 मिनट करने से पूर्ण लाभ-प्राप्त होता है। परन्तु प्रारम्भ में अभ्यास के रूप में दो मिनट से धीरे-धीरे समय को बढ़ाया जा सकता है। जब तक पूर्ण अभ्यास न हो, थोड़े-थोड़े अन्तराल में इस मुद्रा को पुनः पुनः किया जा सकता है। यदि एक साथ ऐसा करना भी संभव न हो तो प्रत्येक घंटे में मात्र 5 मिनट इस मुद्रा को करने मात्र से, असाध्य रोगों में भी छह-सात दिनों में ही काफी स्वास्थ्य लाभ का अनुभव किया जा सकता है। इस मुद्रा को बायें, दायें ऊपर, शरीर को मोड़कर कुछ देर तक अलग-अलग स्थिति में करने से इसका प्रभाव बढ़ जाता है।

गोदुहासन में नमस्कार मुद्रा :- दोनों घुटनों को मिलाकर पंजों पर बैठने की



स्थिति को गोदुहासन कहते हैं। पैर की अंगुलियाँ और अंगूठा स्वनियन्त्रित नाड़ी संस्थान को नियन्त्रित करते हैं। इस आसन में बैठने से मेरुदण्ड प्रायः सीधा रहता है। नाड़ी संस्थान पर दबाव पड़ने से उससे संबंधित असंतुलन दूर होता है और नाड़ी संबंधी सभी रोगों में आराम मिलता है। कमर, घुटनों, पैरों अथवा गर्दन संबंधी सभी रोगों में इस आसन से लाभ होता है। गोदुहासन से पैर, रीढ़, कंधों का संतुलन ठीक होता है और मानसिक एकाग्रता बढ़ती है। भगवान् महावीर को केवल ज्ञान इसी आसन में ध्यान करते हुए हुआ। इस आसन का अभ्यास भी धीरे-धीरे बढ़ाया जा सकता है। इस आसन में नमस्कार मुद्रा करने से सभी रोगों का उपचार और अधिक प्रभावशाली हो जाता है।

नमस्कार मुद्रा में नमस्कार मंत्रोच्चारण—

मंत्रचयनित शब्दों के समूह का ध्वनि की तरंगों की निश्चित गति एवं ताल के साथ उच्चारण होता है जिससे विशेष प्रकार की ऊर्जा का प्रवाह होता है। मंत्रोच्चारण से आभा मंडल शुद्ध होता है। फलतः मन, मस्तिष्क एवं शरीर के विकार दूर होने लगते हैं। मंत्र न केवल स्थूल, अपितु सूक्ष्म शरीर को भी प्रभावित करता है।

शरीर में ऊर्जा चक्रों की ऊर्जा के प्रवाह में आए हुए अवरोध मंत्र की तरंगों से दूर होने लगते हैं, प्रायः हम अपनी क्षमताओं का एक प्रतिशत भी उपयोग नहीं करते। मंत्रोच्चारण से मस्तिष्क का निष्क्रिय भाग सक्रिय होने लगता है जिससे हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता, समझ एवं सजगता बढ़ने लगती है। मंत्र शरीर और मानसिक स्वास्थ्य को अच्छा रखने का सरल आध्यात्मिक उपाय है।

मंत्रोच्चारण का प्रभाव व्यक्ति के श्रद्धापूर्वक उच्चारण एवं आन्तरिक उत्साह के अनुरूप होता है। मंत्रोच्चारण दिखावटी और थोपा हुआ नहीं होना चाहिए। अक्षर पौद्गलिक होते हैं, उनमें स्वयं में कोई शक्ति नहीं होती। परन्तु जब उसके साथ मन की श्रद्धा का संयोग हो जाता है तो उसमें शक्ति का प्रादुर्भाव होने लगता है। मन की एकाग्रता, निष्ठा, श्रद्धा ही मंत्र की शक्ति को जागृत करने में सर्वाधिक भूमिका निभाती है।

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवञ्जायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं

इन पाँच पदों में 'णमो' के 'मो' शब्द को एवं पाँच पदों में अंतिम शब्द 'णं' को जितना लम्बा उच्चारण कर सकें, उच्चारण करें। णमो के उच्चारण के पश्चात् पूर्ण गहरा श्वास लेने के पश्चात् प्रत्येक पद का उच्चारण करें। इस विधि द्वारा उच्चारण करने से गले में स्थित थॉयराइड एवं पेराथॉयराइड ग्रन्थियाँ तथा सिर में स्थित पीयूष और पीनियल ग्रन्थियाँ सक्रिय होने लगती हैं। जिन्हें पाँचों पद याद न हों वे मात्र 'णमो अरिहंताणं' का इस विधि से जाप करने पर मंत्र चिकित्सा का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। व्यक्ति का सोच सकारात्मक, मनोबल दृढ़, रोग प्रतिरोधक

क्षमता बढ़ जाती है और शरीर में सुरक्षा कवच का निर्माण होने लगता है। उच्चारण में किसी भी प्रकार की जोर जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए। एक लय में सहज धीरे-धीरे उच्चारण को बढ़ाने का अभ्यास करना चाहिए। जितना लम्बा उच्चारण होगा, उतना ही अधिक लाभ मिलेगा। इस तरह जितनी देर कर सकें निरन्तर अभ्यास करें, परन्तु कम से कम १५ मिनट का जाप अवश्य करना चाहिए।

नमस्कार मुद्रा एवं गोदुहासन में नमस्कार मंत्र के उच्चारण से सभी प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोग चन्द्र दिनों में ही समाप्त होने लगते हैं। अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है, अतः स्वस्थ एवं रोगी कोई भी अपनी क्षमतानुसार इसे आसन, मुद्रा और मंत्रोच्चारण के साथ अथवा अलग कर सकते हैं। अन्य चिकित्सा करते हुए भी इसे किया जा सकता है। जिससे वे उपचार अत्यधिक प्रभावशाली हो सकते हैं।

सारांश यही है कि नमस्कार मुद्रा में किए गए आसन, प्राणायाम, अंग-व्यायाम, ध्यान, कायोत्सर्ग, भजन, कीर्तन, जप आदि शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अधिक प्रभावशाली हो जाते हैं एवं इसका प्रभाव तत्काल अनुभव किया जा सकता है। चाहे बालक हो या वृद्ध, संत हो या गृहस्थ, यह मुद्रा सबके लिए करणीय है। पानी पीने से प्यास और खाना खाने से भूख शांत होती है, ठीक उसी प्रकार नमस्कार मुद्रा का लाभ भी उसका अभ्यास करने वाले को ही मिल सकता है। पाठक गण इस मुद्रा का प्रयोग कर अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करायेंगे तो जनहितकारी इस सरल मुद्रा की जानकारी जन-जन तक पहुँचाने की प्रेरणा मिलेगी।

मद का सच

नगेन्द्र जैन "हैप्पी"

जो लोग करते मद हैं

स्वयं का समझते जो उच्च पद हैं

उनके लिए यही कटु सत्य है

कि उन्हीं का इस संसार में सबसे छोटा कद है।

तो इस मद को जीवन से त्यागो

और गहरी निद्रा से फिर तुम जागो।

-७४७, मिश्रराजा जी का रास्ता, इन्दिरा बाजार, जयपुर-३०२००१

संवाद (92)

मार्च २००८ की जिनवाणी में पूछे गए निम्नांकित प्रश्न के कतिपय उत्तर प्राप्त हुए हैं, जिनमें से कुछ यहाँ प्रकाशित हैं-

९. प्रश्न-मेरे पास पर्याप्त सम्पत्ति है, परिवार की भी अनुकूलता है, शरीर भी ठीक है, समाज में भी प्रतिष्ठा है, फिर भी मन में शान्ति नहीं रहती है। इसका क्या कारण है?
-चिन्तन (काल्पनिक नाम)

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर- सम्पूर्ण जगत् कार्य-कारण की शृंखला में बन्धा हुआ है। यहाँ कारण के अनुरूप ही कार्य संघटित होता हुआ देखा जाता है, जैसे- मिट्टी से घट का, तिल से तेल का, बीज से वृक्ष का निर्माण होता है। कभी भी तिल से घट का निर्माण और मिट्टी से तेल पैदा नहीं होता। ठीक ऐसे ही शान्ति का सम्बन्ध जगत् की बाह्य वस्तुओं से नहीं है, इसका सम्बन्ध अन्तर से है, भीतर से है।

मानव की दृष्टि बाह्य पदार्थों में ही उलझी हुई है, उसे लगता है धन पाने में, प्रतिष्ठित होने में, अनुकूलता में सुख और शान्ति है। इसमें उसका दोष नहीं है, यह तो आस-पास के वातावरण का प्रभाव है। क्योंकि उसने आँखें खोली जबसे लोगों को धन और भौतिक पदार्थ पाने की लालसा में ही सुख मानते हुए सुना और समझा है। उसी का प्रभाव है कि वह इन विचारों से ऊपर उठकर नहीं देखता है।

जिस दिन व्यक्ति को यह समझ में आ जाए कि शान्ति रूपी फल के बीज इन भौतिक पदार्थों में नहीं हैं। ये बीज मन की पवित्रता में हैं, त्याग में हैं, राग-द्वेष की न्यूनता में हैं, क्रोध-मान-माया-लोभ की समाप्ति में हैं तो इन कारणों की समाप्ति के लिए उठाया एक-एक कदम आपको शान्ति की ओर ले जाने वाला होगा।

‘मन एव मनुष्याणं कारणां बन्धमोक्षयोः’ संस्कृत की इस सूक्ति में गहरे भाव भरे हैं। मन ही हमारे बन्धन अर्थात् अशान्ति का और मन ही हमारे मोक्ष अर्थात् शान्ति का कारण है। इसलिए मन को समझना उन कारणों को समझना है जो हमारी शान्ति में बाधक हैं।

मन पर कई जन्मों के राग-द्वेष के संस्कारों का अंकन है। जितनी-जितनी मात्रा में ये संस्कार मिटते हैं व्यक्ति के मन की शान्ति उतनी-उतनी बढ़ती जाती है। अब यह समझना आवश्यक है कि ये संस्कार मिटें कैसे ? इसके लिए भगवान् महावीर ने जो पथ अपनाया वही हमें भी अपनाना होगा और वह है-ध्यान का मार्ग।

ध्यान का स्वरूप क्या और कैसा होता है इसके लिए ‘वीतराग योग ध्यान शिविर’ में भाग लीजिये।

पुष्पा मेहता, पीपाड़ सिटी- सब कुछ होते हुए भी हम अपने आपको अशान्त

महसूस करते हैं। इन सबका कारण है- मन की अधीनता, परतन्त्रता एवं इन्द्रियों पर असंयम। हम यह चिन्तन करें कि हमें जो साधन-सत्ता प्राप्त हुई है, वह नाशवान है, क्षणिक है, पौद्गलिक है और इन सबका परिवर्तन अवश्य होता है। प्राप्त सामग्री को सुरक्षित रखने का डर सभी में रहता है तथा एक-दूसरे से ज्यादा धन-सम्पत्ति प्राप्त करने की चाह भी मन को अशान्त बनाती है। सम्पत्ति का मोह, पारिवारिक एवं स्वार्थ के रिश्ते का लगाव, नाशवान शरीर पर अपार आसक्ति तथा पद-प्रतिष्ठा की निरन्तर भूख भी हमारे मन को अशान्त बनाती रहती है। विषय लोलुपता एवं इन्द्रियों का असंयम मन की अशान्ति का प्रमुख कारण है। हाथी को वश में रखने के लिए अंकुश का प्रयोग किया जाता है। उसी तरह हम भी अपने मन को वश में रखने के लिए इन्द्रियों पर संयम रखें। संयम से शान्ति की प्राप्ति संभव है।

नेमीचन्द्र कटारिया, अजमेर- जब मनुष्य धन-सम्पत्ति, परिवार, शरीर, सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है तो अपने आपको सर्व शक्तिमान मान लेता है और घमण्ड करने लग जाता है। इन भौतिक सुखों की प्राप्ति पूर्व पुण्योदय से होती है। विवेकहीन व्यक्ति इनमें इतना आसक्त हो जाता है कि करणीय-अकरणीय का विवेक खो देता है। जितने भी भौतिक सुख हैं वे एक न एक दिन नष्ट होने वाले हैं। यदि इनका उपयोग सत्कार्यों में किया जाए तो यह संसार तिराने वाला बन सकता है। इसके विपरीत इनका ऐश, आराम में व्यय करना कर्मबंध का कारण बन जाता है और वह मन को अशान्त कर देता है।

मनुष्य में देव, गुरु, धर्म पर श्रद्धा के अभाव में मन अशान्त हो जाता है। अरिहन्त, सिद्ध पंच महाव्रतधारी संत-मुनिराजों में से अधिकतर सभी वैभव सम्पन्न थे। राजा-महाराजा जिनके पास अटूट सम्पत्ति धन-वैभव था, सबको छोड़कर संन्यास लिया और सारी अनुकूलता का उपयोग शाश्वत सुख पाने में लगा दिया और अजर, अमर, सिद्ध, बुद्ध, निरंजन, निराकार बने।

मन को अशान्त होने से बचाने का सबसे अच्छा उपाय है सामायिक-स्वाध्याय। जब हम सामायिक में बैठते हैं तो सभी सावद्य योगों का त्याग किया जाता है जिसमें सभी भौतिक सुखों का त्याग किया जाता है, मन समभाव में रमण करने लग जाता है। जब इनसे ममत्व हटेगा तो दान, शील, तप की भावना जागृत होगी। स्वाध्याय से करणीय-अकरणीय का ज्ञान प्राप्त होगा, भक्ष्य-अभक्ष्य, हिंसा, अस्तेय, चोरी, मैथुन, परिग्रह आदि का ज्ञान सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में समझ लेने से नये कर्मों का बंध नहीं होगा। फिर व्यक्ति सोचेगा कि संसार के सब साधन एक न एक दिन छोड़ने ही पड़ेगे, तो मन आकुल-व्याकुल नहीं होगा और मन शान्त बना रहेगा।

कृति की २ प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



डॉ. धर्मचन्द्र जैन

षोडशकप्रकरणम्- सम्पादक-अनुवादक - प्रोफेसर भागचन्द्र जैन
'भास्कर' प्रकाशक - (१) पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड़, करौंदी,
वाराणसी- २२१००५, दूरभाष : ०५४२-२५७५५२१, २५७५८९० (२)
प्राकृत भारती अकादमी, १३-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-३०२०१५, पृष्ठ
२०+२४०, मूल्य-३०० रुपये, सन् २००७

जैनाचार्य हरिभद्रसूरि (ई. आठवीं शती) महान् दार्शनिक, टीकाकार एवं उद्भट साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। इनके अनेक मौलिक ग्रन्थ हैं। षोडशकप्रकरण उनका ऐसा ग्रन्थ है जिससे १६ प्रकरण हैं तथा प्रत्येक प्रकरण में १६-१६ श्लोक हैं। षोडशकप्रकरण में सद्धर्म का स्वरूप, देशना-विधि, धर्मतत्त्व के लक्षण, मन्दिर निर्माण आदि विषयों का प्रतिपादन है। षोडशकप्रकरण का यह प्रकाशन यशोभद्रसूरि के विवरण एवं यशोविजय की दीपिका वृत्ति तथा मूल श्लोक के हिन्दी अनुवाद के साथ हुआ है। हिन्दी अनुवाद प्रोफेसर भागचन्द्र जी जैन 'भास्कर' ने प्रामाणिकता से किया है। इस कृति में पुष्टि एवं शुद्धि दोनों के होने पर मोक्ष बतलाया है तथा पुण्य के उपचय को पुष्टि तथा पाप के क्षय से प्राप्त निर्मलता को शुद्धि कहा गया है, यथा-

पुष्टिः पुण्योपचयः शुद्धिः पापक्षयेण निर्मलता।

अनुबन्धिनि द्वयेऽस्मिन् क्रमेण मुक्तिः परा ज्ञेया ॥३.४

Jaina Religion : It's Historical Journey of Evolution- Prof. Sagar mal Jain (Translated by Dr. Kamla Jain), Publisher- Parshwanath Vidyapeeth, ITI Road, Karaundi, Varanasi- 221005, Phone-0542-2575890, Pages 8+116, Price- Rs. 100/- \$ 5.00, Year 2007

Jain religion has travelled a long period with its alive existence. Prof. Sagarmal Jain wrote a book in Hindi namely "Jaina Dharma kī Aitihāsika Vikāsayātra" which was published by Prachya vidyapeeth, Dupada Road, Shajāpur-465001(M.P.) Dr. Kamla Jain has done a useful great task to render it into English in a very lucid and authentic manner. This English book seems more valuable because it consists some important

photographs and it has been divided in to four chapters. Chapter-I deals with historical Journey of evolution. Chapter-2 describes the history of nirgranth tradition. Chapter-3 analyses the impact of vedic tradition on Jainism and the chapter-4 evaluates the contribution of Jainas in the field of Art and Literature during medieval period. The book is not merely a translation, but it seems like an original piece of work.

बादाम का पेड़

श्री ऋषभ राज बाफणा

बादाम का पेड़ ठीक घर के सामने खड़ा है
 हँसता हुआ छाती फुलाके मस्त होकर अड़ा है
 फागुन मास में एकाएक सब पत्ते पीले हो गए
 उसकी यह हालत देख मेरे नयन गीले हो गए
 हवा के एक झोंके से केवल टहनियाँ रह गईं
 समय बड़ा है मेरे कान में यह बात कह गईं
 गमगीन देखकर बोला, सोचते हो मैं नंगा हो गया हूँ
 पर बात उल्टी है मेरे दोस्त, मैं चँगा हो गया हूँ
 देखना अब शीघ्र ही बहार आने वाली है
 सूर्योदय के पहले ज्यों गगन में खिलती लाली है
 ऋतु में फूल आर्येंगे धरा पर फल भी बरसेंगे
 मिले चोले का कर उपयोग, स्वयं भी बहुत हरषेंगे
 दुपहरी छांव ठण्डी बोलने का मन बनाते हैं
 भरी आँखों से अपने दिल के दुखडों को सुनाते हैं
 बेटे कृतघ्न और माँए कातिल हो गई हैं
 वक्त का यह तमाशा देख मेरी रुह रो रही है
 पुरुषार्थ बल पाकर भी तुम मनन नहीं करते
 आसुरी कृत्यों को रोकने का जतन नहीं करते
 यह सब देख कर भी कह रहे हमें होश है
 'ऋषभ' सुन मेरे भाई मुझे तो बहुत ही अफसोस है।

-एच-२, एम.आई.डी.सी. एरिया, जलगाँव(महा.)

समाचार-विविधा

वि.सं. २०६५ के अब तक स्वीकृत चातुर्मास

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने चैत्र शुक्ला अष्टमी रविवार, दिनांक १३ अप्रैल २००८ को साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ वि.सं. २०६५ के लिए निम्नाङ्कित चातुर्मास घोषित किए हैं-

१. परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी गढ़ सिवाना
म.सा. आदि ठाणा (जिला-बाड़मेर)
२. साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती पावटा, जोधपुर
श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा
३. सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी वैशाली नगर, अजमेर
म.सा. आदि ठाणा
४. व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी अमरावती (महाराष्ट्र)
म.सा. आदि ठाणा
५. तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी मानसरोवर, जयपुर
म.सा. आदि ठाणा

विचरण-विहार एवं संभावित विहार दिशाएँ

१ मई २००८ की स्थिति

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ८- मुम्बई महानगर के घाटकोपर, अंधेरी आदि क्षेत्रों में धर्मोद्योत-धर्मप्रभावना के अनन्तर ९ अप्रैल से २२ अप्रैल तक विले पार्ले (पूर्व) में विराजे, जहाँ प्रत्येक दिन श्रद्धालुओं की संतोषजनक उपस्थिति रही। शनिवार एवं रविवार को सामायिक-साधना एवं धर्माराधना का विशेष स्वरूप नजर आया। २३ अप्रैल को आप विले पार्ले (पश्चिम) स्थित स्थानक भवन में पधारे। यहाँ विरक्ता भाई-बहनों का सप्तदिवसीय आध्यात्मिक साधना शिविर २९ अप्रैल से ६ मई तक आचार्य भगवन्त के आशीर्वचन एवं मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ।

दीक्षा-प्रसंग से मुमुक्षु आत्माओं के परिजनों, संघ पदाधिकारियों एवं दीक्षा अनुमोदनार्थ पधारे श्रद्धालु गुरुभक्तों से वातावरण धर्ममय बना हुआ है। विले पार्ले के ऋतम्भरा कॉलेज में ७ मई को एक मुमुक्षु भाई एवं तीन मुमुक्षु बहिनों की आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। ८ मई को तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर लगभग ५० तपस्वी भाई-बहिनों की उपस्थिति की संभावना है। बड़ी दीक्षा हेतु ठाणा श्रावक संघ पूज्य आचार्यप्रवर के पावन पादाम्बुजों में विनति लेकर १ मई को उपस्थित हुआ। उनकी विनति गत माह से पूज्यश्री के चरणों में अनेक बार आ चुकी है। मुम्बई महानगर एवं ठाणे महापालिका के अनेक उपनगर शेष काल फरसने की विनति कर रहे हैं।

❖ परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ४-सूर्यनगरी के विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान-गंगा प्रवाहित करने के पश्चात् महावीर जन्म कल्याणक के पावन प्रसंग पर महावीर कॉम्पलेक्स, सरदारपुरा में सामूहिक सामायिक-साधना में उपाध्यायप्रवर आदि संत-मुनिराजों के प्रेरक प्रवचन हुए। महावीर जयन्ती के दिन ही उपाध्यायप्रवर ने सामायिक-स्वाध्याय भवन नेहरू पार्क से विहार किया और सरस्वती नगर पधारे। कांकाणी, मोगड़ा, रोहित आदि मध्यान्तर के क्षेत्रों को पावन कर उपाध्यायप्रवर २९ अप्रैल को सुराना मार्केट स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन, पाली पधारे। अक्षय तृतीया एवं आचार्य भगवन्त के स्मृति दिवस तक पाली विराजने की संभावना के कारण पाली में त्याग-तप के कार्यक्रम सुनिश्चित किए जा रहे हैं।

❖ साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा ६- नेहरूपार्क से जालोरी गेट क्षेत्र स्पर्श करते हुए घोड़ों के चौक स्थित स्थानक में पदार्पण हुआ है।

❖ सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४- मदनगंज से हरमाड़ा पधारने के बाद करीब एक पखवाड़ा हरमाड़ा विराजकर महासती-मण्डल ने रूपनगढ़ क्षेत्र संभाला। परबतसर, राबड़ीवास आदि क्षेत्रों से होकर अजमेर की ओर बढ़ने की संभावना है।

❖ व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७- नागपुर के उपनगरों में शासन प्रभावना करते हुए महासती-मण्डल का हिंमनघाट, पाढकरवड़ा, वर्धा होते हुए अमरावती की ओर विहार चल रहा है।

- ❖ तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४-जोधपुर से भोपालगढ़-बारनी-हरसोलाव, गोटन आदि मध्यान्तर के ग्रामों में ज्ञान-गंगा प्रवाहित कर महासती मण्डल का ३० अप्रैल को भक्तिनगरी मेड़ता पदार्पण हुआ। मेड़ता से अब अजमेर एवं तदनन्तर जयपुर की ओर विहार चल रहा है।
- ❖ विदुषी महासती श्री सुशीला कंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७-स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से विहार की स्थिति नहीं होने से अभी अरसीकेरा विराज रहे हैं।
- ❖ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४-कानपुर से आगरा के बीच मैनपुरी, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद आदि मध्यान्तर के क्षेत्रों को पावन करते हुए महासती मण्डल का २३ अप्रैल को आगरा के कमलानगर क्षेत्र में पदार्पण हुआ। आगरा से भरतपुर की ओर बढ़ने की संभावना है।
- ❖ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर म.सा. आदि ठाणा ८-ब्यावर से नानणा, गिरी, हाजीवास, निमाज, कुशालपुर, करमावास, पीपलियां कलां, चंडावल, बगड़ी, सोजत रोड, सोजत सिटी आदि क्षेत्रों को फरसकर तथा महासती श्री समर्पिता जी म.सा. आदि ठाणा ३ अजमेर से पुष्कर, थांवला, मेड़ता, जसनगर, जैतारण होते हुए सोजत रोड पधारे। सोजत रोड से आगे-पीछे पाली की ओर विहार हुआ और २६ अप्रैल को महासती-मण्डल का पाली पदार्पण हुआ है।
- ❖ व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा ५-जोधपुर में महावीर जयन्ती पर विराजने के पश्चात् महासती मण्डल का पाली की ओर विहार हुआ। दिनांक २८ अप्रैल को महासती-मण्डल का पाली पदार्पण हुआ।
- ❖ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ३-कर्नाटक के कुकनूर एवं गदग क्षेत्र में धर्म-प्रभावना कर रहे हैं। धारवाड़ की ओर विहार सम्भावित है।
- ❖ व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा १०-कर्नाटक से महाराष्ट्र क्षेत्रों को पावन करते हुए महासती मण्डल का मुम्बई पदार्पण हो गया है। महासती मण्डल विले पार्ले विराजमान है। व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ३ का भी सूरत से मुम्बई पदार्पण हो गया है एवं सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा

४ का भी पूना, चिंचवड़, वापी आदि क्षेत्रों से मुम्बई पदार्पण हो जाने से अभी महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा १० विले पार्ले विराजमान हैं।

❖ महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ५ का विहार हरिहर (कर्नाटक) की ओर चल रहा है। २५ अप्रैल को शिमोगा पधारे हैं।

मुम्बई महानगर में ७ मई को चार दीक्षाएँ अपूर्व उल्लास के वातावरण में सम्पन्न

परम श्रद्धेय परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से वैशाख शुक्ला द्वितीया बुधवार ७ मई २००८ को ऋतम्भरा कॉलेज, विले पार्ले पश्चिम में चार मुमुक्षुओं ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। जलगाँव के मुमुक्षु श्री मोहनलाल जी धोका, विरक्ता बहिन सुश्री डिम्पल सालेचा-हुबली, विरक्ता बहिन सुश्री रितु जैन-बड़ौदाकान (अलवर), विरक्ता बहिन सुश्री भावना बागरेचा-हैदराबाद ने प्रातः ९.३० बजे पारिवारिक परिजनों की अनुमति एवं संघ पदाधिकारियों की सहमति से दीक्षा पाठ स्वीकार कर श्रमण-जीवन अंगीकार किया है। दीक्षा-स्थल पर लगभग आठ हजार श्रद्धालु जन उपस्थित थे। ३ घंटे की अवधि में शान्ति पूर्ण वातावरण में चले इस भव्य एवं मनमोहक कार्यक्रम की सभी जन हृदय से अनुमोदना कर रहे थे। इस अवसर पर विभिन्न विशेष नियम हुए जिनका विवरण आगामी अंक में दिया जाएगा।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न श्रावक संघ, मुम्बई के तत्त्वावधान में सम्पन्न इस दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत ६ मई को प्रातः मुमुक्षु भाई-बहिनों की शोभायात्रा एवं मध्याह्न में स्वागत-अभिनन्दन कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए।

मुमुक्षु बन्धु श्री मोहनलाल जी धोका की भावना रही कि उनकी दीक्षा पर न कोई कार्ड छपे, न आडम्बर, प्रदर्शन हो। धोका साहब विरक्ता बहिनों के साथ संत-सती दर्शन-वन्दन हेतु भी नहीं गए, अतः उनकी दीक्षा की जानकारी सबको नहीं थी। किन्तु वे विगत कुछ वर्षों से परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की चरण-सन्निधि में रहकर ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और साधना-आराधना में सक्रिय थे।

दीक्षा-महोत्सव का विस्तृत विवरण आगामी अंक में दिया जायेगा।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

‘आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना’

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् संघ के किशोर एवं युवा वर्ग के बालक-बालिकाओं के आध्यात्मिक, शैक्षणिक एवं नैतिक विकास हेतु छात्रवृत्ति योजना के माध्यम से विगत दो वर्षों से प्रयासरत है। इस योजना से २५१ विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

योजनाओं के लाभार्थियों के लिए विशेष शिविर सूचना

योजना के नियमानुसार ग्रीष्मावकाश पंचदिवसीय शिविर २००८ का आयोजन निम्नानुसार किया जा रहा है, सभी लाभार्थियों को शिविर में आवश्यक रूप से उपस्थित होना है।

१. प्रथम वर्ग (वरिष्ठ छात्र) (उच्च माध्यमिक स्नातक/स्नातकोत्तर) १५ जून से १९ जून २००८ तक। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन निश्रामें।

२. प्रथम वर्ग (वरिष्ठ छात्रा) (उच्च माध्यमिक स्नातक/स्नातकोत्तर) १८ मई से २२ मई २००८ तक। व्याख्यात्री महासती आदि ठाणा के पावन निश्रामें, मुम्बई क्षेत्र में।

३. द्वितीय वर्ग (कनिष्ठ वर्ग) कक्षा ९ से कक्षा ११ तक १८ मई से २२ मई २००८ तक परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. की पावन निश्रामें, पाली-मारवाड़ (राज.)।

४. द्वितीय वर्ग (कनिष्ठ छात्रा) कक्षा ९ से ११ तक १८ मई से २२ मई २००८ तक। महासती मण्डल के पावन निश्रामें, पाली-मारवाड़ (राज.) में।

शिविर सम्बन्धित जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र-१. श्री कुशल गोटेवाला-९४६०४४१५७०, २. श्री बुद्धमल बोहरा-९४४४२३५०६५, ३. श्री प्रमोद हीरावत-९३१४५०७३०३, ४. श्री महेन्द्र सुराणा-९४१४९२११६४, ५. श्री राजकुमार गोलेछा-९८२९०२०७४२, ६. श्री प्रवीण कर्णावट-९८२१०५५९३२

छात्रवृत्ति योजना के सभी लाभार्थी अपने ज्ञान को समृद्ध करने हेतु जिनवाणी मासिक पत्रिका में प्रकाशित मासिक प्रतियोगिता ‘बाल स्तम्भ’ एवं त्रैमासिक प्रतियोगिता ‘आओ स्वाध्याय करें’ में अनिवार्य रूप से भाग लेंगे। प्रतियोगिता में वरीयता प्राप्त प्रतियोगियों को प्रोत्साहन पुरस्कार परिषद् द्वारा अलग से प्रदान किया जायेगा। ‘आओ प्रत्याख्यान करें’ पुस्तिका में वर्णित प्रत्याख्यानों में से किन्हीं ११ का

प्रत्याख्यान नियमित रूप से करें।

-कुशल गोटेवाला, अध्यक्ष

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा का अनुकरणीय आदर्श

श्री पी.एस.सुराणा व्यावसायिक क्षेत्र में देश में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। आपका प्रतिष्ठान सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल एटोरनीज अन्तर्राष्ट्रीय लॉ सेन्टर के रूप में एक जाना-माना नाम है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष के रूप में आप जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय हैं वहीं संघ-समाज में विभिन्न प्रवृत्तियों के पोषण एवं कार्यक्रमों की सफल क्रियान्विति में आपका सकारात्मक चिन्तन एवं रचनात्मक योगदान स्तुत्य है। आपके पूज्य पिताश्री संघ सेवी श्रावकरत्न स्व० श्री पारसमल जी सुराणा के सन्तारे की सातवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत कम-से-कम १०० छात्रों को छात्रवृत्ति देने हेतु $१०० \times १२,००० = १२,००,०००/-$ बारह लाख रुपये का चेक समिति के संयोजक को प्रेषित कर स्वधर्मी सहायता के साथ शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। यही नहीं आपश्री ने योजना के ४०० लाभार्थियों को जिनवाणी मासिक पत्रिका की आजीवन सदस्यता हेतु $(४०० \times ५००) २,००,०००/-$ दो लाख रुपये का एक चैक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को प्रेषित कर स्वाध्याय सेवा, श्रुत सेवा के क्षेत्र में आदर्श अनुराग उपस्थित किया है। यद्यपि योजना के लाभार्थियों की संख्या २५१ ही है, भविष्य में ४०० संख्या की संभावना को जानकर आपने सेवा को व्यापक बना दिया। श्री पी.एस.सुराणा, श्रीमती लीलावती सुराणा, श्री विनोद सुराणा एवं श्रीमती रश्मि सुराणा के सार्थक सद्प्रयास, प्रोत्साहन, वात्सल्य एवं सहयोग के लिए हार्दिक अभिनन्दन व आभार। - कुशल गोटेवाला, अध्यक्ष-युवक परिषद्

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा २७ जुलाई ०८ को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा १ से १४ तक की आगामी परीक्षा २७ जुलाई २००८, रविवार को दोपहर १२.३० से ३.३० बजे तक आयोजित की जाएगी। आवेदन करने की अन्तिम तिथि १० जुलाई २००८ है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- सुशीला बोहरा, संयोजक, अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन नं. ०२९१-२६३०४९०, मो. ९४१४१३३८७९

महावीर जयन्ती पर सामूहिक सामायिक-साधना

भगवान् महावीर जन्म-कल्याणक महोत्सव समिति के तत्त्वावधान में महावीर जयन्ती पर प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी सामूहिक सामायिक-साधना का कार्यक्रम श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् जोधपुर द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सकल जैन समाज ने भाग लिया। १८ अप्रैल को प्रातः ७ बजे के पूर्व शहर एवं विभिन्न उपनगरों से श्रावक-श्राविकाओं, युवक-युवतियों एवं बालक-बालिकाओं ने महावीर कॉम्प्लेक्स पहुँच कर प्रातः ७ से ८ बजे तक सामायिक की। श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र मुनि जी म.सा. ने भगवान् महावीर के परिचय से लेकर सिद्धान्तों एवं वर्तमान प्ररिप्रेक्ष्य में महावीरत्व जगाने जैसे विषयों पर गहन चिन्तन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर साध्वीप्रमुखा शासन प्रभाविका महासती श्री मैना सुन्दरी जी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा., महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। एक घंटे के कार्यक्रम में सकल जैन समाज के आबाल-वृद्ध भाई-बहिनो ने शान्तभाव से प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। प्रवचन के पश्चात् एवं मंगल पाठ के पूर्व सामूहिक नियम के अन्तर्गत मांसाहारी होटलों का त्याग रखने का संकल्प लिया गया।

अनुकरणीय विहार सेवाएं

■ परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के जोधपुर से पाली तक विहार में कई संघ-सेवियों ने भक्तिभावना से विहार-सेवा का लाभ लिया, किन्तु सुश्रावक श्री मूलचन्द जी बाफना ने जोधपुर से पाली तक नंगे पांव विहार-सेवा का अनुपम आदर्श उपस्थित किया। सुश्रावक श्री मूलचन्द जी लुणावत ने भी कुछ दिनों के लिए नंगे पांव विहार सेवा का लाभ लिया।

■ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के आगरा की ओर विहार में कन्नौज शहर के श्री पुष्पराज जी, श्री सुशीलकुमार जी, श्री मनोज कुमार जी, श्री दीपक कुमार जी ने साधु मर्यादानुसार २० दिन नित्य आवागमन के साथ विहार-सेवा का विशेष लाभ लिया। सुश्राविका श्रीमती लाडकंवर जी लोढ़ा ने महीने भर साथ रहकर विहार का आदर्श उपस्थित किया।

-मनमोहनचन्द बाफणा, कानपुर

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर में उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश का स्वर्णिम अवसर

राजस्थान तथा अन्य क्षेत्रों से १०वीं, १२वीं बोर्ड की परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण छात्रों का जीवन सुखद, समुज्ज्वल एवं यशस्वी बनाने के लिए यह संस्थान स्वर्णिम अवसर प्रस्तुत कर रहा है।

इस संस्था के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं- ❀ व्यावहारिक शिक्षण बी.ए., एम.ए. एवं पी-एच.डी. के साथ जैन धर्म व दर्शन, संस्कृत-प्राकृत आदि के उच्च स्तरीय विद्वान् तैयार करना। ❀ सन्त-सतियाँ जी म.सा. को अध्यापन कराने वाले प्रतिभा सम्पन्न पण्डित तैयार करना। ❀ शिविर में कुशल नेतृत्व कर सके, ऐसे अध्यापक तैयार करना। ❀ धार्मिक पाठशालाओं का नियमित संचालन करें, ऐसे शिक्षक तैयार करना।

ऐसी मानसिकता के द्वारा कुशल शिल्पी से गढ़े जाने पर ये छात्र भविष्य में जैन समाज के चमकते सितारे बनते हैं- यह तो संस्थान की पूर्व गतिविधियों द्वारा सभी को ज्ञात ही है।

संस्थान में छात्रों को प्राप्त होने वाली सुविधाएँ- ❀ भोजन, आवास व शिक्षण की निःशुल्क-व्यवस्था। ❀ ज्ञानवर्द्धक, तार्किक व मौलिक पुस्तकों से युक्त वाचनालय। ❀ योग्य छात्रों को प्रतिवर्ष संस्थान की अनुमति से छात्रवृत्ति प्रदान किया जाना। ❀ अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण की व्यवस्था।

जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान में प्रवेश पाने हेतु नियम- ❀ इच्छुक छात्र के न्यूनतम ६० प्रतिशत अंक होना अनिवार्य है। विशेष परिस्थितियों में छात्रों को प्रवेश दिया जा सकता है। ❀ व्यावहारिक शिक्षण का विषय कला वर्ग (आर्ट्स) ही होना चाहिए। ❀ ऐच्छिक विषयों में संस्कृत लेना अनिवार्य है।

संस्थान के नियमों का पालन करना अत्यावश्यक है। संस्थान में परिश्रमी, सेवाभावी, अनुशासनप्रिय तथा प्रतिभा-सम्पन्न छात्रों को ही प्रवेश दिया जाता है। धार्मिक, व्यावहारिक अनुशासित प्रणाली के द्वारा बच्चों को जीवन-निर्माण के सुन्दर संस्कार इस संस्थान में दिये जाते हैं।

संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पंचवर्षीय पाठ्यक्रम एवं बी.ए. करने के उपरान्त विद्यार्थी की नियुक्ति की पूर्ण सम्भावना है।

संस्थान में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखें-

➔समस्त प्रमाणपत्रों की फोटो-प्रति प्रेषित करें। ➔ सम्पर्क सूत्र, दूरभाष नम्बर प्रेषित करें। ➔अपना पूर्ण बायोडेटा भी प्रेषित करें, जिसमें-१. नाम २. पिता का नाम ३. गोत्र ४. जन्मतिथि ५. निवास स्थान का पता ६. धार्मिक योग्यता ७. पिछले दो वर्षों में विद्यालय की परीक्षाओं में प्राप्त अंकतालिका की प्रति ८. आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा अगर कोई परीक्षा पास की हो तो उसका विवरण हो।

समस्त पात्रता होने पर प्रमाण-पत्र सहित विद्यार्थी स्वयं २८ मई २००८ तक उपस्थित हो सकते हैं।

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, बजाज नगर स्थित साधना भवन से १३ अप्रैल, २००८ को जे.एल. एन. मार्ग (विद्या आश्रम स्कूल के सामने) आचार्य हस्ती भवन, दैनिक भास्कर कार्यालय के पास, स्थानान्तरित हो गया है। सम्पर्क सूत्र- श्रीमती प्रेमलता सुराणा, अधिष्ठाता-श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, आचार्य हस्ती भवन, जे.एल.एन. मार्ग, दैनिक भास्कर कार्यालय के बगल में, जयपुर (राज.), फोन-०१४१-२७१०९४६, मो. ९३१४६६६८२२

भगवान् महावीर फाउण्डेशन द्वारा पुरस्कार घोषित

भगवान् महावीर फाउण्डेशन निःस्वार्थ भाव से सेवारत व्यक्तियों और संस्थाओं को प्रतिवर्ष तीन प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान करता है।(१)अहिंसा और शाकाहार,(२) शिक्षा एवं चिकित्सा तथा (३) राष्ट्र और समाज सेवा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए पुरस्कार स्वरूप प्रत्येक में पाँच लाख रुपये नगद, प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किए जाते हैं। अब तक फाउण्डेशन द्वारा २९ पुरस्कार दिये जा चुके हैं।

फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री एन सुगालचन्द जी जैन ने २७ मार्च, २००८ को प्रेस क्लब में आयोजित प्रेस कान्फ्रेंस में बारहवें भगवान् महावीर पुरस्कारों की घोषणा की। तदनुसार अहिंसा और शाकाहार के क्षेत्र में वन्य प्राणियों की सुरक्षा के लिए श्रेष्ठ भूमिका हेतु “एक्सन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ वाइल्ड एनिमल्स” उड़ीसा, शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में श्रेष्ठ भूमिका हेतु “महात्मा गाँधी चिकित्सा विज्ञान संस्थान, सेवाग्राम (महाराष्ट्र)” तथा राष्ट्र और समाज सेवा के क्षेत्र में श्रेष्ठ भूमिका हेतु “अमर सेवा संगम, अईकुड़ी, तिरूनेलवेली (तमिलनाडु)” को पुरस्कृत करने का निर्णय किया गया।

-पी. वी. कृष्णमूर्ति, प्रबन्ध ट्रस्टी

श्री जैन रत्न युवक परिषद् जयपुर की वार्षिक साधारण सभा एवं स्नेह-मिलन

श्री जैन रत्न युवक परिषद् जयपुर की वार्षिक साधारण सभा एवं पारिवारिक स्नेह-मिलन का आयोजन रविवार ६ अप्रैल २००८ को गलता रोड़ स्थित मोहनवाड़ी में किया गया। साधारण सभा के पूर्व भजन प्रतियोगिता, हाउजी एवं धार्मिक प्रश्नोत्तर कार्यक्रम रखे गये। मध्याह्न भोजन पश्चात् भगवान् महावीर स्वामी के जीवन पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम रखा गया। अपराह्न ४ बजे वार्षिक साधारण सभा आयोजित की गई। राजस्थान पत्रिका के सहायक सम्पादक श्री प्रवीण जी नाहटा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री आनन्द जी चौपड़ा प्रमुख वक्ता के रूप में पधारे। परिषद् के परामर्शदाता श्री अशोक जी सेठ ने उनका स्वागत-अभिनन्दन किया। श्री प्रवीण जी नाहटा ने व्यक्तित्व-विकास के लिए आत्मविश्वास के साथ सकारात्मक सोच और अनुशासन पर बल दिया। सूर्यास्त पूर्व सायंकालीन स्नेह भोज का सभी ने आनन्द उठाया। -प्रशान्त करनावट, शास्त्रा सचिव

अमर शहीद श्री अमरचन्द बांठिया का १५० वाँ बलिदान दिवस २२ जून २००८ को मनायें

राजस्थान के बीकानेर में सन् १७९३ में सेठ खुशालचन्द बांठिया के सुपुत्र सेठ अबीरचंद बांठिया के आंगन में श्रीमती राजकुमारी की कुक्षि से जन्मे श्री अमरचंद जी बांठिया ऐसे प्रथम ओसवाल जैन सपूत थे, जो अपनी धर्मनिष्ठा, दानशीलता, सेवाभावना, ईमानदारी, कर्तव्य परायणता आदि अनेक गुणों को धारण कर ग्वालियर राज्य के प्रधान राजकोष के प्रधान कोषाध्यक्ष पद पर पहुँचे तथा १८५७ की प्रथम स्वतंत्रता क्रान्ति पर अपनी जान की भी परवाह नहीं की। राजद्रोह के आरोप में श्री अमरचंद बांठिया को गिरफ्तार कर लिया गया। ब्रिटिश हुकूमत ने सैनिक कोर्ट में मात्र दो मिनट में सुनवाई कर २२ जून १८५८ को पेड़ से लटकाकर सार्वजनिक रूप से फाँसी की सजा दी। अन्तिम इच्छा के रूप में उन्होंने सामायिक की साधना की। २२ जून को अमर शहीद श्री अमरचंद बांठिया का १५० वाँ बलिदान दिवस सभी ओसवाल एवं जैन संस्थाओं को मनाना चाहिये तथा भारत सरकार से २२ जून को विशेष डाक टिकट एवं स्मारक सिक्के जारी करने, प्रतिवर्ष २२ जून को राष्ट्रीय स्तर पर भामाशाह वीरता पुरस्कार देने की घोषणा करने, स्मृति स्मारक बनाने की माँग करनी चाहिये। 'ओसवाल महिमा' जून ०८ अंक बांठिया के १५०वें बलिदान दिवस पर विशेष

सामग्री के साथ प्रकाशित होगा। इच्छुक बन्धु 'ओसवाल महिमा' का अंक 'कल्पतरू' किशोरपथ, २डी एण्ड ई, पोकरण हाउस, जोधपुर से अग्रिम बुकिंग करवाकर निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। - *मिटठूलाल डागा, प्रधान सम्पादक, ओसवाल महिमा, जोधपुर (राज०) ०२९१-२४३३४१४*

आचार्य हस्ती अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड वितरण समारोह सम्पन्न

जलगाँव- रतनलाल सी. बाफणा फाउण्डेशन ट्रस्ट की ओर से इस वर्ष का 'आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड' मुम्बई के डॉ. पद्मश्री मुजफ्फर हुसैन तथा स्वाध्यायी सुश्रावक श्री महेश नाहटा, नगरी (छत्तीसगढ़) को उनके अहिंसा, करुणा, शाकाहार एवं व्यसनमुक्ति के क्षेत्र में किये गये उत्कृष्ट कार्यों के लिए अहिंसा तीर्थ, जलगाँव के प्रांगण में भव्य समारोह पूर्वक प्रदान किया गया। इस सम्मान में ३१ हजार रु. एवं स्मृतिचिह्न प्रदान किया जाता है। अब तक २३ कार्यकर्ताओं को इस सम्मान से नवाजा जा चुका है। कार्यक्रम की अध्यक्षता लोकमत के श्री राजेन्द्र जी दर्डा, एम.एल.ए. ने की, मुख्य अतिथि पद्मश्री से सम्मानित डॉ. भंवरलाल जी जैन एवं श्री सुरेशदादा जैन एम.एल.ए. थे। इस अवसर पर श्री भंवरलाल जी जैन का पद्मश्री मिलने के उपलक्ष्य में भावभीना स्वागत किया गया। - *रतनलाल सी. बाफणा, जलगाँव*

निबन्ध प्रतियोगिता-परिणाम

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के ९८ वें जन्म-दिवस पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा "निर्ग्रन्थ परम्परा के उज्ज्वल नक्षत्र - आचार्य हस्ती" विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई। निर्णायक मण्डल द्वारा घोषित तीन श्रेष्ठ निबन्धों में से प्रथम स्थान पर श्री पारसमल जी चण्डालिया - ब्यावर, द्वितीय स्थान पर श्री अनिलकुमार जी जैन-कोटा एवं तृतीय स्थान पर श्री सुरेशचन्द्र जी धींग बम्बोरा रहे। - *राकेश जैन, कार्यक्रम प्रभारी*

स्व० श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता वर्ष २००८ हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत संचालित स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार वर्ष २००८ हेतु जैन धर्म, दर्शन, इतिहास, कला एवं संस्कृति तथा जैन साहित्य काव्य, कथा, निबन्ध, नाटक, संस्मरण एवं जीवनी आदि

के संबंध में लिखित मौलिक ग्रंथ पर ५१ हजार रुपये का पुरस्कार, शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र अर्पित किए जायेंगे।

विद्वज्जनों से निवेदन है कि अपने मौलिक ग्रंथ अथवा पाण्डुलिपि दिनांक ३०.०६.२००८ तक संघ कार्यालय समता भवन बीकानेर में डाक से पहुँचाए या व्यक्तिगत स्तर पर जमा कराएँ। प्रतियोगिता के लिये निर्धारित नियम निम्न प्रकार हैं:-

१. अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व से पुरस्कृत कृति पर यह पुरस्कार नहीं दिया जाएगा।
२. पुरस्कार हेतु प्रकाशित/ अप्रकाशित(पाण्डुलिपि) दोनों प्रकार की कृतियाँ निर्धारित आवेदन पत्र के साथ प्रस्तुत की जा सकती हैं। आवेदन-पत्र समता भवन, बीकानेर से प्राप्त कर सकते हैं।
३. प्रकाशित कृति का प्रकाशन पुरस्कार हेतु घोषित अवधि में एवं सम्बद्ध वर्ष हेतु घोषित विषय परिधि में ही होना चाहिये।
४. पुरस्कार मूल्यांकन के लिये कृति की मुद्रित ४ एवं पाण्डुलिपि की चार प्रतियाँ निःशुल्क भेजनी होंगी। पाण्डुलिपि की ३ प्रतियाँ आवेदक को पुनः लौटा दी जायेंगी। मुद्रित कृतियाँ नहीं लौटाई जायेंगी।
५. अप्रकाशित कृति (पाण्डुलिपि) की प्रतियाँ स्पष्ट टंकण की हुई अथवा हस्तलिखित सुवाच्य एवं जिल्द बंधी होनी चाहिये।
६. प्रतिभागी विद्वानों के लिये यह आवश्यक होगा कि वे कृति के संबंध में स्वयं की कृति होने एवं इसके मौलिक होने का प्रमाण पत्र कृति के साथ भेजें।
७. कृति हिन्दी भाषा में एक जनवरी २००२ से पूर्व प्रकाशित नहीं होनी चाहिये।

- सायरचन्द छल्लाणी, महामंत्री, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ,
समता भवन, बीकानेर (राज०)

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा समता विभूति आचार्य श्री नानेश की पावन स्मृति में एक लाख रुपये का आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार प्रति दूसरे वर्ष प्रदान करने का निश्चय सन् २००१ में किया गया। इस वर्ष आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार २००७-२००८ हेतु समता मनीषी का चयन किया जाना है। यह पुरस्कार आचरण आधारित है। जिस व्यक्ति के जीवन में समता दर्शन और व्यवहार प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हो जाता है और जो सामाजिक विषमता व भेदभाव की बढ़ती खाई को पाटने के लिये विभिन्न प्रवृत्तियों के द्वारा निरन्तर क्रियाशील रहता है वही व्यक्ति इस पुरस्कार का अधिकारी होगा। इस पुरस्कार के लिए सबसे बड़ी कसौटी व्यक्ति के जीवन का

पूर्णतः समतामय होना है।

इस पुरस्कार के लिए जो स्वयं को पात्र समझते हों, आवेदन कर सकते हैं, पर अधिकांशतः ऐसे उच्च स्तर के मनीषी इस प्रकार के आवेदन करने से विरत ही रहते हैं। अतः अन्य व्यक्ति अथवा संस्था भी इस प्रकार के श्रेष्ठ व्यक्ति का नाम उनके द्वारा सामाजिक अभ्युत्थान हेतु किये गये तथा किये जा रहे कार्यों व प्रवृत्तियों का विस्तृत विवरण सहित प्रस्तावित कर सकते हैं। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:— भंवरलाल कोठारी-संयोजक, आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार, श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर-३३४००५ (राज.), फोन : ०१५१-२५४४८६७, फैक्स: ०१५१-२२०३१५०

संक्षिप्त समाचार

मुम्बई- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, मुम्बई ने मुम्बई महानगर के विस्तार को ध्यान में रखकर क्षेत्रवार मण्डल कार्यालय स्थापित किए हैं साथ ही बालक-बालिकाओं को नैतिक एवं आध्यात्मिक संस्कारों से पुष्ट करने हेतु नियमित पाठशालाएँ भी प्रारम्भ की हैं। मण्डल के तत्त्वावधान में परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक सामायिक-साधना के सफल आयोजन हो चुके हैं। श्राविका मण्डल की गतिविधियों के संचालन में अलग-अलग क्षेत्रों में बहिनों के उत्साह के कारण जरूरतमन्द परिवारों को सामग्री-वितरण, जीव दया एवं शिक्षण बोर्ड की परीक्षा में बैठने की प्रेरणा से श्राविकाओं में जागृति आ रही है।— श्रीमती सुजाता हीरावत- 'अध्यक्ष', श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, मुम्बई

पूना- देश-विदेश में शिक्षा के लिए प्रसिद्ध पूना शहर में भारतीय जैन संघटना ने कंचनगंगा सोसायटी, कोढ़वा-बिववेवाड़ी रोड़, सदाशिवपठे तिलकरोड़ एवं पूना-अहमदाबाद रोड़ वाघोली में छात्रावास शुरू करने का निर्णय लिया है। छात्रावास में प्रवेश के इच्छुक छात्र-छात्राएं श्री प्रफुल्ल पारख, राष्ट्रीय मंत्री भारतीय जैन संघटना मुथ्था चैम्बर्स, आठवीं मंजिल, सेनापति बापट मार्ग, पुणे-१६ पर आवेदन कर सकते हैं।

जयपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर के द्वारा १ से ४ अप्रैल २००८ तक धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन जैन रत्न स्वाध्याय भवन में किया गया, जिसमें लगभग १२५ शिविरार्थियों ने दशवैकालिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल, सामायिक आदि का अध्ययन करने के साथ धोवन पानी, सचित्त-अचित्त आदि की जानकारी प्राप्त की।— श्रीमती उर्मिला बोथरा

शोरापुर (कर्नाटक)- चैत्रकृष्णा अष्टमी को यहाँ श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में आदिनाथ जयन्ती एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सां. का जन्म

दिवस ९१ सामायिकों के साथ मनाया गया।

भवानीमण्डी- श्री अखिल भारतीय सुधर्म अहिंसा प्रचार समिति, जोधपुर/भवानीमंडी के द्वारा अहिंसा, सदाचार, शाकाहार, निर्व्यसनता, गर्भपात, नैतिक एवं राष्ट्रीय कर्तव्य बोध संबंधी विभिन्न प्रकार के प्रेरक एवं आकर्षक स्टीकर्स विद्या प्रकाशन मंदिर, मेरठ के सहयोग से तैयार करवाये गये हैं, जिनका देशभर में निःशुल्क वितरण किया जा रहा है।

अहिंसा, सदाचार, नैतिक सद्संस्कारों के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार का लक्ष्य रखने वाले अहिंसाप्रेमी महानुभाव तथा समाजसेवी संगठन एवं धर्मसंघ उक्त योजना का लाभ लेने के लिए अपने पूर्ण नाम-पते का पोस्टकार्ड निम्न पते पर प्रेषित कर निःशुल्क स्टीकर्स प्राप्त करें। - *प्राणिमित्र जितेश नागोता जैन, १७५-जैन बोडिंग हाउस, भवानीमंडी-३२६५०२ (राज०), मोबाइल: ९४१३१०१४८९*

बधाई/चुनाव

जोधपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व महामंत्री संघसेवी



श्रावकरत्न श्री जगदीशमल जी कुम्भट लायन्स क्लब, जोधपुर वेस्ट के २००८-२००९ के सर्व सम्मति से सचिव मनोनीत हुए हैं। आप शहर की अन्य कई संस्थाओं से जुड़े हैं। आप सेन्ट आस्टिन्स सैकेण्डरी स्कूल के १९८७ से संस्थापक अध्यक्ष पद पर आसीन हैं।

कोलकाता- रत्नसंघ की सुज्ञ श्राविका श्रीमती मन्जू प्रेम भण्डारी कोलकाता को अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस, नई दिल्ली ने पूर्वी भारत क्षेत्र की महिला अध्यक्ष मनोनीत किया है। आप चन्दनबाला महिला मण्डल, कोलकाता का महामंत्री पद-दायित्व भी संभाल रही हैं।



कोलकाता- कुमारी प्रियंका बांगानी सुपुत्री श्रीमती मृदुला एवं श्री सुभाषचन्द जी बांगानी(दौहित्री -श्री अमरचन्द जी विजयाकुमार जी लोढ़ा-नागौर) ने चार्टर्ड एकाउण्टेंट परीक्षा उत्तीर्ण की है। हार्दिक बधाई



जयपुर- श्री अमित जैन सुपुत्र श्रीमती उषा जी एवं श्री पारसमल जी जैन ने कम्पनी सेक्रेटरी (सी.एस.) फाइनल में उत्तर भारत में पहला एवं राष्ट्रीय स्तर पर चौथा स्थान प्राप्त किया। प्रतिभावान छात्र ने नवम्बर २००७ में सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है।



जोधपुर- श्री वैभव लोढ़ा सुपुत्र श्रीमती शोभा जी एवं श्री महावीर जी लोढ़ा (सुपौत्र स्व. श्री किरोड़ीमल जी लोढ़ा, पूर्व महामंत्री अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) का IIM (Indian Institute of Management) में चयन हुआ है। वैभव लोढ़ा ने सी.ए. में भी पूरे भारत वर्ष में २८वीं रैंक उपलब्ध की है।



विजयनगर- श्री वर्धमान स्थानकवासी स्वाध्याय संघ गुलाबपुरा की वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं विदुषी श्रीमती प्रकाश बाई जी पोखरना ने वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा की प्राकृत भाषा प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम परीक्षा जनवरी, २००८ में ३०० में से २७७ अंक प्राप्त कर विश्वविद्यालय की वरीयता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।



जोधपुर- श्री हेमन्त कोठारी को जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय से कानून की नवीनतम शाखा साइबर लॉज में “सूचना प्रौद्योगिकी भारत के सन्दर्भ में विधिक चुनौतियाँ – एक अध्ययन” विषय पर पी एच्.डी. की उपाधि प्राप्त हुई। उन्होंने शोधकार्य विधि संकाय की असिस्टेन्ट प्रोफेसर डॉ. चन्दनबाला के निर्देशन में पूर्ण किया। वर्तमान में श्री कोठारी भारत सरकार के मिनी रत्न उपक्रम में विधि अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। श्री हेमन्त कोठारी स्व.श्री कैलाशमुनि जी महाराज से सांसारिक भानजे हैं।



श्रद्धाञ्जलि

शीतल सम्प्रदाय की तीन महासतियों का सड़क दुर्घटना में असमय देहावसान

उदयपुर के समीप १६ अप्रैल, २००८ को प्रातः विहार में टाटा सूमो की टक्कर से शासन प्रभाविका परम विदुषी महासती श्री यशकंवर जी म.सा. की ज्येष्ठ सुशिष्या विदुषी महासती श्री सिद्धकंवर जी म.सा., महासती श्री विनयप्रभा जी म.सा. एवं महासती श्री दिव्यप्रभाजी जी म.सा. का घटनास्थल पर असामयिक स्वर्गवास हो गया। सड़क दुर्घटना में गंभीर घायल महासती श्री संयमप्रभा जी म.सा. को उपचारार्थ उदयपुर अस्पताल में भर्ती कराया गया। दुर्घटना के समाचार एक दूसरे को एक दूसरे के माध्यम से विदित होने पर स्थान-स्थान पर शोक की लहर छा गई एवं गुणानुवाद सभाएँ आयोजित की गईं। मुम्बई में आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में दिवंगत साध्वियों को श्रद्धाञ्जलि दी गई तथा सूर्यनगरी में नेहरूपार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी

म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द ने दिवंगत महासतियों के गुणानुवाद किए। आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर ने शासन प्रभाविका परम विदुषी महासती श्री यशकंवर जी म.सा. के लिए समाचार करवाये कि वृद्धावस्था में सुयोग्य सतियों का असमय वियोग दुःखद होता है, किन्तु भवितव्य के आगे सबको नतमस्तक होना पड़ता है। आचार्यप्रवर ने समत्वभावों से ज्ञान विचारने एवं संघ-समाज को धैर्य बंधाने हेतु प्रेरणा रूप समाचार करवाये। साध्वी प्रमुखा-शासन प्रभाविका महासती श्री मैना सुन्दरी जी म.सा. ने दोनों परम्पराओं के प्रेम सम्बन्ध एवं मिलन प्रसंगों में आत्मीयता का उल्लेख किया। साध्वीप्रमुखा जी म.सा. ने अपनी ओर से दिवंगत महासतियों के असमय वियोग पर धैर्य रखने के समाचार करवाये। गुणानुवाद सभा में श्रावक-श्राविकाओं ने लोगस्स के ध्यान के साथ श्रद्धा अर्पित की।

चेन्नई- प्रमुख समाजसेवी धर्मपरायण उदारमना सुश्रावक श्री इन्दरचन्द जी मेहता का



२८ फरवरी, २००८ को स्वर्गवास हो गया। उन्होंने धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक क्षेत्र में सराहनीय सेवाएँ दी। वे मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. के आस्थावान श्रावक थे। उन्होंने अनेक संस्थाओं के पदों को सुशोभित करते हुए सेवा का आदर्श उपस्थित किया। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

विंचाला(महाराष्ट्र)- सेवाभावी सुश्रावक श्री कंवरलाल जी छाजेड़ का ७२ वर्ष की



आयु में १६ फरवरी, २००८ को अकस्मात् देहावसान हो गया। संत-सतीवृन्द की सेवा में रहने वाले श्रावक की आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति अगाध भक्ति थी। सरल स्वभावी श्रावकरत्न अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

अहमदाबाद- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रमोदचन्द जी पूनमचन्द जी सिंघवी (जोधपुर वाले) का ५ फरवरी २००८ को असामयिक देहावसान हो गया। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में अग्रणी श्रावकरत्न के जीवन में सरलता, सादगी, उदारता जैसे गुणों का संगम था। - **संजयकुमार कांकरिया**

बड़ौदा(गुजरात)- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती शकुन्तला जी धर्मपत्नी सुश्रावक



श्री समरथमल जी पोखरना(बाघसुरी, जिला-अजमेर) का ४ मार्च, २००८ को आकस्मिक निधन हो गया। वे रत्नसंघीय श्रावकरत्न स्व. श्री श्रीलाल जी कावड़िया की सुपुत्री थीं। उन्होंने मासखमण सहित अनेक तपस्याएँ की। धार्मिक प्रवृत्ति की सरल स्वभावी श्राविका ने संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदा सजगता रखी।



बुरहानपुर (म.प्र.)- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती अमरावबाई धर्मपत्नी स्व. श्री पन्नालाल जी जेलमी का ८७ वर्ष की आयु में १९ फरवरी, २००८ को संथारे के साथ स्वर्ग-गमन हो गया। वे सरल स्वभावी और सेवाभावी श्राविका थीं।

जयपुर- श्रद्धानिष्ठ धर्मनिष्ठ सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती मोहनकँवर जी नवलखा धर्मपत्नी स्व. श्री मोहनलाल जी नवलखा का ११ मार्च, २००८ को स्वर्गवास हो गया। वे रत्नसंघ की सुज्ञ श्राविका थीं। उनका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था।

पल्लीपट (तमिलनाडु)- संघसेवी संतसेवी सुश्रावक श्री जंवरीलाल जी लूणिया



सुपुत्र स्व० श्री चुन्नीलाल जी लूणिया (मूल निवासी-निमाज-राजस्थान) का हृदयगति रुक जाने से २३ अप्रैल, २००८ को ६९ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। रत्नसंघ के सुज्ञ श्रावकरत्न श्री जैन संघ, पल्लीपट के अध्यक्ष थे। निमाज और पल्लीपट के सामायिक स्वाध्याय भवन निर्माण में उनका योगदान प्रेरणादायी है। उन्होंने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के दक्षिण क्षेत्र में विचरण-विहार में सेवाएँ दी। आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से शीलव्रत एवं बारह व्रत अंगीकार करने वाले श्रावकरत्न धर्मस्थान में स्वयं सामायिक-प्रतिक्रमण करते थे तथा परिवारजनों एवं ग्रामजनों को प्रेरणा कर उन्हें धर्म साधना से जोड़ते रहे। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

आलनपुर (सवाईमाधोपुर)- श्रीमती सूरजा बाई धर्म पत्नी स्व० श्री मोतीलाल जी



जैन (एण्डवा वाले) का ९२ वर्ष की आयु में ६ मार्च, २००८ को स्वर्गवास हो गया। देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धाशील, सरल स्वभावी एवं धर्म परायणा श्राविका ने अनेक उपवास, बेला-तेला एवं एकान्तर तप किए। वे प्रतिदिन चार-पाँच सामायिक करने के साथ उनके वर्षों से रात्रि चौविहार एवं जमीकन्द के त्याग थे। उनके सबसे छोटे पुत्र श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन ने लम्बे समय तक गुरु चरण सेवा में रहकर संघ सेवा में अपना योगदान दिया था। वे अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गयी हैं।

चोर (ढोंक)- वीरपिता सेवाभावी सुश्रावक श्री चौथमल जी जैन का ११ अप्रैल, २००८ को स्वर्गगमन हो गया। वे रत्नसंघ के समर्पित श्रावकरत्न थे। गुरु के प्रति भक्ति, संघ के प्रति निष्ठा और शासन के प्रति समर्पण के भाव होने से उन्होंने अपनी सुपुत्री मुमुक्षु मंजुजी को वि.सं. २०५० माघ शुक्ला दशमी को सवाईमाधोपुर में

परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन श्री चरणों में दीक्षा हेतु आज्ञा-अनुमति देकर शासन सेवा में अनुपम आदर्श उपस्थित किया था। वे सरल स्वभावी, धर्मपरायण और सेवाभावी श्रावक थे।

इन्दौर- सृष्ट श्रावकरत्न श्री कल्याणमल जी जैन (भूरी पहाड़ी वाले)का ९३ वर्ष की वय में ११ अप्रैल २००८ को स्वर्गवास हो गया। सरलता, सादगी, सहिष्णुता आदि सद्गुणों से उनका जीवन प्रेरणादायी रहा। उन्होंने जीवन में २५ प्रकार के द्रव्यों से अधिक का सेवन नहीं किया। जमीकंद का जीवन भर त्याग रखा।



पीसांगल- सेवाभावी सरलस्वभावी सुश्रावक श्री छीतरमल जी बरमेचा का ८१ वर्ष की आयु में १५ अप्रैल, २००८ को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे संस्कारित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

जोधपुर- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती पारसकंवर धर्मपत्नी स्व० श्री मांगीचन्द जी भण्डारी का ४ अप्रैल २००८ को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे सरल स्वभावी करुणामूर्ति और उदारमना श्राविका थीं। संत-सतीवृन्द की सेवा में अग्रणी श्राविका धर्म-साधना में अन्त तक सक्रिय रहीं।



जयपुर- सघनिष्ठ सुश्रावक श्री सुधीरकुमार जी लोढ़ा का ६८ वर्ष की आयु में २३ अप्रैल, २००८ को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। गुरु हस्ती के प्रति उनकी अटूट आस्था थी। रत्नसंघीय तपस्वी संतरत्न श्री सागरमल जी म.सा. के संसार पक्ष के वे पौत्ररत्न थे। पारिवारिक संस्कारों के कारण सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर, उपवास-पौषध आदि धार्मिक कार्यक्रमों में सदा आगे रहते थे। सादा जीवन उच्च विचार के धनी श्रावकरत्न विगत कई वर्षों से रात्रि चौविहार त्याग करते थे। वे अपनी पीछे स्वाध्यायी श्राविका श्रीमती चन्द्रप्रभा जी, पुत्र श्री अनुपम जी, अनुरूप जी, पुत्री श्रीमती नीपम जी व कीपम जी सहित भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।



दिल्ली- सुश्राविका श्रीमती विमलादेवी जी नाहटा का ७६ वर्ष की आयु में २३ अप्रैल २००८ को आकस्मिक निधन हो गया। वे तपस्विनी श्राविका थीं। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सक्रिय रहने वाली श्राविका ने अनेकानेक तपश्चर्याएँ की। वे कई संस्थाओं से जुड़ी हुई थीं। नाहटा परिवार ने माताश्री की पुण्य स्मृति में ५१०००/- रुपये प्रदान किए



हैं।

जयपुर- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती सुमन जी नवलखा धर्मपत्नी सुश्रावक श्री अरुणकुमार जी नवलखा का १६ अप्रैल, २००८ को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्तव्यपरायण एवं सेवाभावी श्राविका थीं।



इन्दौर- सरल स्वभावी सुश्रावक श्री फूलचन्द जी ललवानी सुपुत्र स्व०श्री सिरमल जी ललवानी (नागौर वाले) का ७२ वर्ष की आयु में २५ मार्च, २००८ को स्वर्गवास हो गया। वे नित्य सामायिक करते थे। गुरु हस्ती एवं गुरु नानेश का उन पर विशेष प्रभाव था।

सवाईमाधोपुर- सुश्रावक श्री मोतीलाल जी जैन मोटरवाले का ७ अप्रैल २००८ को ८४ वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ तथा नित्य सामायिक एवं प्रतिक्रमण करने वाले श्रावकरत्न थे। सन्त-सतियों की सेवा में आप सदैव सन्नद्ध रहते थे।

जयपुर- संघसेवी संतसेवी श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री कैलाशचन्द जी डागा का २६ अप्रैल को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्रावक थे। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द जी म.सा. का उनके जीवन पर विशेष प्रभाव रहा।

जयपुर- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती कमलादेवी जी गोलेच्छा धर्मपत्नी सुश्रावक स्व०श्री ज्ञानचन्द जी गोलेच्छा का २३ अप्रैल २००८ को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे देव-गुरु-धर्म के प्रति निष्ठावान थीं।

गुन्द्र (आन्धा)- समाजसेवी सरलमना एवं प्राणिमात्र को अभय प्रदान करने वाले श्री पीला रामकृष्णा जी का अप्रैल २००८ में स्वर्गवास हो गया। मूक प्राणियों की सेवा के लिए उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया।

जयपुर- संघसेवी उदारमना सेवाभावी सुश्रावक श्री नरेन्द्रकुमार जी सुकलेचा सुपुत्र स्व०श्री पूनमचन्द जी सुकलेचा का २५ फरवरी, २००८ को स्वर्गवास हो गया। देव-गुरु-धर्म के प्रति समर्पित श्रावकरत्न के परिवारजनों में श्राविकारत्न श्रीमती लालबाई ने जयपुर का लालभवन धर्म-साधना हेतु संघ को समर्पित किया था। वे श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ कर्तव्यनिष्ठ श्रावक थे। गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान का उनके जीवन पर विशेष प्रभाव रहा। उनके सुपुत्र श्री वैभव जी व आशीष जी दोनों युवारत्न बन्धु विहार सेवा में सदैव सक्रिय रहते हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

❀ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❀

११०००/- जिनवाणी पत्रिका की स्तम्भ-सदस्यता हेतु

११६ श्री नीरज जी संकलेचा, मलाड, मुम्बई (महा.)

५०००/- जिनवाणी पत्रिका की विदेश में आजीवन-सदस्यता हेतु

१२८ श्रीमती वन्दना जी भण्डारी, फ्रांस

१२९ श्रीमती दीप्ति आदित्य जी डागा, यू.एस.ए.

१३० श्री विरेन आर. मोदी, दुबई (यू.ए.ई.)

५००/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

११२५४ श्री पारस कुमार जी जैन, तलवंडी, कोटा (राज.)

११२५५ श्री गौरव बांठियाँ, पनवेल, रायगढ़ (महा.)

११२५६ सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई के सौजन्य से
से 'आचार्य श्री हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना' के छात्रों को जिनवाणी का आजीवन

११४५७ सदस्य बनाया गया है।

११४५८ Shri S. Heera Chand Ji Peencha, Chennai (T.N.)

११४५९ Shri Sanjay Ji Srisimal, Hubli (Karnataka)

११४६० श्री आनन्द जी खिवसरा, सिन्नर, जिला-नाशिक (महा.)

११४६१ श्री प्रतापचन्द जी मुधा, वापी (गुजरात)

११४६२ श्री उत्तमचन्द जी बरडिया, जयसिंहपुर (महा.)

११४६३ श्री अनुज जी डागा, भोपाल (म.प्र.)

११४६४ श्री दिनेश जी बोधरा, जयपुर (राज.)

११४६५ श्री सुभाषचन्द जी सिंघवी, धुलिया (महा.)

११४६६ Shri Ramesh Chand Ji Mandlecha, Kalwa, Thane (M.H.)

११४६७ Shri Dinesh Ji Lalwani, Siliguri (W.B.)

११४६८ श्री जिनेशचन्द जी जैन, मण्डावर, दौसा (राज.)

११४६९ श्री राजकुमार जी नाहर, इचलकरंजी (महा.)

११४७० श्री पारसमल जी चौधरी, मीलवाड़ा (राज.)

११४७१ श्री पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई के सौजन्य से छात्रवृत्ति वाले विद्यार्थी

११४७२ श्री दयालसिंह जी नैनावटी, जयपुर (राज.)

११४७३ श्री पुस्तराज जी रांका, न्यावर (राज.)

११४७४ श्री पुस्तराज देवी जी सेठिया, काठमांडू (नेपाल)

११४७५ श्री हरीशचन्द जी जागड़, डेगाना, नागौर (राज.)

- ११४७६ डॉ. विकास जी जैन, धागेन्द्रा जंक्शन, सुरेन्द्र नगर (गुजरात)
 ११४७७ श्री अनुपम जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
 ११४७८ श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन, दिल्ली
 ११४७९ श्री विनोद कुमार जी बरडिया, अजमेर रोड, जयपुर (राज.)
 ११४८० श्री प्रवीण जी मेहता, जोधपुर (राज.)
 ११४८१ श्री उमरावसिंह जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)

जिनवाणी हेतु साभार

- ४२००/- श्रीमती तुलसी देवी जी श्री बादलचन्द जी बोहरा, मुम्बई, अपनी सुपौत्री सौ. पारुल (सुपुत्री श्रीमती रीता जी सुनील जी बोहरा) संग मेहुल कुमार सुपुत्र श्रीमती लता जी एवं श्री विमलचन्द जी पुनमिया, मुम्बई के साथ शुभ विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट ।
- ३०००/- श्री अनुपम जी, अनुरूप जी लोढ़ा, जयपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री सुधीर जी लोढ़ा का दि. २३.४.०८ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट ।
- ११००/- श्री सुभाषचन्द जी मृदुलाल जी बांगाणी, कोलकाता, अपनी सुपुत्री कु. प्रियंका जी बांगाणी दोहित्री श्री अमरचन्द जी विजय कुमार जी लोढ़ा, नागौर का अखिल भारतीय चार्टर्ड अकाउण्टेन्ट की परीक्षा में अच्छे नम्बरों से २३ वर्ष की आयु में उत्तीर्ण होकर सी.ए. बनने की खुशी में भेंट ।
- ११००/- श्री पन्नालाल जी विनय कुमार जी नाहटा, दिल्ली, श्रीमती विमला देवी जी धर्मपत्नी श्री पन्नालाल जी नाहटा का दि. २३.४.२००८ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट ।
- ११००/- श्री महेन्द्रमल जी गांग एवं ललिता जी गांग, सूरत, बेबी अनन्या सुपुत्री श्री अनुपम जी एवं स्वाति जी गांग की प्रथम वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट ।
- ११००/- श्रीमती प्रेमकंवर जी मिलापचन्द जी बुरड, ब्यावर, श्री नेमीचन्द जी बुरड, ब्यावर के संलेखना संधारा सहित पण्डित मरण पर उनकी पावन स्मृति में भेंट ।
- ११००/- श्री जवरीलाल जी प्रकाशचन्द जी लुणिया, पल्लीपट्ट, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ८ के विले पालें, मुम्बई में सपरिवार दर्शन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट ।
- ११००/- श्री नौरतनमल जी कुशलचन्द जी मेहता, जोधपुर, चि. कमलेश (सुपुत्र श्री कुशलचन्द जी मेहता, पल्लीपट्ट) का मंगल-परिणय सौ. कां. मीनू (सुपुत्री श्री प्रकाशचन्द जी खिवसरा-कोठारी, रणसीगांव वाले, चेन्नई) के साथ २७ अप्रैल २००८ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट ।
- ११००/- श्री इंगरचन्द जी बालचन्द जी भुरट, जलगाँव, चि. नरेश एवं सौ. स्नेहा सुपुत्री श्री हेमराज जी गोलेछा, मुम्बई के १९.४.०८ को विवाहोपलक्ष्य में एवं साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन करने तथा महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा., महासती श्री निरंजना जी म.सा., महासती श्री सुव्रतप्रभा

जी म. सा. के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में ।

- ११००/- श्री प्रकाशचन्द जी, राजेन्द्रकुमार जी, अजयकुमार जी, धर्मेन्द्रकुमार जी जैन, मु. खेड़ला, जिला-दौसा, साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन करने तथा महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा., महासती श्री निरंजना जी म.सा., महासती श्री सुव्रतप्रभा जी म.सा. के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में ।
- १०००/- श्री अमृतराज जी, उगमराज जी, गणपतराज जी, नितेश जी पारख (धनेरिया वाले), चेन्नई, स्व. श्री केवलचन्द जी पारख की पुण्य स्मृति में भेंट ।
- ५०१/- श्री सौभाग्यमल जी, कपूरचन्द जी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़, चि. पंकज का शुभविवाह दिनांक १७.४.२००८ को सानन्द सम्पन्न होने पर सप्रेम भेंट ।
- ५०१/- श्री रूपनारायण जी, सुरेन्द्र कुमार जी (धमुण वाले) बजरिया-सवाईमाधोपुर, श्रीमती कमला जी एवं श्री रूपनारायण जी जैन के सुपुत्र चि. अरूण जी जैन का शुभविवाह सौ. कां. नम्रता सुपुत्री श्री रतनलाल जी जैन, कोटा के संग दि. १९.४.२००८ को सम्पन्न होने की खुशी में ।
- ५०१/- श्री प्रकाशचन्द जी, सुरेश जी बम्ब, मुम्बई, अपने पूज्य पिताश्री श्री ज्ञानचन्द जी बम्ब एवं माताश्री श्रीमती चन्द्रादेवी जी बम्ब के वैवाहिक जीवन की ५०वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट ।
- ५०१/- श्री सुमेरचन्द जी सिंघवी, जोधपुर, अपने पूजनीय पिताजी स्व. श्री उम्मेदचन्द जी सिंघवी की प्रथम पुण्य तिथि पर भेंट ।
- ५००/- श्रीमती मंगलादेवी जी एवं ज्ञानचन्द जी टाटिया, इन्दौर, अपनी सुपुत्री सौ. कां. कपिला (खुशबू) का शुभ विवाह चि. संदीप जी सुपुत्र श्री अशोक कुमार जी बरमेचा, गुडगाँव के संग दि. ०९.०३.२००८ को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट ।
- ५००/- श्रीमती रंजू धर्मपत्नी श्री रमन जी सिंघवी, श्रीमती रंजना धर्मपत्नी श्री सुमन जी सिंघवी, जोधपुर, साध्वी विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के ३२वें दीक्षा दिवस पर भेंट ।
- ५००/- श्री अनुराग जी मेहता व श्रीमती विजय जी मेहता, जोधपुर, अपनी माताश्री स्व. कमला देवी जी कोठारी की पुण्य स्मृति में भेंट ।
- ५००/- श्री राजेन्द्र प्रसाद जी शिरीष कुमार जी जैन (चकेरी वाले), जयपुर, अपने सुपुत्र श्री मनीष कुमार जी का शुभ विवाह दि. २१.४.०८ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट ।
- ५००/- श्री सज्जनराज जी तालेड़ा, चेन्नई अपनी सुपुत्री सौ. कां. अर्चना का शुभ विवाह दि. ०९.०३.०८ को चि. नरेश जी सुपुत्र श्री गौतमचन्द जी कांकरिया के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट ।
- ५००/- श्री भंवरलाल जी, प्रकाशचन्द जी, नरेशकुमार जी, निर्भय जी हुण्डीवाल, जलगाँव, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ४ एवं साध्वीप्रमुखा

महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन करने तथा महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा., महासती श्री निरंजना जी म.सा., महासती श्री सुव्रतप्रभा जी म.सा. के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में।

जीव दया हेतु साभार

- २८८१/- श्री प्रकाशराज जी भण्डारी, इचलकरंजी, सौ. कां. सारिका का शुभ विवाह चि. महावीर के संग होने के उपलक्ष्य में कबूतर चुग्गा हेतु सप्रेम भेंट।
- ११००/- श्री महेन्द्र जी लोढ़ा, जयपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री किरोड़ीमल जी लोढ़ा की ११वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में जीवदया हेतु भेंट।
- १००१/- श्रीमती वन्दना जी सुभाष जी भण्डारी, फ्रांस, अपनी सुपुत्री प्रेक्षा जी भण्डारी द्वारा क्रेडिट स्विस बैंक में कार्यभार संभालने पर जीवदया हेतु सप्रेम भेंट।
- ५५१/- नेहा जी मेहता, जयपुर।
- ५०१/- श्री सुमेरचन्द जी सिंघवी, जोधपुर, अपने पूजनीय पिताजी स्व. श्री उम्मेदचन्द जी सिंघवी के प्रथम पुण्य तिथि पर जीवदया हेतु भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर को प्राप्त साभार

- १५०००/- श्री शांतिलाल जी बागरेचा, हैदराबाद, सुश्री भावना बागरेचा के दिनांक ७.५.०८ को मुम्बई में आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से दीक्षा ग्रहण करने के उपलक्ष्य में पुस्तक प्रकाशन हेतु।
- १११११/- श्री जयचन्द, रमेशचन्द जी लूणिया, पल्लीपट्ट, पूज्य पिताश्री श्री लालचन्द जी लूणिया, निमाज वालों की २५वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में पुस्तक प्रकाशन हेतु।
- ५०००/- श्रीमती प्रेमकंवर जी बुरड, ब्यावर, श्री नेमीचन्द जी बुरड के संधारा सहित पंडित मरण पर उनकी पावन स्मृति में।
- ११००/- श्रीमती विन्दू जी चौधरी, मुम्बई, प्रपौत्र जन्म के उपलक्ष्य में।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

- ७०००/- श्रीमती तुलसीदेवी एवं श्री बादलचन्द जी बोहरा, श्रीमती रिता जी बोहरा-श्री सुनील जी बोहरा (जोधपुर वाले), हाल मुकाम मुम्बई, आचार्यप्रवर १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की ७०वीं जन्म-जयन्ति के उपलक्ष्य में भेंट।
- ५०००/- श्रीमती प्रेमकंवर जी मिलापचन्द जी बुरड, ब्यावर, श्री नेमीचन्द जी बुरड, ब्यावर के संलेखना संधारा सहित पण्डित मरण के उपलक्ष्य में
- ११००/- श्री डूंगरचन्द जी बालचन्द जी भूरट, जलगाँव, चि. नरेश एवं सौ. स्नेहा सुपुत्री श्री हेमराज जी गोलेछा, मुम्बई के १९.४.०८ को विवाहोपलक्ष्य में एवं साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन करने तथा महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा., महासती श्री निरंजना जी म.सा., महासती श्री सुव्रतप्रभा जी म.सा. के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में।

- १००१/- श्रीमती वन्दना जी सुभाष जी भण्डारी, फ्रांस, अपनी सुपुत्री प्रेक्षा जी भण्डारी द्वारा क्रेडिट स्विस बैंक में कार्यभार संभालने पर जीवदया हेतु सप्रेम भेंट ।
- ५००/- श्रीमती कमलाबाई जी लालचन्द जी चौधरी, मुम्बई ।
- ५००/- श्री भंवरलाल जी, प्रकाशचन्द जी, नरेशकुमार जी, निर्भय जी हुण्डीवाल, जलगाँव, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ४ एवं साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन करने तथा महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा., महासती श्री निरंजना जी म.सा., महासती श्री सुव्रतप्रभा जी म.सा. के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में ।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना (अखिल भारतीय श्री गैल रत्न युपक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

- १२०००००/- श्री पी. शिखरचन्द जी सुराणा, चेन्नई।
- १२००००/- श्री टीकचन्द जी हीरावत परिवार, मुम्बई।
- १२०००/- श्री चादमल जी विजय कुमार जी छाजेड, शोरापुर।
- छात्रवृत्ति योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्रवृत्ति १२०००/- रु. के गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- श्री अशोक जी कवाड़, 33- Montieth Road, Egmore, Chennai-600008
(Mob. 9381041097)

आगामी पर्व

वैशाख शुक्ला १३	शनिवार, १७.०५.२००८	उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का ४६वाँ दीक्षा-दिवस
वैशाख शुक्ला १४	रविवार, १८.०५.२००८	चतुर्दशी
वैशाख शुक्ला १५	सोमवार, १९.०५.२००८	पक्खी
ज्येष्ठ कृष्णा ५	रविवार, २५.०५.२००८	आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का १८वाँ आचार्य पदारोहरण दिवस
ज्येष्ठ कृष्णा ८	बुधवार, २८.०५.२००८	अष्टमी
ज्येष्ठ कृष्णा १४	सोमवार, ०२.०६.२००८	चतुर्दशी
ज्येष्ठ कृष्णा ३०	मंगलवार, ०३.०६.२००८	पक्खी
ज्येष्ठ शुक्ला ८	बुधवार, ११.०६.२००८	अष्टमी

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्रीं स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 62 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 28 अगस्त से 04 सितम्बर 2008 तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 15 जुलाई 2008 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गाँव/शहरका नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता (फोन नं. सहित).....
-
4. संघ मंत्री का नाम, पता (फोन नं. सहित).....
-
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
-
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
-
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street, Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- सूरजमल जी भंडारी, फोन नं. 25295143 (स्वाध्याय संघ), 25381001, मो.9443336674

जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

**कर्म निर्जरा का प्रबल साधन ।
स्वास्थ्य वर्धक है पानी धोवन ॥**

With Best Compliments From :



SURANA
INDUSTRIES LIMITED



Manufacturers & Exporters of

Symbolises the
Aspiration of
Discerning Steel
Buyers !

Premium Quality Steels, viz.,
HSD/CTD Bars, MS Rounds
Structurals Like Flats, Channels
Angles and Squares

**Always Use SURANA STEELS to
Highlight your House/Industry**

Regd. Cum Corporate Head Office

29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai-600 014

Grams : **GURUHASTI**

Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143

E-mail : suranast@vsnl.com

Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Ph.: 954119 222881 Telefax : 954119222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram, Chennai 600 110
Ph.: 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का ॥



With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द्र कोठारी



प्रतिष्ठा

KOTHARI FINANCERS

27, Chandrappan Street
Chennai-600079 (T.N.) • Ph.# 42738436, 25298130

Branches :

Bhagawan Motors

Chennai-53, Ph.# 26251960



Bhagawan Cars

Chennai-53, Ph.# 26243455/66



Balaji Motors

Chennai-50, Ph.#26247077



Padmavati Motors

Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.#24854526



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान



प्यास बुझाये,
कर्म कटाये,
फिर क्यों न अपनायें
- धौवन पानी

Curtesy :

Prithvi Exchange

A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED

33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008

Phone : 044-28553185, 42145478, 09381041097



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

**A GLASS OF WATER WILL MAKE
YOUR KARMA QUARTER**

- धोवन पानी -

GURU HASTI GOLD PALACE

• (Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)
22 Ct. Gold! 24 Ct. Trust!

&

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

No. 4, 5 Car Street, Poonamallee, CHENNAI-600056

Hello-Hello

044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

अनछाना पानी-BAD|BAD||

बिक्लकी पानी-OK|OK||

छाना हुआ पानी-GOOD|GOOD||

धोवन पानी-BEST|BEST||

जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान

सहजता में धर्म का आधार ।
धोवन पानी प्रथम आचार ॥

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-30034282, 23669818
Mobile : 098210-40899

रत्नसंघ की विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी

१. संयोजक-संरक्षक मण्डल 022-30645000/23648004
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई 09820072724
२. संयोजक-शासन सेवा समिति
श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, जलगाँव 0257-2225903/09823076551
३. गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन
अध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी कोठारी, मुम्बई 022-23673939/23698880
४. अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर 0291-2636763
अध्यक्ष-श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर 0141-2620571
कार्याध्यक्ष-श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर 09414048830/09314048830
महामंत्री-श्रीमान् नवरतन जी डागा, जोधपुर 0291-2434355/09414093147
0291-2654427/09828032215
५. सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर 0141-2575997, 2570753
अध्यक्ष-श्रीमान् पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई 044-25380387/25391597
09884430000
कार्याध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी भंसाली, बैंगलोर 080-22265957/09844158943
कार्याध्यक्ष-श्रीमान् आनन्द जी चौपड़ा, जयपुर 0141-3233318/09414090931
मंत्री- श्रीमान् प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर 0141-2212982/09413453774
६. अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर 0291-2636763
अध्यक्ष-श्रीमती (डॉ.) मंजुला जी बम्ब, जयपुर 0141-3292229/09314292229
कार्याध्यक्ष-श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई 044-25293001/42765646
मंत्री-श्रीमती आशा जी गांग, जोधपुर 0291-2544124
७. अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर 0291-2641445
अध्यक्ष-श्रीमान् कुशल जी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर 07462-233550/09414315098
कार्याध्यक्ष-श्रीमान् प्रमोद जी हीरावत, जयपुर 0141-2742665/09314507303
कार्याध्यक्ष-श्रीमान् बुधमल जी बोहरा, चेन्नई 044-26425093/09444235065
महासचिव-श्रीमान् महेन्द्र जी सुराणा, जोधपुर 0291-2546501/09414921164
८. श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर 0291-2624891
संयोजक-श्रीमान् चंचलमल जी चोरडिया, जोधपुर 0291-2621454/09414134606
सचिव-श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर 0291-3296033/09351590014
९. अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर 0291-2630490
संयोजक-श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर 0291-5108799/09414133879
सचिव-श्रीमान् राजेश जी कर्णावट, जोधपुर 0291-2549925/09414128925
१०. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर 0291-2622623
संयोजक-श्रीमती विमला जी मेहता, जोधपुर 0291-2435637/09351421637
सचिव-श्रीमान् सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर 0291-2555230/09460551096

JAI GURU HASTI

JAI GURU HEERA

JAI GURU MAAN

NO PAIN - ONLY GAIN - पियें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDI WAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDI WAL)



☎ 098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET, 12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040

☎ 044-32550532

 **BRANCHES**

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.

S.P.59, 3 rd MAINROAD

AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058

☎ 044-26258734, 9840716053, 98407 16056

FAX: 044-26257269

E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.

NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,

AMBATTUR CHENNAI-60098

☎ FAX: 044-26253903, 9840716054

E-MAIL: appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES

NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE

AMBATTUR, CHENNAI-600098

☎ 044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS

NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE

AMBATTUR CHENNAI-600098

☎ 044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57

डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

वर्ष : 65 ★ अंक : 5 ★ मूल्य : 10 रु.

15 मई, 2008 ★ वैशाख सं. 2065

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी



Stop existing.
Start Living.

Kalpataru brings you residences that embody the essence of lifestyle living. A space you will be proud to call home.



KALPATARU AURA

L.B.S. Road, Ghatkopar (W)



KALPATARU ESTATE

On Jogeshwari-Vikhroli Link Road,
Andheri (E)



KAMDHENU

At Hari Om Nagar, Mulund (E)



SIDDHACHAL

Pokhran Road No.2, Thane (W)



KALPA-TARU

101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai 400 055
Tel: 3064 3065, Fax: 3064 3131, E-mail: sales@kalpataru.com. Visit: www.kalpataru.com

Properties professionally managed by
PROPERTY SOLUTIONS (I) PVT. LTD.
www.property-solutions.co.in

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।